आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 04 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अप्रेल, 2011 ★ चैत्र, 2068

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये

✦ सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न

✦ फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
✦ शुद्ध चांदी के बरतन

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520
सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903
उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644

Visit us at : rcbafnajewellers.com

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

ग्राहक सेवेची पंचसुत्री १। प्रामाणिकता २। वाजिबता ३। विविधता ४। हजर स्टॉक ५। सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

न इमं सव्वेसु भिक्खूसु, न इमं सव्वेसुऽगारिसु।
नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.19

पाते न मरण यह सभी साधु,
और नहीं गृहस्थों में सारे।
विविधरूप व्रत धरे गृहीजन,
विषमशील मुनिव्रत धारे।।

अप्रेल, 2011
वीर निर्वाण संवत्, 2537
चैत्र, 2068

वर्ष 68 अंक 4

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	प्रजातन्त्रीय मूल्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	संस्कार की धारा फिर से बहानी होगी	-श्री गौतम मुनि जी म.सा.	11
अध्यात्म-	ध्यानमय जीवन : जागरूक जीवन	-श्री रणजीत सिंह कूमट	20
शोधालेख -	जैन दार्शनिकों का अन्य दर्शनों को त्रिविध अवदान (2)	-प्रो. सागरमल जैन	25
प्रासंगिक-	महावीर का वीतराग दर्शन	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	33
	महावीर वाणी : आज भी प्रासंगिक	-श्री कमलेश मेहता	53
चिन्तन-	प्रबुद्ध प्रचारक वर्ग की आवश्यकता	-डॉ. दिलीप धींग	39
	क्या मैं भी पाप का भागी हूँ?	-श्री उदय मुनि जी	46
	संन्त शरणं गच्छामि	-डॉ. रमेश 'मयंक'	90
पद्य-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(2)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरि जी म.सा.	48
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Prayer to Peace	-*Sh. K.S. Galundia*	58
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (64)	-श्री धर्मचन्द जैन	61
संस्मरण -	वीर पिता एवं वीर पितामह	-श्री प्रकाशचन्द हुण्डीवाल	65
नारी-स्तम्भ -	अजन्मी बेटी की पुकार	-श्रीमती सुशीला बोहरा	74
युवा-स्तम्भ -	युवा बनें आदर्श	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	77
बाल-स्तम्भ -	अत्तसमे मणिज्ज छप्पिकाए	-डॉ. मंजू सांड	83
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (13)		88
विचार -	उत्तम पुरुष	-श्रीमती सुमन डागा	52
	Few Pearls	-*Ms. Minakshi Jain*	60
	अनमोल वचन	-संकलित	76
	Quotes of Non-violence	-*Sh. S.C. Dhing*	128
प्रेरक-प्रसंग -	शब्द दान	-डॉ. दिलीप धींग	55
	जब बात दिल को छू गई	-श्री सुरेन्द्र सिंघवी	66
कविता/गीत-	मेरे गुरुवर हीरा गणिवर	-श्री धर्मचन्द जैन	24
	मुसाफिर जागते रहना	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	32
	गुरुजी थांरी साधना में मेरु सी ऊँचाई	-श्री मनमोहनचन्द बाफना	56
	रत्नत्रय के दीपकों से, संयम-ज्योति जगमगालो	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	57
	गुरु हस्ती शतक	-श्री प्रसन्नचन्द बाफना	71
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य		92
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		95
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		125

सम्पादकीय

प्रजातन्त्रीय मूल्य

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

हम प्रजातन्त्र में जी रहे हैं। राजतन्त्र से गणतन्त्र एवं गणतन्त्र से प्रजातन्त्र में व्यक्ति को अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त है। राजाओं के द्वारा कृत शासन को राजतन्त्र, जनता में से चयनित विशिष्ट लोगों द्वारा कृत शासन को गणतंत्र तथा प्रजा द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों द्वारा प्रजा पर कृत शासन को प्रजातन्त्र कहा जाता है। गणतन्त्र एवं प्रजातन्त्र को प्रायः पर्यायवाची माना जाता है। किन्तु भगवान् महावीर के समय वज्जियों का संघ था। वह गणतन्त्र का सूचक था। जिसमें शासन की संचालक एक परिषद् होती थी। जो प्रजा के हित में निर्णय लेने हेतु नियमित बैठकें करती थी। मन्त्री परिषद् के सदस्य राष्ट्रीय कार्यों को मिलकर सम्पन्न करते थे। वे वृद्धों और गुरुओं का सम्मान किया करते थे। कुल स्त्रियों और कुल कुमारियों पर न स्वयं अत्याचार करते थे और न ही अत्याचार होने देते थे। धर्मानुकूल भोग्य सामग्री का अपहरण नहीं करते थे। वे अरिहन्तों की शरण ग्रहण करते हुए प्रजा की रक्षा और पोषण में सक्रिय थे। यह परिषद् जनता के मतों से चयनित न होकर विशिष्ट गणों से चयनित होती थी। गणतन्त्र का वह स्वरूप आज के प्रजातन्त्र के लिए भी आदर्श का सूचक है। मंत्री परिषद् किस प्रकार सद् उद्देश्य से जनंता के हित में निर्णय लेकर उसे क्रियान्वित करती है, यही जनतन्त्र अथवा प्रजातन्त्र के लिए महत्त्वपूर्ण होता है।

प्रजातन्त्र के प्रमुख मूल्य हैं- समानता, स्वतन्त्रता, बन्धुत्व और न्यायशीलता। इन मूल्यों को यदि जैन धर्म-दर्शन में तलाशा जाय तो हमें पदे-पदे इन मूल्यों का पोषण प्राप्त होता है। जनता को किस प्रकार अपनी जीवन शैली को उन्नत बनाना चाहिए, इसकी भी शिक्षा जैन धर्म-दर्शन भलीभाँति प्रदान करता है। जैन धर्म में जाति, वर्ण एवं लिंग के आधार पर मनुष्यों में भेद स्वीकार नहीं किया गया है, अपितु समस्त मनुष्य जाति को समान महत्त्व दिया गया है - ~~मनुष्यजातिरेकैव~~ (आदि पुराण)। आचारांग सूत्र स्पष्ट कहता है- ''~~नो हीणे, नो अइरित्ते~~'' न कोई हीन है, न कोई उच्च। जैन धर्म में सबको मोक्ष का

अधिकारी माना गया है। तीर्थंकर महावीर ने चतुर्विध संघ बनाते हुए स्त्रियों को भी श्रमणी एवं श्राविका के रूप में स्थान दिया है। यही नहीं जैन धर्म की श्वेताम्बर परम्परा स्त्री पर्याय में भी मोक्ष स्वीकार करती है। समानता का यह सिद्धान्त आध्यात्मिक एवं दार्शनिक स्तर पर तो है ही, किन्तु समाज के विकास की दृष्टि से भी इस समानता को उतना ही महत्त्व दिया गया है।

जैन धर्म में प्रतिपादित अहिंसा का सिद्धान्त प्राणिमात्र के जीवन की रक्षा के साथ उसे जीने का अधिकार भी प्रदान करता है। सूत्रकृतांग सूत्र में निरूपित ''आयतुले पयासु'' एवं दशवैकालिक सूत्र में निगदित ''मित्तिं भूएसु कप्पए'' सूत्र भी प्रत्येक प्राणी के प्रति आत्मवत् भाव को पुष्ट करते हैं। जो प्रजातन्त्र के बन्धुत्व भाव (Fraternity) के पोषक हैं। जैन दर्शन का समता का सिद्धान्त जहाँ आध्यात्मिक अर्थ में समभाव को पुष्ट करता है वहाँ प्रजा में सबके प्रति बिना पक्षपात के व्यवहार की भावना को पुष्ट करता है।

जैन दर्शन में आत्म-स्वातन्त्र्य का सिद्धान्त प्रत्येक जीव की स्वतन्त्रता को स्वीकार करता है। उसका कर्म सिद्धान्त भी प्रतिपादित करता है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है तथा अपने कर्मों के अनुसार ही उसे फल की प्राप्ति होती है। वह ऐसे ईश्वर को स्वीकार नहीं करता जो सृष्टि का संचालक हो एवं प्राणियों पर शासन करता हो। जैन धर्म-दर्शन में सभी जीव कर्म करने में स्वतंत्र हैं। प्रजातन्त्र में स्वतन्त्रता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मूल्य है जो प्रजा को शक्ति सम्पन्न बनाता है। उसे विचाराभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, व्यवसाय की स्वतन्त्रता एवं धर्म का पालन करने की स्वतन्त्रता संविधान से प्राप्त है।

प्रजातन्त्र में प्रजा अपने प्रतिनिधियों को विधानसभा, लोकसभा आदि में भेजकर निश्चिन्त हो जाती है कि अब हमारी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान सरकार रखेगी, किन्तु सुशासन के लिए प्रजा की सक्रियता एवं जागरूकता भी आवश्यक होती है। उसे प्रजा के स्वानुशासन से प्राप्त किया जा सकता है। यह स्वानुशासन ही प्रजा का तन्त्र है अर्थात् प्रजातन्त्र है। यह स्वतन्त्रता का भी सूचक है। यह स्वतन्त्रता कोई स्वच्छन्दता नहीं, अपितु अपने योग्य कर्त्तव्यों के स्वेच्छा से निर्वहन की विधायक है। आज मनुष्य अधिकारों के प्रति लालायित है, किन्तु कर्त्तव्यों के प्रति उतना सजग नहीं है। इसलिए प्रजातन्त्र के माहौल को बदलने की आवश्यकता है एवं प्रजा को अधिक कर्त्तव्यनिष्ठ एवं उत्तरदायी

बनाने की आवश्यकता है। वह कर्त्तव्य का निर्वाह इस प्रकार करे कि जिससे दूसरे का हित बाधित न हो। यह स्वतन्त्रता शिक्षित समाज की अपेक्षा रखती है। प्रजा जितनी शिक्षित एवं स्वानुशासित होगी उतना ही देश अधिक विकास कर सकता है। जापान जैसे देश इसके उदाहरण हैं।

बन्धुत्वभाव के अभिवर्द्धन हेतु मैत्रीभाव के विकास की आवश्यकता है। जैनदर्शन में *''मित्ती मे सव्व भुएसु, वेरं मज्झं ण केणइ''* *''सत्त्वेषु मैत्री गुणीषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं''* जैसे वाक्य मानवीय बन्धुत्व भावना को सशक्त करते हैं।

प्रजातन्त्र का एक आवश्यक मूल्य है-न्यायशीलता। यह न्याय दो प्रकार का हो सकता है-1. आवश्यक साधन सामग्री का सबमें यथायोग्य वितरण और 2. अपराधी को दण्ड तथा सदाचारी को पुरस्कार। जैन धर्म दर्शन में यह न्यायशीलता परिग्रह परिमाण, उपभोग-परिभोग परिमाण, अदत्तादान विरमण, मैथुन विरमण आदि व्रतों के पालन से सहज सम्भव है। परिग्रह का परिमाण होगा तो प्रत्येक जरूरतमन्द को आवश्यक जीवन सामग्री की प्राप्ति सरलता से हो सकेगी। जल का यदि एक ही व्यक्ति संग्रह कर ले एवं अन्य जरूरतमन्दों को जल न पहुँचे तो कितना बड़ा अन्याय होगा। इसी प्रकार आवश्यक वस्तुओं का कोई निजी स्वार्थ से संग्रह कर ले एवं जरूरतमंद तक वह वस्तु न पहुँचे तो क्या यह अन्याय नहीं है ? जैन दर्शन इच्छा की अल्पता का पाठ पढ़ाता है। जितनी कम इच्छाएँ होंगी व्यक्ति उतना अधिक सुखी होगा एवं वस्तुओं का वितरण सबमें हो सकेगा।

अपराध-नियन्त्रण की बात करें तो जैनदर्शन में प्रतिपादित प्राणातिपात विरमण, मृषावाद विरमण, अदत्तादान विरमण, मैथुन विरमण, द्यूत-निषेध, मदिरापान निषेध, माँस-सेवन निषेध आदि ऐसे तत्त्व हैं जो मनुष्य को अपराध से रोकते हैं। देश में अथवा विश्व में जहाँ आतंक है वहाँ हिंसा है। जहाँ हिंसा नहीं वहाँ आतंक नहीं हो सकता। जहाँ आतंक है वहाँ निर्भयता नहीं हो सकती। प्रजातन्त्र तभी सफल कहा जा सकता है जब उसमें सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा हो एवं न्याय की रक्षा हो। धन का भ्रष्टाचार हो या चरित्र का, वह सभी अन्याय की कोटि में आता है। हरिभद्रसूरि कहते हैं कि व्यक्ति को न्याय-नीति से ही धनार्जन करना चाहिए, ऐसा धन इस लोक एवं परलोक दोनों के लिए हितकर

होता है - ''न्यायोपात्तं हि वित्तमुभयलोकहितायेति।'' यदि शासक न्याय नीति से आजीविका का अर्जन करता है तो प्रजा से भी ऐसी आशा की जा सकती है। यदि शासक ही अन्यायी हो जाए तो प्रजा का विनाश अवश्यम्भावी है अथवा प्रजा के जागरूक होने पर शासक के विरुद्ध अभियान अवश्यम्भावी है। जैनाचार्य सोमदेव सूरि की दृष्टि में शासक को कर्त्तव्यनिष्ठ, कुलीन, सदाचारी, तेजस्वी एवं न्याय नीति से युक्त आजीविका वाला होना चाहिए - ''धार्मिकः कुलाचाराभिजनविशुद्धः प्रतापवान्नन्यानुगतवृत्तिश्च स्वामी।'' राजा प्रजा का पालन न्याय नीति से करता है तो प्रजा सुखी रहती है एवं वह अन्याय करता है तो वह समुद्र के द्वारा मर्यादा उल्लंघन करने की भाँति, सूर्य के द्वारा अंधकार को पुष्ट करने की भाँति तथा माता के द्वारा संतान के भक्षण की भाँति निन्दनीय होता है।

सफल प्रजातंत्र वह है जिसमें शासक वर्ग ईमानदार, न्यायप्रिय, दीर्घदर्शी, विशेषज्ञ, कृतज्ञ, परोपकारी, इन्द्रियजयी एवं दयालु हो तथा प्रजा अपने अधिकारों की अपेक्षा कर्त्तव्यपालन के प्रति अधिक सजग हो।

प्रजातन्त्र में सब का उदय अर्थात् सर्वोदय होना चाहिए। जातिगत बंधनों से ऊपर उठकर सर्वोदय का चिन्तन आवश्यक है। समन्तभद्र कहते हैं- ''सर्वापदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।'' जैन दर्शन में प्रतिपादित सिद्धान्त समस्त मानव जाति की आपदाओं का निराकरण करने में एवं सर्वोदय के स्वरूप को प्रतिष्ठित करने में सहायक है। जैनदर्शन का अनेकान्त सिद्धान्त तो मानो प्रजातन्त्र का प्राण है, जो प्रत्येक समस्या एवं परिस्थिति को समझने के लिए एवं उसका हल निकालने के लिए नय दृष्टि प्रदान करता है। अचौर्य एवं ब्रह्मचर्य सिद्धान्त चारित्रिक भ्रष्टता का मूलतः उत्पाटन कर सकते हैं। सत्य की प्रतिष्ठा परस्पर विश्वास को जागृत करती है। प्रजा में पारस्परिक विश्वास होगा तभी बन्धुत्व की भावना को बल मिलेगा। एक-दूसरे के प्रति छीना-झपटी एवं हिंसा और आतंक से प्रजातंत्र की रक्षा नहीं हो सकती। न्याय-प्राप्ति के लिए दण्ड विधान के साथ प्रायश्चित्त के विधान को भी स्थान देना होगा तथा 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' के सिद्धान्त को महत्त्व देना होगा। जैन दर्शन में जीवन के ऐसे मूल्य निहित हैं जो प्रजातन्त्र को सफल बनाने में वैचारिक आधार प्रदान करते हैं।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

एकत्व भावना

अण्णस्स दुक्खं अण्णो नो परियाइयति, अन्नेण कडं कम्मं अन्नो नो पडिसंवेदेति, पत्तेयं जायति, पतेयं मरइ, पत्तेयं चयति, पत्तेयं उववज्जति, पत्तेयं झंझा, पत्तेयं सण्णा, पत्तेयं मण्णा, एवं विण्णू, वेदणा, इति खलु णातिसंयोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा, पुरिसो वा एगता पुव्विं णातिसंयोगे विप्पजहति, नातिसंयोगा वा एगता पुव्वि पुरिसं विप्पजहंति, अन्ने खलु णातिसंयोगा अन्नो अहमंसि, से किमंग पुण वयं अन्नमन्नेहिं णातिसंयोगेहिं मुच्छामो? इति संखाए णं वयं णातिसंयोगे विप्पजहिस्सामो।

अर्थः-

दूसरे के दुःख को दूसरा व्यक्ति बांट कर नहीं ले सकता। दूसरे के द्वारा कृत कर्म का फल दूसरा नहीं भोग सकता। प्रत्येक प्राणी अकेला ही जन्मता है, आयुष्य क्षय होने पर अकेला ही मरता है, प्रत्येक व्यक्ति अकेला ही (धन्य-धान्य-हिरण्य-सुवर्णादि परिग्रह, शब्दादि विषयों या माता-पितादि के संयोगों का) त्याग करता है, अकेला ही प्रत्येक व्यक्ति इन वस्तुओं का उपभोग या स्वीकार करता है, प्रत्येक व्यक्ति अकेला ही झंझा (कलह) आदि कषायों को ग्रहण करता है, अकेला ही पदार्थों का परिज्ञान (संज्ञान) करता है, तथा प्रत्येक व्यक्ति अकेला ही मनन-चिन्तन करता है, प्रत्येक व्यक्ति अकेला ही विद्वान् होता है, (उसके बदले में दूसरा कोई विद्वान् नहीं बनता), प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने सुख-दुःख का वेदन (अनुभव) करता है। अतः पूर्वोक्त प्रकार से (अन्यकृत कर्म का फल अन्य नहीं भोगता, तथा) प्रत्येक व्यक्ति के जन्म-जरा-मरणादि भिन्न-भिन्न हैं, इस सिद्धान्त के अनुसार ज्ञातिजनों का संयोग दुःख से रक्षा करने या पीड़ित मनुष्य को शान्ति या शरण देने में समर्थ नहीं है। कभी (क्रोधादिवश या मरणकाल में) मनुष्य स्वयं ज्ञातिजनों के संयोग को पहले ही छोड़ देता है अथवा कभी ज्ञातिसंयोग भी (मनुष्य के दुर्व्यवहार-दुराचरणादि देखकर) मनुष्य को पहले छोड़ देता है। अतः (मेधावी साधक यह निश्चित जान ले कि) 'ज्ञातिजनसंयोग मेरे से भिन्न है, मैं भी ज्ञातिजन संयोग से भिन्न हूँ।' तब फिर हम अपने से पृथक् (आत्मा से भिन्न) इस ज्ञातिजनसंयोग में क्यों आसक्त हों? यह भलीभांति जानकर हम ज्ञाति-संयोग का परित्याग कर देंगे।

-सूत्रकृतांग, द्वितीय श्रुतस्कन्ध, प्रथम अध्ययन, सूत्र-674

अमृत-चिन्तन

विचार-वाहिनी

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

स्वाध्याय

- यदि प्रारम्भ में किसी शास्त्र का पठन-पाठन कर रहे हैं तो कुछ व्रत ग्रहण करके पठन-पाठन करना चाहिये। यदि पहले-पहल आचारांग, सूत्रकृतांग अथवा अन्य किसी आगम का पठन करना हो तो किन्हीं मुनिराज अथवा शास्त्रों के विशेषज्ञ के चरणों में बैठकर व्रतग्रहणपूर्वक पढ़ना चाहिये। यदि शास्त्र से भिन्न किसी धार्मिक पुस्तक का अध्ययन प्रारम्भ करते हैं तो इतना आदर तो होना ही चाहिये कि अर्हंत् भगवान् और गुरुदेव को नमस्कार कर, विशुद्ध स्थान में बैठकर पढ़ना प्रारम्भ करें। यदि शरीर में बैठे रहने की शक्ति हो तो स्थिर आसन से बैठकर ही धार्मिक पुस्तकों को पढ़ना चाहिये। जिस प्रकार उपन्यासों, कथा-कहानियों की पुस्तकों को सोते, उठते-बैठते, विविध आसनों से लेटे अथवा बैठे रह कर पढ़ते हैं, उस प्रकार कभी नहीं पढ़ना चाहिये। कुछ व्यक्ति मर्यादा की इन बातों से घबरा कर अथवा वीतराग-वाणी का महत्त्व न समझ पाने के कारण शास्त्रों का पठन ही नहीं करते, जो उचित नहीं।
- आप सामायिक में माला फेरिये, स्तवन पढ़िये, आपके मस्तिष्क में उतनी तल्लीनता नहीं आ पायेगी, जितनी कि स्वाध्याय में आती है।
- स्वाध्याय करते समय आपकी आँखें, पुस्तक पर होंगी। यदि थोड़ी सी भी आँख इधर-उधर गई तो पुस्तक की पंक्ति छूट जायेगी और आपका स्वाध्याय का चलता हुआ क्रम टूट जायेगा। काययोग, वचन योग और मनोयोग इन तीनों योगों के संयोजन से ही स्वाध्याय हो सकता है। इसीलिये ज्ञानियों ने कहा है कि स्वाध्याय करते समय आसन स्थिर, वाणी नियंत्रित तथा मन एकाग्र होता है। मन को एकाग्र करने के लिये स्थिर आसन से बैठना अनिवार्य हो जाता है। स्वाध्याय में मन, वचन और काय इन तीनों का योग सुसाध्य है।
- स्वाध्याय वह प्रक्रिया है, जो हमारी मनोभूमि के साथ शास्त्रीय वाणी के द्वारा अज्ञान का अन्धकार हटाने एवं ज्ञान की ज्योति जगाने के लिये घर्षण का काम करती है। वह एक साधन है, जिससे हम अपने मन पर आये हुए, आत्मा पर लगे हुए अज्ञान के परदे को दूर कर सकते हैं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

संस्कार की धारा फिर से बहानी होगी

मधुर व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा.

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने सरस्वती उच्च माध्यमिक विद्यालय, पाली एवं महावीर बाल मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली के विद्यार्थियों को दिनाँक 2 फरवरी एवं 6 फरवरी 2010 उद्‌बोधन किया, जिसका संकलन श्री चैनराज जी मेहता,पाली ने एवं सम्पादन श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली ने किया है-सम्पादक

जिस आर्य धरा पर हमने जन्म लिया है, उसका एक गौरवशाली इतिहास रहा है। यहाँ पर जीवन इत्र से नहीं चारित्र से सुवासित था। विलास से नहीं वैराग्य से विकसित था। धन से नहीं गुणों से समृद्ध था। संग्रह से नहीं त्याग से पुष्ट था। स्वछन्दता नहीं थी, मर्यादा का सुरक्षा चक्र था। असंयम की आग से तप्त नहीं था, अपितु संयम के जल से शान्त था। आज उस गौरवशाली परम्परा को, उस आदर्श जीवन को मानो कोई नज़र लग गई है। जीवन की शुचिता को ग्रहण लग रहा है। इस स्थिति के लिए कोई और नहीं, हम स्वयं जिम्मेवार हैं। अतः आवश्यकता है कि हमारी संस्कृति और संस्कारों की पुनः प्रतिष्ठा की जाये। यह हमारे संकल्प बल से ही हो सकता है और इसकी शुरुआत स्वयं से ही हो सकती है। मैं यह बात आपसे (विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए) इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि इस अवस्था में लोग आपको 'बच्चा' कहते हैं। 'बच्चा' इसलिये कि अभी आप विकारों से, विकृतियों से एवं गलत प्रवृतियों से बचे हुए हैं। अभी तक आपका जीवन एक कच्ची माटी की तरह है जिसे कुम्हार मनचाहे घड़े का आकार दे सकता है। आप एक कोरे कागज हैं जिस पर चित्रकार जैसा चाहे वैसा चित्र बना सकता है। कुम्हार ने एक बार घड़े को पका लिया तो फिर उसके आकार में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। जीवन का निर्माण बाल्यावस्था से ही शुरु होता है। उसे हम जैसा बनाना चाहें, उसका प्रारम्भ इसी अवस्था से हो सकता है। गणित के सिद्धान्त में तीन और तीन की संख्या को जोड़ कर छह भी बना सकते हैं, गुणा करके नौ भी बना सकते हैं, भाग

देकर एक भी कर सकते हैं और घटा कर शून्य भी कर सकते हैं। आपका जीवन भी गणित के अलग-अलग अंकों की तरह है, उसका जोड़, बाकी, गुणा, भाग जो भी करेंगे, वैसा ही फल मिलेगा।

शिक्षा तो राम ने भी पाई थी और रावण ने भी पाई थी। विद्यार्जन कृष्ण ने भी किया था और कंस ने भी किया था। गुरु से पाठ युधिष्ठिर ने भी पढ़ा था और दुर्योधन ने भी पढ़ा था। लेकिन इतिहास साक्षी है कि जिसने शिक्षा का जैसा उपयोग किया वह वैसा ही बन गया। एक को हम आदर की दृष्टि से देखते हैं तो दूसरे को नफरत की दृष्टि से। शिक्षा तो सरकस में काम करने वाले जानवरों को भी दी जाती है जिनके करतब देखकर लोग दांतों तले उंगली दबाते हैं, मगर उनमें संस्कारों का अभाव होने से सद्गुणों का विकास नहीं हो पाता है। प्राचीन समय में जब विद्यार्थी विद्या अर्जन कर विद्यालय से निकलता था तब वह नैतिकता, नम्रता और निष्ठा की सुवास लेकर निकलता था। शिक्षा का उद्देश्य केवल जीवन निर्वाह ही नहीं था, अपितु जीवन निर्माण भी था। लेकिन आज शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। उसमें नैतिकता के संस्कारों का पूर्णतः अभाव है। फलस्वरूप, जीवन निर्वाह के लिये सभी तरह के साधनों को अपना लिया जाता है। अब एक मात्र प्रयोजन पैसा कमाने का रहता है जिससे आज समाज में बेईमानी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी का बोल बाला हो गया है। नैतिकता के अभाव में उच्छृंखलता पनप गई है। पैसे का उपयोग विलास के साधनों में किया जाता है। परस्पर सहयोग की भावना मृत प्रायः हो रही है। नतीजा है, अराजकता और तनावग्रस्त जीवन।

आपके बाल्यकाल के संस्कार ही आपके भविष्य का निर्माण करेंगे। आपको इस बात का संकल्प लेना होगा कि हमारा जीवन प्रामाणिक बनें, निर्व्यसनी बनें, चरित्रनिष्ठ बनें। वर्तमान का यह संकल्प आपके उज्ज्वल भविष्य का प्रासाद बनायेगा। आपमें से कई लोग सरकारी अधिकारी बनेंगे। कुछ राजनीति में आकर राजनेता भी बनेंगे। यदि आपका चरित्र नैतिकता से ओतप्रोत होगा तो आप अपने काम में शुचिता लायेंगे। सरकारी विभागों में एक नई संस्कृति का निर्माण कर सकेंगे जहाँ बेईमानी नहीं होगी, भ्रष्टाचार नहीं होगा

और कार्य कुशलता बढ़ेगी। जिन-जिन क्षेत्रों में आप जायेंगे आप अपने नैतिक संस्कारों से एक नये वातावरण का निर्माण कर सकेंगे। शायद आप सोचते होंगे कि मेरे अकेले के बदलने से क्या होगा। ऐसी सोच बन गई है कि जब आकाश ही फट गया तो कारी कहाँ लगायें। सारा वातावरण ही इतना विकृत हो गया तो मेरे अकेले के अच्छा होने से कुछ भी भला नहीं हो सकता। यह नकारात्मक सोच है जो आपके उत्साह की कमी की द्योतक है। आपने एक कहानी सुनी होगी। एक जगह भयंकर आग लग गई। चारों तरफ अफरातफरी मच गई। कई लोग आग बुझाने में लग गये उसी समय वहाँ पर एक पेड़ पर बैठी चिड़िया अपनी चोंच में पानी भर आग बुझाने में लग गई। उसी पेड़ पर एक कौआ भी था। उसने चिड़िया से कहा कि चिड़िया बहन, तेरी चोंच में जितना पानी आता है उससे तो आग का छोटे से छोटा शोला भी नहीं बुझ सकेगा। तेरा यह प्रयास तो व्यर्थ ही जायेगा। चिड़िया बोली कि कौआ भाई, मुझे इस बात का पता है कि मेरी चोंच के पानी से आग नहीं बुझने वाली है, लेकिन जिस दिन इस घटना का इतिहास लिखा जायेगा मेरा नाम आग लगाने वालों में नहीं बल्कि आग बुझाने वालों में आयेगा। व्यक्ति के सुधरने से ही समाज सुधरता है। यदि सभी ऐसा सोचलें कि मेरे सुधरने से क्या होगा तो फिर समाज कभी नहीं सुधर सकता। दूसरे सुधरते हैं या नहीं, इस दुविधा में आप क्यों पड़ते हैं? आपका तो एक ही संकल्प होना चाहिए कि मुझे सुधरना है। जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण रचनात्मक हो, सृजनात्मक हो और यह तभी होगा जब हमारी सोच सकारात्मक होगी।

सकारात्मक सोच के साथ जीवन-निर्माण का प्रारम्भ करने के बाद हमें तीन बातों का संकल्प लेना चाहिए। हमारा जीवन निर्व्यसनी हो, अनुशासित हो एवं संयमी हो। जीवन रूपी वृक्ष को पल्लवित, पुष्पित एवं फलदायी बनाने के लिये जीवन में इन तीनों का होना अति आवश्यक है।

व्यसन अनेक दुर्गुणों को जन्म देता है। अपने विहार क्रम में हमें कई बार स्कूलों में भी ठहरना होता है। स्कूलों के आसपास गुटखों के बिखरे पाउच देखकर मन में बड़ी वेदना होती है कि लघुवय में ही बालकों को गुटखा खाने की

आदत पनप रही है। हमने तो यहाँ तक सुना है कि वे सिगरेट भी पीने लग जाते हैं। इनका सेवन तन और धन दोनों का नाश कर देता है। गुटखे से कालान्तर में कैन्सर जैसी भयावह और असाध्य बीमारी हो जाती है। फेफड़े खराब हो जाते हैं। इनको खरीदने के लिये बालपने में ही चोरी करने की लत लग जाती है। गुटखा खाने वाले चारों तरफ गुटखे का पीक थूक-थूक कर सारे परिवेश को ही गन्दा नहीं करते, अपितु अपने तन और मन को भी गन्दा करते रहते हैं। हमने देखा है कि गुटखा खाने वाले ठीक से बोल भी नहीं पाते हैं। मुँह के कैंन्सर से ग्रसित होकर कम उम्र में ही काल कवलित होकर अपने परिवार को असहाय अवस्था में छोड़ जाते हैं। परिवार बिखर जाते हैं और उनकी दशा बड़ी दयनीय हो जाती है। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से आज सामान्य और संभ्रान्त दोनों ही तरफ के परिवारों में शराब का प्रचलन हो गया है। उससे विद्यार्थी भी अछूते नहीं रहे हैं। देख-देख कर बड़ा दुख होता है कि आने वाली पीढ़ी कैसे-कैसे कुसंस्कारों से जीवन प्रारम्भ करके सुनहरे भविष्य का निर्माण करेगी?

मैं आप लोगों को बताना चाहता हूँ कि इन कुव्यसनों का प्रारम्भ कैसे होता है और अन्त में इनकी नियति क्या होती है ताकि आप अभी से ही अपने आपको इनसे बचाकर रखें। देखा गया है कि इन व्यसनों की शुरुआत अधिकतर संगति में **मनुहार** के साथ होती है। आपके साथी, जो इनका सेवन करते हैं, आपको भी इनके लिये मनुहार करते हैं और उस मनुहार को मानकर आप इसे खाने लगते हैं। शुरु-शुरु में इनका सेवन अच्छा नहीं लगता, पर बार-बार खाने पर इनका नशा आता है और इनके खाने में आपको **मजा** आने लग जाता है। यह मजा शीघ्र ही आपकी **मजबूरी** बन जाता है क्योंकि आप उसके इतने आदि हो जाते हैं कि बिना खाये आपको चैन नहीं होता। यह वह अवस्था है जब व्यसन का आपके ऊपर पूरा नियन्त्रण हो जाता है और आपका शरीर उसका घर बन जाता है। शरीर उसे सहन नहीं कर सकता और शरीर को **माँदगी** का शिकार होना पड़ता है। यह माँदगी आप ही को नहीं आपके सारे परिवार को भी बीमार बना देती है। अन्त में इस माँदगी की नियति है दयनीय **मृत्यु**। आप यदि शुरु में ही इस मनुहार को ठुकरा देंगे तो इस लत से बच जायेंगे। आपका

'बच्चे' (बचे) का विशेषण भी सार्थक हो जायगा, अन्यथा ये पाँच 'म' आपको डुबो देंगे।

अनुशासन एक व्यवस्थित और सुन्दर जीवन का प्राण है। आपने पतंग को आकाश में उड़ते हुए देखा है। जब तक वह डोर से बंधी है, दूर आकाश में अठखेलियाँ करते हुए भी उड़ाने वाले के नियन्त्रण में रहती है और वह उसे सुरक्षित जमीन पर उतार लेता है। लेकिन अगर उसकी डोर टूट गई तो वह कहाँ जाकर गिरेगी, कहाँ अटक जायेगी, कोई पता नहीं। पंतग की डोर की तरह अनुशासन भी जीवन की डोर है। जो व्यक्ति अनुशासन की डोर में बंधा रहता है उसके गिरने की सम्भावना नहीं रहती है। सूई में अगर लम्बा धागा लगा हुआ है और अगर वह कचरे में कहीं खो भी जाये तो उसे ढूंढ कर निकालना आसान होता है। जो महत्त्व पतंग के धागे का या सूई के धागे का है वही महत्त्व जीवन में अनुशासन का है। अनुशासन न तो बंधन है, न दमन है और न ही पराधीनता। अनुशासन भार नहीं, अपितु जीवन में एक बहुत बड़ा उपहार है जो हमारे जीवन को सुन्दर बनाता है। माता-पिता एवं गुरुजनों की हर सीख को मानकर तदनुकूल आचरण करना चाहिए। वह सीख कड़वी लगे तो भी उसे सहर्ष मान लेना चाहिए। वे आपके हितैषी हैं अतः ऐसी कोई बात नहीं कहेंगे जो आपके हित में नहीं हैं। जैसे कड़वी दवा से ही बीमारी ठीक होती है उसी तरह बड़ों की कड़वी बात से ही हमारा जीवन सुधरता है। उसका बुरा नहीं मानना चाहिए। एक कहावत है कि शिशु, शिष्य और सीसी को डाट लगानी चाहिए नहीं तो उनके अन्दर की वस्तु सुरक्षित नहीं रहती, नष्ट हो जायेगी। इसीलिये कभी-कभी आप गलत काम करते हैं तो उससे बचने के लिये उनकी डांट भी सहन कर लेनी चाहिए, क्योंकि उससे हमारे जीवन में सुधार होता है। कहते हैं कि-

गुरु कुम्हार सीस कुम्भ है, घड़-घड़ काढ़े खोट।
भीतर हाथ सहार दे, बाहिर मारे चोट॥

गुरु कुम्हार की तरह है और शिष्य घड़े की तरह है। घड़े को बनाने के लिये ऊपर से जोर-जोर से थपकी देकर उसे गोल करके सुन्दर आकार दिया जाता है, पर ऊपर से चोट देने के समय भीतर में दूसरे हाथ की कोमलता का लगातार सहारा होता है ताकि घड़ा कहीं टूट न जाये। यही बात हमारे माँ-बाप

पर भी लागू होती है। वे हमारा सुधार करने के लिये ऊपर से कितने भी कठोर बनें, लेकिन उनके मन में उस कठोरता के पीछे हमारा हित ही होता है। आपने एक मारवाड़ी कहावत सुनी होगी- 'बड़ेरा री गालियाँ और घी की नालियाँ' अर्थात् बड़ों की गालियों को गालियां मत समझो। वे तो हमारे जीवन को पुष्ट करने के लिये घी की तरह है। माता-पिता और गुरुजनों की हर सीख हमारे लिये आशीर्वाद है, अमृत है। अनुशासन को अंग्रेजी में Discipline कहते हैं। अंग्रेजी वर्णमाला के जिस क्रम में इसके एक-एक अक्षर आते हैं उनको उस संख्या में लिखकर उनका जोड़ लगायेंगे तो उसकी संख्या 100 होगी। जैसे D का स्थान चौथे स्थान पर है, उसी तरह से Discipline शब्द क्रम संख्या होगी- 4+9+19+3+9+16+12+9+14+5 = 100 इसी तरह अंग्रेजी का एक शब्द है Attitude, जिसके अक्षरों को अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों के क्रम की संख्या में रखेंगे तो फल होगा- 1+20+20+9+20+21+4+5=100। सौ की संख्या खरेपन की द्योतक है। यानी यदि आपका Attitude (सोच) सही हो तो आप Discipline (अनुशासन) में रहेंगे, जिससे आपका जीवन खरे सोने की तरह मूल्यवान बन जायेगा और शत-प्रतिशत श्रेष्ठ कहलायेगा। भगवान् महावीर ने तो इससे भी आगे की बात कही है और एक बहुत ही सुन्दर शब्द दिया है- 'आत्मानुशासन'। अर्थात् स्वयं पर स्वयं का अनुशासन। यह तो उत्कृष्ट दशा है कि व्यक्ति अपने पर अपना अनुशासन रख कर जीवन को चलाये। इसमें कोई पराधीनता का भाव नहीं आ सकता। लेकिन जीवन के प्रारम्भ में जब तक हमें पूरा बोध नहीं होता है तब तक माता-पिता एवं गुरुजनों का मार्गदर्शन अनिवार्य है। जब उनके दिये संस्कार हमारे में बस जायेंगे तो आगे जाकर हम भी आत्मानुशासन की स्थिति में पहुँच जायेंगे।

आत्मानुशासन हमारे चरित्र को पुष्ट करता है, उसे निष्ठा प्रदान करता है। चरित्र निष्ठा हमारी भारतीय संस्कृति का शाश्वत स्वर रहा है। चरित्र के प्रति निष्ठा रहेगी तो हमारा जीवन बहुत ऊँचा उठ जायेगा और हमारे विचार 'मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्' के हो जायेंगे अर्थात् हर नारी में हमें माँ और बहिन की झलक दिखेगी और कोई भी पराया धन धूल के समान समझेंगे। अपनी बात

और अधिक स्पष्ट करते हुए मैं एक दृष्टान्त देना चाहता हूँ एक सुसंस्कारित दम्पती किसी कार्यवश एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे थे। पति आगे चल रहा था और पत्नी पीछे कुछ दूरी पर चल रही थी। पति को रास्ते में पड़ी स्वर्ण मोहरें दिखी। अपने दृढ़ संस्कारों के कारण उस पराये धन के लिये उसके मन में कोई लालसा नहीं जगी पर उसने सोचा कि पीछे पत्नी आ रही है उसे स्वर्ण मोहरें देखकर कहीं लोभ में उसका मन चंचल न हो जाए, अतः उसने पैर से उनके ऊपर मिट्टी डाल दी। पत्नी ने पति को मिट्टी डालते हुए देख लिया। पत्नी ने पति को पास जाकर पूछ लिया कि पतिदेव आप यह क्या कर रहे थे? पति ने बड़े सहज भाव से उत्तर दिया कि मैंने रास्ते में स्वर्ण मोहरें पड़ी हुई देखी थी। इसे पराया धन समझकर मेरी कोई लालसा नहीं जगी, परन्तु मैंने सोचा कि स्त्रियों को सोने से प्रेम अधिक होता है अतः इन्हें देखकर तुम्हारा मन कहीं चंचल न हो जाय, मैंने इन पर मिट्टी डाल दी ताकि तुम्हें दिखे ही नहीं। पत्नी ने बड़ी सहजता से उत्तर दिया कि पतिदेव, मिट्टी पर मिट्टी डालकर आपने कौनसा बड़ा काम कर दिया। मैं तो इस पराये धन को मिट्टी समझती हूँ। पति तो सोने को सोना समझ रहा था पर संस्कारों के कारण उसका मन उसे पाने को चंचल नहीं हुआ, पर पत्नी तो उससे एक कदम आगे थी। वह पराये धन को मिट्टी ही समझती थी। यह है आत्मानुशासन का प्रभाव।

अनुशासन का ही विस्तृत रूप है संयमित जीवन। संयमित जीवन का एक पक्ष है- सादगी। हमारे जीवन में आज पाश्चात्य संस्कृति घर कर रही है, फलतः जीवन का लक्ष्य रह गया है 'खाओ, पीओ और मौज उड़ाओ'। जीवन स्वार्थी बन गया है। प्रेम, करुणा और अनुकम्पा घटते जा रहे हैं। हमारा रहन-सहन तड़क-भड़क का हो गया है। पहनावे में कोई शालीनता नहीं रही है। एक तरह भौंडे और फूहड़ प्रदर्शन में पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है तो दूसरी तरफ शोषण और गरीबी के दुःख का कोई अहसास ही नहीं है। हमें इन सबसे बचकर हमारी संस्कृति के अमर उद्घोष-'सादा जीवन उच्च विचार' को अपनाना ही नहीं, उसे आत्मसात् भी करना चाहिए। एक बार जब स्वामी विवेकानन्द अमेरिका गये तो उनके सादे वेश को देखकर एक अमेरिकन उनका उपहास उड़ाने लगा। स्वामी जी ने उसे अंग्रेजी में जो उत्तर दिया, हमें उस पर

गंभीरता से विचार करना होगा। स्वामी जी ने उपहास करने वाले को कहा- In your Country a tailor makes a man but in my country it is the character which makes a man. अर्थात् आपके देश में एक दर्जी आदमी को बनाता है, परन्तु मेरे देश में चरित्र आदमी को बनाता है। कितना सार गर्भित उत्तर था उनका। केवल वेश ही नहीं, जीवन का हर पक्ष सादगी से ओतप्रोत होना चाहिए। इससे जीवन में सरलता आती है। जिसका जीवन सरल होगा उसके जीवन में शान्ति रहेगी। लालसाएँ नहीं होंगी। कम खर्च में उसका जीवन यापन होगा। जहाँ कपट होगा वहाँ सत्य कैसे टिकेगा। जहाँ विलासी जीवन होगा, अपरिमित इच्छाएँ होंगी तो उनकी पूर्ति के लिये व्यक्ति को सभी तरह के हथकण्डे अपनाने होंगे। ऐसे में जीवन में शान्ति और संतोष कहाँ से आयेगा? व्यक्ति तनाव के चक्रव्यूह में ही घिरा रहेगा।

संयम का ही दूसरा पक्ष है अहिंसक और मैत्री पूर्ण जीवन। मांस खाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। लोग अपनी लालसा के लिये निरीह प्राणियों की हत्या कर उदर पूर्ति करते हैं, मानो पेट नहीं श्मशानगृह हो। मांस मानव के लिये प्राकृतिक आहार भी नहीं है। जो जानवर मांस भोजी नहीं है उनके सामने कितना ही मांस रख दीजिये वे उसे छुएंगे भी नहीं। इस दृष्टि से तो मांस भोजी व्यक्ति जानवरों से भी गये बीते हो गये। अपनी स्वार्थपूर्ति के लिये प्राणि-वध महापाप है। अण्डा खाने के लिये नित नये तर्क दिये जाते हैं। हमें तो सुनकर आश्चर्य होता है कि कुछ लोग अण्डे को भी शाकाहारी बताने लग गये हैं। आप लोग इन सब अभक्ष्य पदार्थों से बचें। सभी जीवों के प्रति मैत्री और करुणा भाव होना चाहिए। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो आपकी मानवीय संवेदनाएँ मर जायेंगी। हिंसक प्रवृतियां जीवन में घर कर लेंगी। आजकल टी.वी. के प्रोग्राम इन अवांछित गतिविधियों को बढ़ाने में अपना पूर्ण योगदान दे रहे हैं। मारधाड़ के दृश्य टी.वी. सीरियलों में आम हो गये हैं। यहाँ तक कि तथाकथित बालकों के लिये कार्टून प्रोग्राम भी हिंसक दृश्यों से भरे पड़े हैं। इन्हें देखकर बालकों में पाशविक वृत्ति नहीं पनपेगी तो क्या पनपेगी? भड़कीले डांस और गानों को देखकर जीवन में सादगी और शर्म कैसे आयेगी? अतः ऐसे टी.वी. के प्रोग्रामों से बचना अति आवश्यक है। अन्यथा हमारी संवेदना शून्य हो जायेगी। प्रेम

और करुणा का स्रोत सूख जायेगा। सास-बहू के ऐसे ऐसे सीरियल आते हैं जिन्हें देखकर आपका परिवार बिगड़ेगा नहीं तो क्या सुधरेगा।

पाश्चात्त्य सभ्यता के प्रभाव से यों भी माँ-बाप के प्रति संवेदना समाप्त हो रही है, उनको आदर और सम्मान देने की तो बात ही नहीं रही है। माली ने जिस बाग में पेड़ पौधे लगाकर बड़ी मेहनत से हरा-भरा किया है, उसे उसी बाग में कोई पूछने वाला नहीं। माँ-बाप अक्सर उपेक्षा और तिरस्कार के शिकार हो रहे हैं। जिस घर को उन्होंने एक-एक ईंट लगाकार बड़ी मेहनत से बनाया है उस घर में उनके लिये कोई जगह नहीं रह गई है। बेटे-बहू उन्हें घर से निकाल कर वृद्धाश्रमों में जाने को मजबूर कर देते हैं। वृद्धाश्रमों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। कोई उन्हें माँ-बाप का ध्यान रखने को कहते हैं तो सीधा जवाब होता है कि माँ-बाप की आदतें ठीक नहीं हैं। आप जैसे थे, आपके माँ-बाप ने वैसे ही आपको स्वीकार कर आपको पाल-पोस कर बड़ा किया, पढ़ाया, कमाने के योग्य बनाया और शादी भी कर दी, तो माँ बाप जैसे भी हैं उन्हें उसी रूप में स्वीकार करने में क्या दिक्कत है? कारण एक ही है- हम अत्यन्त स्वार्थी बन गये हैं और संवेदना शून्य हो गये हैं। यह अत्यन्त घातक प्रवृत्ति है। माँ-बाप का अनादर करने वाले एवं उन्हें वृद्धाश्रम भेजने वाले यह क्यों नहीं सोचते कि एक दिन यह देखकर उनके बच्चे भी उनके साथ ऐसा ही व्यवहार कर सकते हैं। उनका तो मानो जीवन दर्शन हो गया है कि 'हम दो हमारे दो, तीसरा आये तो धक्का दो।'

मैं यहा उपस्थित विद्यार्थियों से पूछना चाहता हूँ कि कितने विद्यार्थी सुबह उठकर माँ-बाप को प्रणाम करते हैं? याद रखना माँ-बाप का आशीर्वाद जीवन के हर मोड़ पर आपका सम्बल होगा और आपको शक्ति देगा। आपके माँ-बाप के प्रति आदर और सम्मान के भाव जगें। यह शुरुआत आप स्वयं करेंगे तो जीवन प्रसन्नता से भर जायगा। विद्यार्थी जिज्ञासु होता है। बड़े होने पर भी यही जिज्ञासु भाव आप में बना रहे, आपका जीवन अनुशासित हो, संयमित हो, अहिंसक हो, करुणा प्रधान हो एवं मैत्री भाव से परिपूर्ण हो। इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ मैं अपनी बात को विश्राम देता हूँ। ■

अध्यात्म

ध्यानमय जीवन : जागरूक जीवन

श्री रणजीत सिंह कूमट (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

जीवन ध्यान से जीयें इसके लिए अग्रांकित पाँच बातों पर ध्यान देना एवं इन पर ध्यान करना आवश्यक है। ये पाँच बातें रोजमर्रा की हैं और हम इन्हें तुच्छ मान कर कोई ध्यान नहीं देते। इन्हीं को अब जरा ध्यान से देखें।

श्वास पर ध्यान

श्वास पर ध्यान दो। हमारे जीवित होने का एक मात्र निशान है श्वास का आवागमन। जिस क्षण श्वास रुक जाएगी हमें मृत घोषित कर दिया जायेगा, परन्तु हम अपने श्वास पर कितना ध्यान देते हैं? हमें मालूम ही नहीं कि श्वास आ रहा है या जा रहा है? श्वास धीरे आ रहा है या तेजी से आ रहा है? श्वास गहरा है या छिछला है? हम श्वास यंत्रवत् ले रहे हैं और इसीलिये हमारा स्वास्थ्य भी गड़बड़ रहता है। हमारा ध्यान श्वासोच्छ्वास पर होना अत्यन्त आवश्यक है। श्वास का हमारे मन व मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है। जब भी मन उद्वेलित होता है श्वास भी तेज चलती है या बेतरतीब चलती है। क्रोध में तो श्वास बहुत तेज हो जाती है। जब मन उदास होता है, श्वास धीमा और छिछला हो जाता है। मन व मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए श्वास पर ध्यान देना होगा व नियंत्रित करना होगा। हमें शांत मन से श्वास को ध्यान से देखना चाहिए और जैसा आ रहा है उसे साक्षीभाव से देखना है। श्वास का व्यायाम नहीं करना है; केवल देखना है और श्वास के प्रति जागृत होना है। इसीसे हमारे मन में समताभाव जागृत होगा, वही भाव मन को शांति व समाधि प्रदान करेगा।

आहार पर ध्यान

आहार पर ध्यान दो। हमारा मन व स्वास्थ्य आहार के अनुरूप ही होता है- कहावत भी है 'जैसा खाए अन्न, वैसा होवे मन'। आहार सात्त्विक, शुद्ध और स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होना चाहिए। सात्त्विक आहार का अर्थ है कि भोजन शाकाहारी हो, अपनी सच्ची कमाई का हो, जीवों को मार कर, प्रताड़ना दे कर, परेशान कर जो भी भोजन होगा वह हमारे मन को कभी शांत नहीं रहने देगा। शाकाहारी भोजन भी यदि किसी को परेशान करके, शोषण करके या रिश्वत से

प्राप्त कमाई से हो तो वह शाकाहारी नहीं रहता। मेहनत की सच्ची कमाई का भोजन ही निरामिष भोजन होता है।

भोजन सादा हो, परन्तु शुद्ध हो अर्थात् सफाई से बनाया हुआ होना चाहिए। जहाँ खाना बनता है वहाँ सफाई रहनी चाहिए, कीड़ों, मकोड़ों या झींगुर आदि का प्रकोप नहीं होना चाहिए। भोजन साफ हाथों से बनाया हुआ होना चाहिए। भोजन स्वास्थ्यवर्धक भी होना चाहिए. जिह्वा के स्वादवश अधिक घी, तेल, शक्कर, मिर्ची आदि का उपयोग नहीं होना चाहिए। आजकल के प्रचलित पश्चिमी आहार जिनमें मैदा, चीज़ (Cheeze) अण्डों का उपयोग होता है वे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं तथा जल्द ही मोटापा लाते हैं। भोजन स्वास्थ्यकर व रुचिकर हो, लेकिन हमारे खाने की मात्रा अल्प होनी चाहिए। अधिक भोजन भी हानिकर है। वह मोटापा के अतिरिक्त सुस्ती लाता है और काम करने में रुकावट डालता है। ध्यान व अन्य आध्यात्मिक साधना में भी बाधक बनता है।

आहार करते वक्त आहार कैसे कर रहें हैं इस पर भी ध्यान दें। आहार जल्दी जल्दी नहीं करें, हर ग्रास को ध्यान से चबा कर खाएं। खाते वक्त सिर्फ खाने पर ही ध्यान दें। खाना खाते वक्त अक्सर हम अखबार, किताब या कागज पढ़ते हैं या आजकल टी.वी. देखते हैं, खाना खाते हुए बात करते हैं तो हमारा भोजन पर ध्यान ही नहीं रहता।

अतः आवश्यक है कि भोजन पर हमारा ध्यान हो और मन को एकाग्र कर भोजन करें। आपने ग्रास तोड़ा है तो जानें कि ग्रास तोडा है। जब ग्रास मुंह तक ले जायें तो जानें कि ग्रास मुंह तक गया है। जब मुँह में रखें तो जानें कि ग्रास मुंह में रखा है। जब चबा रहे हैं तो जानें कि चबा रहें हैं और उस स्वाद को जानें और जान कर समता में रहें। भोजन को आनन्द से चबाएं और स्वाद लें व कोई भी कमी हो तो कुछ न कहें, जान कर चुप रहें और भोजन का आनंद लेते हुए गले के नीचे उतारें। जब भोजन नीचे जा रहा है तो जानें कि नीचे जा रहा है। भोजन के प्रति कोई घृणा भाव न आये, न ही गृद्धता (लालच)। भोजन के हर ग्रास को जान कर खा रहें हैं यह है, भोजन के प्रति ध्यान।

विहार पर ध्यान

विहार का अर्थ होता है चलना। हमें अपनी चाल पर भी ध्यान देना चाहिए। आवश्यक है कि हम नियमित रूप से चलें। घूमेंगे नहीं तो स्वास्थ्य जल्दी खराब हो जायेगा। चलते वक्त हम अपनी चाल पर ध्यान दें। बहुत तेज न हो, न बहुत धीरे हो,

नीचे देख कर चलें, नहीं तो ठोकर खाने का डर है।

नीचे देख कर चलने से जीवों की भी रक्षा हो जाती है। वर्षा में बहुत से रेंगने वाले जीवों जैसे केंचुए आदि का प्रादुर्भाव हो जाता है। ध्यान से न चलने पर वे हमारे पैरों तले आ जाते हैं। अक्सर बाग़ में घूमते हुए देखा है कि लोगों के ध्यान से न चलने से कई जानवर लोगों के पैरों तले आते हैं और अनायास ही काल कवलित हो जाते हैं। मेरे पिताजी बचपन में एक दोहा सुनाते थे, वह निम्न प्रकार है:-

नीचे देख्यां गुण घणा, जीव जंतु बच जाय।
ठोकर की लागे नहीं, पड़ी वस्तु मिल जाय।।

चलने पर ध्यान देने पर जैन धर्म में विशेष जोर दिया है। चलते वक्त हर कदम पर ध्यान देने का निर्देश है। कदम कैसे उठाया, कितना ऊँचा उठाया, कितना बड़ा कदम है और कब व कैसे पाँव जमीन पर रखा इसके प्रति पूर्ण जागरूक होकर चलने का निर्देश है। हम चलते हुए भी जागरुक हैं कि कैसे चल रहें हैं, खाते, पीते, चलते, उठते, बैठते, हर वक्त जागरूक रहना व विवेक रखना ही अच्छे साधक की निशानी है। साधु के लिए निर्देश है कि चलते वक्त नज़र जमीन पर दो हाथ से ज्यादा दूर न रहे। यदि साधु या साधक ध्यानपूर्वक चले और अपने हर कदम के प्रति जागरूक हो तो नज़र कभी भी दो हाथ से ज्यादा दूर रह नहीं सकती। अतः चलते वक्त जागरूक होकर चलने का निर्देश है न कि बात करते हुए इधर-उधर के नज़ारे देखते हुए चलने की।

विचार पर ध्यान

तीसरा महत्त्वपूर्ण ध्यान का विषय है विचार। विचार ही हमें बनाते हैं और विचार ही हमें बिगाड़ते हैं। जैसे हमारे विचार होंगे वैसा ही हमारा जीवन होगा। विचार ही हमारी क्रिया का आधार है। कोई भी कार्य करने से पूर्व पहले मस्तिष्क में विचार जन्म लेता है फिर वह कार्य रूप में परिणत होता है। जैसा विचार होगा वैसा ही कार्य होगा, अतः हमें अपने विचारों के प्रति अत्यंत जागरूक होना है।

श्वास, आहार व विहार के प्रति जागरूक होना विचारों के प्रति जागरूक होने की तैयारी के रूप में है। जब हमारा मस्तिष्क इन बाहरी क्रियाओं के प्रति जागरूक होने में कुशल हो जाएगा तब मस्तिष्क की सूक्ष्म क्रियाओं के प्रति जागरूक होने में माहिर हो जाएगा।

मन बहुत चंचल है और बहुत दिशाओं में भागता है; एक विषय पर लगातार नहीं रुकता, इस चंचल मन को बन्दर की उपमा दी गई है। मन की एकाग्रता न होने

से हम कोई भी कार्य कुशलता से नहीं कर पाते हैं। मन को एकाग्र करने के लिए ध्यान बहुत उपयोगी है। श्वास, आहार, विहार पर ध्यान करते-करते मन विचार पर भी ध्यान करने में माहिर हो जाता है। मन पर ध्यान करने से जागरूकता बढती है और हम न केवल सचेत मन का ध्यान कर पाते हैं, अवचेतन मन से भी अवगत हो जाते हैं। अवचेतन मन कुल मन का 9/10 भाग है और इसके प्रति हम अधिकांश में बेखबर हैं। हमारे आवेश यथा क्रोध, अहं, काम, लोभ आदि अवचेतन मन से संचालित होते हैं। यदि अपने आवेशों पर काबू पाना है तो अवचेतन मन पर काबू पाना होगा। यह ध्यान से ही संभव है।

मन की साधना ही हमें समाधि अथवा शान्ति प्रदान करेगी। समाधि में जब विचारों का आवागमन विषयवस्तु के अनुसार चल रहा है तो यह सविचार समाधि कहलाती है और जब समाधि एक ऊंचे स्तर पर चली जाती है जहाँ मन निर्विचार हो जाता है तो वह निर्विचार समाधि कहलाती है। जब इस समाधि में किसी भी वस्तु की चाहना नहीं रहती और जीवन निर्मोह हो जाता है तो समाधि निर्विकल्प हो जाती है और यह श्रेष्ठ व उच्चतम समाधि कहलाती है।

आत्म-रमण

उपर्युक्त चार बातों के पूरा होते ही पांचवी बात स्वतः फलित हो जाती है। जब तक हम बाहर घूम रहे हैं, भौतिक वस्तुओं में मोहित हैं, आत्मरमण की संकल्पना भी मन में नहीं होती। जब भौतिक वस्तुओं से मोह हटता है, विराग उत्पन्न होता है तब ही व्यक्ति अध्यात्म की ओर मुड़ता है। मोह छोड़ने की बात का मतलब केवल भौतिक रूप से त्याग करना नहीं है; उन वस्तुओं के प्रति मन से विरक्ति होना आवश्यक है। वस्तु को त्याग कर भी मन विरक्त नहीं होता और जो वास्तव में विरक्त होते हैं वे वस्तु को धारण कर भी पूर्णतः विरक्त होते हैं। असली अध्यात्म मन में विरक्ति का है। वस्तुओं के उपभोग की गुलामी से व आधिपत्य के लालच से मुक्ति ही भौतिक वस्तुओं से वास्तविक विरक्ति है। जब वस्तुओं को रखने का लालच समाप्त हो जाता है तो उनका उपयोग जनसेवा और लोकमंगल में होने लगता है। देने का आनंद भी अनुपम है।

अध्यात्म के क्षेत्र में रमण करने पर मन स्वतन्त्र और मुक्त हो जाता है। यही जीवित मुक्ति है और यह आनंद अद्वितीय है। मन जब मुक्त हो जाता है तो व्योम का असीमित क्षेत्र भी उड़ने के लिए कम पड़ जाता है। आनंद मुक्ति में है और मुक्ति

विरक्ति में है।

सारांश

आहार, विचार, विहार और श्वास पर ध्यान देने से जीवन आध्यात्मिक हो जाता है और जीवन में आनन्द, प्रेम और अनुकम्पा का आविर्भाव होता है, यही सच्चा व मुक्त जीवन है। प्राणिमात्र के लिए अनुकम्पा, सबके लिए प्रेमभाव हमारे जीवन को आनंदमय बना देता है। इसी में सब का कल्याण है।

-सी 1703, लेक कॉसल, हीरानन्दानी गार्डन, पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

73 वां जन्म-दिवस

मेरे गुरुवर हीरा गणिवर

(तर्ज:- मेरा जीवन कोरा कागज..... ।)

श्री धर्मचन्द जैन

मेरे गुरुवर हीरा गणिवर, ज्ञानी संयमवान।
कट जायेंगे, कट जायेंगे, कर्म तेरे, करले तूं उनका ध्यान।।
मेरे गुरुवर.....।
माता मोहिनी जी के नन्दन, मोती जी के बाल.....2
गांधी कुल उज्ज्वल सितारे, चमके है जिनका भाल....2
हस्ती गुरु सेऽऽऽ हस्ती गुरु से दीक्षा लेकर हो गये हैं निहाल।।2।।
आगम मनीषी, संयम सुमेरू, व्रतों के प्रेरक आप....2,
व्यसन और फैशन निवारे, धर्मी बनाते आप....2,
तिहत्तरवाँ ऽऽऽ, तिहत्तरवाँ जन्म दिवस हम, मनायें तप के साथ।
मेरे गुरुवर.....।
रत्नसंघ आचार्य बने हैं, अनुशासन के ताज...2,
चहुँ दिशि में शासन की पताका, लहरा रहे हैं आज.....2,
हस्ती पट्टधर ऽऽऽ, हस्ती पट्टधर, मुक्ति के राही,
कोटिशःतुमको प्रणाम।। 3।।
मेरे गुरुवर.....।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

शोधालेख

जैन दार्शनिकों का अन्य दर्शनों को त्रिविध अवदान (2)

प्रो. सागरमल जैन

2.अनेकान्त दृष्टि से विभिन्न दर्शनों के मध्य समन्वय के सूत्रों की खोज–

जैन दार्शनिकों का दूसरा महत्त्वपूर्ण अवदान उनकी अनेकान्त आधारित समन्वयात्मक दृष्टि है। जहाँ एक ओर जैन दार्शनिकों ने अन्य दर्शनों के एकान्तवादिता के दोष का निराकरण करना चाहा, वहीं दूसरी ओर भारतीय दर्शनों के परस्पर विरोधी सिद्धान्तों में समन्वय करना चाहा और अन्य दर्शनों में निहित सापेक्षिक सत्यता को देखकर उसे स्वीकार करने का प्रयत्न भी किया और इस प्रकार उन्होंने विविध दर्शनों में समन्वय के सूत्र भी प्रस्तुत किये हैं। हरिभद्र ने अन्य दर्शनों के अध्ययन के पश्चात् उनमें निहित सारतत्त्व या सत्य को समझने का जो प्रयास किया है, वह भी अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है और उनके उदारचेता व्यक्तित्व को उजागर करता है। यद्यपि हरिभद्र चार्वाक दर्शन की समीक्षा करते हुए उसके भूत स्वभाववाद का खण्डन करते हैं और उसके स्थान पर कर्मवाद की स्थापना करते हैं। किन्तु सिद्धान्त में कर्म के जो दो रूप- द्रव्यकर्म और भावकर्म माने गये हैं उनमें एक ओर भावकर्म के स्थान को स्वीकार नहीं करने के कारण जहाँ वे चार्वाक-दर्शन की समीक्षा करते हैं वहीं दूसरी ओर वे द्रव्यकर्म की अवधारणा को स्वीकार करते हुए चार्वाक के भूतस्वभाववाद की सार्थकता को भी स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि भौतिक तत्त्वों का प्रभाव भी चैतन्य पर पड़ता है। पं. सुखलाल जी संघवी लिखते हैं कि हरिभद्र ने दोनों पक्षों अर्थात् बौद्ध एवं मीमांसकों के अनुसार कर्मवाद के प्रसंग में चित्तवासना की प्रमुखता को तथा चार्वाकों के अनुसार भौतिक तत्त्व की प्रमुखता को एक-एक पक्ष के रूप में परस्पर पूरक एवं सत्य मानकर कहा कि जैन कर्मवाद में चार्वाक और मीमांसक तथा बौद्धों के मन्तव्यों का सुमेल हुआ है।

इसी प्रकार शास्त्रवार्तासमुच्चय में हरिभद्र यद्यपि न्याय-वैशेषिक दर्शनों द्वारा मान्य ईश्वरवाद एवं जगत् कर्तृत्ववाद की अवधारणाओं की समीक्षा करते हैं, किन्तु जहाँ चार्वाकों, बौद्धों और अन्य जैन आचार्यों ने इन अवधारणाओं का खण्डन ही किया है, वहाँ हरिभद्र इनकी भी सार्थकता को स्वीकार करते हैं। हरिभद्र ने ईश्वरवाद की अवधारणा में भी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों को देखने का प्रयास किया है। प्रथम तो यह कि मनुष्य में कष्ट के समय स्वाभाविक रूप से किसी ऐसी शक्ति के प्रति श्रद्धा और प्रपत्ति की भावना होती है, जिसके द्वारा वह अपने में आत्मविश्वास जागृत कर सके। पं. सुखलाल संघवी लिखते हैं मानव मन की प्रवृत्ति या शरणागति की यह भावना मूल में असत्य तो नहीं कही जा सकती। उनकी इस अपेक्षा को ठेस न पहुँचे तथा तर्क व बुद्धिवाद के साथ ईश्वरवादी अवधारणा का समन्वय भी हो, इसलिए उन्होंने (हरिभद्र ने) ईश्वर-कर्तृत्ववाद की अवधारणा को अपने ढंग से स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। हरिभद्र कहते हैं कि जो व्यक्ति आध्यात्मिक निर्मलता के फलस्वरूप अपने विकास की उच्चतम भूमिका को प्राप्त हुआ हो, वह असाधारण आत्मा है और वही ईश्वर या सिद्ध पुरुष है। उस आदर्श स्वरूप को प्राप्त करने के कारण वह कर्ता तथा भक्ति का विषय होने के कारण उपास्य है। इसके साथ ही हरिभद्र यह भी मानते हैं कि प्रत्येक जीव तत्त्वतः अपने शुद्ध रूप में परमात्मा और अपने भविष्य का निर्माता है और इस दृष्टि से यदि विचार करें तो वह ईश्वर भी है और कर्ता भी है। इस प्रकार ईश्वर कर्तृत्ववाद भी समीचीन ही सिद्ध होता है। हरिभद्र सांख्यों के प्रकृतिवाद की भी समीक्षा करते हैं, किन्तु वे प्रकृति को जैन परम्परा में स्वीकृत कर्म प्रकृति के रूप में देखते हैं। वे लिखते हैं कि सत्य-न्याय की दृष्टि से प्रकृति कर्म-प्रकृति ही है और इस रूप में प्रकृतिवाद भी उचित है, क्योंकि उसके वक्ता कपिल दिव्य-पुरुष और महामुनि हैं।

शास्त्रवार्तासमुच्चय में हरिभद्र ने बौद्धों के क्षणिकवाद, विज्ञानवाद और शून्यवाद की भी समीक्षा की है, किन्तु वे इन धारणाओं में निहित सत्य को भी देखने का प्रयत्न करते हैं और कहते हैं कि महामुनि और अर्हत् बुद्ध उद्देश्यहीन होकर किसी सिद्धान्त का उपदेश नहीं करते। उन्होंने क्षणिकवाद का उपदेश पदार्थ के प्रति हमारी आसक्ति के निवारण के लिए ही दिया है,

क्योंकि जब वस्तु का अनित्य और विनाशशील स्वरूप समझ में आ जाता है तो उसके प्रति आसक्ति गहरी नहीं होती। इसी प्रकार विज्ञानवाद का उपदेश भी बाह्य पदार्थों के प्रति तृष्णा को समाप्त करने के लिए ही है। यदि सब कुछ चित्त के विकल्प हैं और बाह्य रूप सत्य नहीं है तो उनके प्रति तृष्णा उत्पन्न ही नहीं होगी। इसी प्रकार कुछ साधकों की मनोभूमिका को ध्यान में रखकर संसार की निःसारता का बोध कराने के लिए शून्यवाद का उपदेश दिया है। इस प्रकार हरिभद्र की दृष्टि में बौद्ध दर्शन के क्षणिकवाद, विज्ञानवाद और शून्यवाद- इन तीनों सिद्धान्तों का मूल उद्देश्य यही है कि व्यक्ति की जगत् के प्रति उत्पन्न होने वाली तृष्णा का प्रहाण हो।

अद्वैतवाद की समीक्षा करते हुए हरिभद्र स्पष्ट रूप से यह बताते हैं कि सामान्य की दृष्टि से तो अद्वैत की अवधारणा भी सत्य है। इसके साथ ही साथ वे यह भी बताते हैं कि विषमता के निवारण के लिए और समभाव की स्थापना के लिए अद्वैत की भूमिका भी आवश्यक है। अद्वैत परायेपन की भावना का निषेध करता है, इस प्रकार द्वेष का उपशमन करता है अतः वह भी असत्य नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार अद्वैत वेदान्त के ज्ञान मार्ग को भी वे समीचीन ही स्वीकार करते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्य दार्शनिक अवधारणाओं की समीक्षा का उनका प्रयत्न समीक्षा के लिए न होकर उन दार्शनिक परम्पराओं की सत्यता के मूल्याकंन के लिए ही है। स्वयं उन्होंने शास्त्रवार्तासमुच्चय के प्राक्कथन में स्पष्ट किया है कि प्रस्तुत ग्रन्थ का उद्देश्य अन्य परम्पराओं के प्रति द्वेष का उपशमन करना और सत्य का बोध कराना है।

3. दर्शनसंग्राहक ग्रन्थों की निष्पक्ष दृष्टि से रचना-

यदि हम भारतीय दर्शन के समग्र इतिहास में सभी प्रमुख दर्शनों के सिद्धान्तों को एक ही ग्रन्थ में पूरी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करने के क्षेत्र में हुए प्रयत्नों को देखते हैं, तो हमारी दृष्टि में हरिभ्रद ही वे प्रथम व्यक्ति हैं, जिन्होंने सभी प्रमुख भारतीय दर्शनों की मान्यताओं को निष्पक्ष रूप से एक ही ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय की कोटि का और

उससे प्राचीन दर्शनसंग्राहक कोई अन्य ग्रन्थ हमें प्राचीन भारतीय साहित्य में उपलब्ध नहीं होता।

हरिभद्र के पूर्व तक जैन, बौद्ध और वैदिक तीनों ही परम्पराओं के किसी भी आचार्य ने अपने काल के सभी दर्शनों का निष्पक्ष परिचय देने की दृष्टि से किसी भी ग्रन्थ की रचना नहीं की थी। उनके ग्रन्थों में अपने विरोधी मतों का प्रस्तुतीकरण मात्र उनके खण्डन की दृष्टि से ही हुआ है। जैन परम्परा में भी हरिभद्र के पूर्व सिद्धसेन दिवाकर और समन्तभद्र ने अन्य दर्शनों के विवरण तो प्रस्तुत किये हैं, किन्तु उनकी दृष्टि भी खण्डनपरक ही है। विविध दर्शनों का विवरण प्रस्तुत करने की दृष्टि से मल्लवादी का नयचक्र महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कहा जा सकता है, किन्तु उसका मुख्य उद्देश्य भी प्रत्येक दर्शन की अपूर्णता को सूचित करते हुए अनेकान्तवाद की स्थापना करना है। पं. दलसुखभाई मालवणिया के शब्दों में (नय) चक्र की कल्पना के पीछे आचार्य का आशय यह है कि कोई भी मत अपने आप में पूर्ण नहीं है। जिस प्रकार उस मत की स्थापना दलीलों से हो सकती है उसी प्रकार उसका उत्थापन भी विरोधी मतों की दलीलों से हो सकता है। स्थापना और उत्थापन का यह चक्र चलता रहता है। अतएव अनेकान्तवाद में ये मत अपना उचित स्थान प्राप्त करें, तभी उचित है, अन्यथा नहीं। नयचक्र की मूलदृष्टि भी स्वपक्ष अर्थात् अनेकान्तवाद के मण्डन और परपक्ष के खण्डन की ही है। इस प्रकार जैन परम्परा में भी हरिभद्र के पूर्व तक निष्पक्ष भाव से कोई भी दर्शन-संग्राहक ग्रन्थ नहीं लिखा गया।

जैनेतर परम्पराओं के दर्शनसंग्राहक ग्रन्थों में आचार्य शंकर विरचित माने जाने वाले 'सर्वसिद्धान्तसंग्रह' का उल्लेख किया जा सकता है। यद्यपि यह कृति माधवाचार्य के सर्वदर्शनसंग्रह की अपेक्षा प्राचीन है, फिर भी इसके आद्य शंकराचार्य द्वारा विरचित होने में संदेह है। इस ग्रन्थ में पूर्वदर्शन का उत्तरदर्शन के द्वारा निराकरण करते हुए अन्त में अद्वैत वेदान्त की स्थापना की गयी है। अतः किसी सीमा तक इसकी शैली को भी नयचक्र की शैली के साथ जोड़ा जा सकता है, किन्तु जहाँ नयचक्र, अन्तिम मत का भी प्रथम मत से खण्डन करवाकर किसी भी एक दर्शन को अन्तिम सत्य नहीं मानता है, वहाँ 'सर्वसिद्धान्तसंग्रह' वेदान्त को एकमात्र और अन्तिम सत्य स्वीकार

करता है। अतः यह एक दर्शन संग्राहक ग्रन्थ होकर भी निष्पक्ष दृष्टि का प्रतिपादक नहीं माना जा सकता है। हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय की जो विशेषता है, वह इसमें नहीं है।

जैनेतर परम्पराओं में दर्शन-संग्राहक ग्रन्थों में दूसरा स्थान माधवाचार्य (ई 1350?) के 'सर्वदर्शनसंग्रह' का आता है। किन्तु 'सर्वदर्शनसंग्रह' की मूलभूत दृष्टि भी यही है कि वेदान्त ही एकमात्र सम्यग्दर्शन है। सर्वसिद्धान्तसंग्रह और सर्वदर्शनसंग्रह दोनों की हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय से इस अर्थ में भिन्नता है कि जहाँ हरिभद्र बिना किसी खण्डन-मण्डन के निरपेक्ष भाव से तत्कालीन विविध दर्शनों को प्रस्तुत करते हैं, वहाँ वैदिक परम्परा के इन दोनों ग्रन्थों की मूलभूत शैली खण्डनपरक ही है। अतः इन दोनों ग्रन्थों में अन्य दार्शनिक मतों के प्रस्तुतीकरण में वह निष्पक्षता और उदारता परिलक्षित नहीं होती है, जो हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय में है।

वैदिक परम्परा में दर्शन-संग्राहक ग्रन्थों में तीसरा स्थान माधव सरस्वतीकृत 'सर्वदर्शनकौमुदी' का आता है। इस ग्रन्थ में दर्शनों को वैदिक और अवैदिक- ऐसे दो भागों में बांटा गया है। अवैदिक दर्शनों में चार्वाक, बौद्ध और जैन ऐसे तीन भेद तथा वैदिक दर्शन में तर्क, तन्त्र और सांख्य ऐसे तीन भाग किये गये हैं। इस ग्रन्थ की शैली भी मुख्यरूप से खण्डनात्मक ही है। अतः हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय जैसी उदारता और निष्पक्षता इसमें भी परिलक्षित नहीं होती है।

वैदिक परम्परा के दर्शनसग्रांहक ग्रन्थों में चौथा स्थान मधुसूदन सरस्वती के 'प्रस्थान-भेद' का आता है। मधुसूदन सरस्वती ने दर्शनों का वर्गीकरण आस्तिक और नास्तिक के रूप में किया है। नास्तिक-अवैदिक दर्शनों में वे छह प्रस्थानों का उल्लेख करते हैं। इनमें बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदायों तथा चार्वाक और जैनों का समावेश हुआ है। आस्तिक-वैदिक दर्शनों में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा का समावेश हुआ है। इन्होंने पाशुपत दर्शन एवं वैष्णव दर्शन का भी उल्लेख किया है। पं. दलसुखभाई मालवणिया के अनुसार प्रस्थानभेद के लेखक की एक विशेषता अवश्य है जो उसे पूर्व उल्लिखित वैदिक परम्परा के अन्य दर्शन संग्राहक ग्रन्थों से अलग करती है। वह यह कि इस ग्रन्थ में वैदिक दर्शनों के

पारस्परिक विरोध का समाधान यह कह कर किया गया है कि इन प्रस्थानों के प्रस्तोता सभी मुनि भ्रान्त तो नहीं हो सकते, क्योंकि वे सर्वज्ञ थे। चूँकि बाह्य विषयों में लगे हुए मनुष्यों का परम पुरुषार्थ में प्रविष्ट होना कठिन होता है, अतएव नास्तिकों का निराकरण करने के लिए इन मुनियों ने दर्शन-प्रस्थानों के भेद किये हैं। इस प्रकार प्रस्थान भेद में यत्किंचित् उदारता का परिचय प्राप्त होता है। किन्तु यह उदारता केवल वैदिक परम्परा के आस्तिक दर्शनों के सन्दर्भ में ही है, नास्तिकों का निराकरण करना तो सर्वदर्शन कौमुदीकार को भी इष्ट ही है। इस प्रकार दर्शन संग्राहक ग्रन्थों में हरिभद्र की जो निष्पक्ष और उदार दृष्टि है वह हमें अन्य परम्पराओं में रचित दर्शन-संग्राहक ग्रन्थों में नहीं मिलती है। यद्यपि वर्तमान में भारतीय दार्शनिक परम्पराओं का विवरण प्रस्तुत करने वाले अनेक ग्रन्थ लिखे जा रहे हैं, किन्तु उनमें भी लेखक कहीं न कहीं अपने इष्ट दर्शन और विशेषरूप से वेदान्त को ही अन्तिम सत्य के रूप में प्रस्तुत करते हुए प्रतीत होते हैं।

हरिभद्र के पश्चात् जैन परम्परा में लिखे गये दर्शन संग्राहक ग्रन्थों में अज्ञातकृत 'सर्वसिद्धान्तप्रवेशक' का स्थान आता है। किन्तु इतना निश्चित है कि यह ग्रन्थ किसी जैन आचार्य द्वारा प्रणीत है, क्योंकि इसके मंगलाचरण में- ''सर्वभाव प्रणेतारं प्रणिपत्य जिनेश्वरं'' ऐसा उल्लेख है। पं. सुखलाल संघवी के अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ की प्रतिपादन शैली हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय का ही अनुसरण करती है। अन्तर मात्र यह है कि जहाँ हरिभद्र का ग्रन्थ पद्य में है वहाँ सर्वसिद्धान्तप्रवेशक गद्य में है। साथ ही यह ग्रन्थ हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय की अपेक्षा कुछ विस्तृत भी है।

जैन परम्परा के दर्शन संग्राहक ग्रन्थों में दूसरा स्थान जीवदेवसूरि के शिष्य आचार्य जिनदत्तसूरि (विक्रम संवत् 1265) के 'विवेकविलास' का आता है। इस ग्रन्थ के अष्टम उल्लास में 'षड्दर्शनविचार' नामक प्रकरण है, जिसमें जैन, मीमांसक, बौद्ध, सांख्य, शैव और नास्तिक इन छह दर्शनों का संक्षेप में वर्णन किया गया है। पं. दलसुखभाई मालवणिया के अनुसार इस ग्रन्थ की एक विशेषता तो यह है कि इसमें न्याय-वैशेषिकों का समावेश शैवदर्शन में किया गया है। मेरी दृष्टि में इसका कारण लेखक के द्वारा हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय का अनुसरण करना ही है, क्योंकि उसमें भी

न्यायदर्शन के देवता के रूप में शिव का ही उल्लेख किया गया है-

'अक्षपादमते देवः सृष्टिसंहारकृच्छिवः'-13

यह ग्रन्थ भी हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय के समान केवल परिचयात्मक और निष्पक्ष विवरण प्रस्तुत करता है और आकार में मात्र 66 श्लोक प्रमाण है।

जैन परम्परा में दर्शन संग्राहक ग्रन्थों में तीसरा क्रम राजशेखर (विक्रम संवत् 1405) के षड्दर्शनसमुच्चय का आता है। इस ग्रन्थ में जैन, सांख्य, जैमिनीय, योग, वैशेषिक और सौगत (बौद्ध) इन छह दर्शनों का भी उल्लेख किया गया है। हरिभद्र के समान ही इस ग्रन्थ में भी इन सभी को आस्तिक कहा गया है और अन्त में नास्तिक के रूप में चार्वाक दर्शन का परिचय दिया गया है। हरिभद्र के षड्दर्शनसमुच्चय और राजशेखर के षड्दर्शनसमुच्चय में एक मुख्य अन्तर इस बात को लेकर है कि दर्शनों के प्रस्तुतीकरण में जहाँ हरिभद्र जैनदर्शन को चौथा स्थान देते हैं, वहाँ राजशेखर जैनदर्शन को प्रथम स्थान देते हैं। प. सुखलाल संघवी के अनुसार सम्भवतः इसका कारण यह हो सकता है कि राजशेखर अपने समकालीन दार्शनिकों के अभिनिवेशयुक्त प्रभाव से अपने को दूर नहीं रख सके।

प. दलसुखभाई मालवणिया की सूचना के अनुसार राजशेखर के काल का ही एक अन्य दर्शनसंग्राहक ग्रन्थ आचार्य मेरुतुंगकृत षड्दर्शननिर्णय है। इस ग्रन्थ में मेरुतुंग ने बौद्ध, जैन, मीमांसा, सांख्य, नैयायिक, वैशेषिक इन छह दर्शनों की मीमांसा की है, किन्तु इस कृति में हरिभद्र जैसी उदारता नहीं है। यह मुख्यतया जैनमत की स्थापना और अन्य मतों के खण्डन के लिए लिखा गया है। एक मात्र इसकी विशेषता यह है कि इसमें महाभारत, स्मृति, पुराण आदि के आधार पर जैनमत का समर्थन किया गया है।

पं. दलसुखभाई मालवणिया ने षड्दर्शनसमुच्चय की प्रस्तावना में इस बात का भी उल्लेख किया है कि सोमतिलकसूरिकृत षड्दर्शनसमुच्चय की वृत्ति के अन्त में अज्ञातकर्तृक एक कृति मुद्रित है। इसमें भी जैन, नैयायिक, बौद्ध, वैशेषिक, जैमिनीय, सांख्य और चार्वाक ऐसे सात दर्शनों का संक्षेप में परिचय दिया गया है, किन्तु अन्त में अन्य दर्शनों को दुर्नय की कोटि में रखकर जैनदर्शन को उच्च श्रेणी में रखा गया है। इस प्रकार इसका लेखक भी

अपने को साम्प्रदायिक अभिनिवेश से दूर नहीं रख सका।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दर्शनसंग्राहक ग्रन्थों की रचना में भारतीय इतिहास में हरिभद्र ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने निष्पक्ष भाव से और पूरी प्रामाणिकता के साथ अपने ग्रन्थ में अन्य दर्शनों का विवरण दिया है। इस क्षेत्र में वे अभी तक अद्वितीय हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन दार्शनिकों ने भारतीय दर्शन के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण अवदान प्रस्तुत किया है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

मुसाफिर जागते रहना

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

मुसाफिर जागते रहना, यह जीवन दो घड़ी का है,
मिलेगा फिर से यह जीवन, नहीं कोई ठिकाना है।
मिला नरतन का है चोला, हमारी खुशनसीबी है,
धर्म आराधना करलो, अगर भव पार होना है।
मुसाफिर जागते रहना..... ।। 1 ।।

कहे जिनवाणी है हमको, जगालो आत्मा अपनी,
मिले भव से छुटकारा, करेंगे हम जो शुभ करनी।
कर्मों को काट लेने का, बड़ा सुन्दर यह मौका है,
मुसाफिर जागते रहना..... ।। 2 ।।

किया प्रमाद गर हमने, यह जीवन हार जाएँगे,
मिलेगी वेदना हमको, नरक, निगोद पाएँगे।
तड़फ कर ज़िदगी में फिर, नहीं बेचैन होना है,
मुसाफिर जागते रहना..... ।। 3 ।।

सुमरलो नाम प्रभुवर का, खिलेगी जीवन फुलवारी,
अशुभ कर्मों को बांधो मत, बनेगी आत्मा भारी।
जगा कर अपने चिंतन को, धर्म में मन लगाना है,
मुसाफिर जागते रहना..... ।। 4 ।।

- जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

प्रासंगिक

महावीर का वीतराग दर्शन

डॉ. चंचलमल चोरडिया

महावीर का दर्शन पूर्णतः वैज्ञानिक

इस संसार में समय-समय पर अनेक महापुरुष हो चुके हैं जिन्होंने पीड़ित मानव को सन्मार्ग पर लगाने का प्रयास किया। प्रायः सभी धर्म-प्रर्वतक अपनी-अपनी विशिष्टताओं से अलंकृत रहे। उन्होंने देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप अपनी-अपनी प्रज्ञा के अनुसार तत्कालीन समस्याओं के समाधान में सहयोग दिया। मानव को उसके परम लक्ष्य एवं कर्तव्यों का बोध कराया। नर से नारायण और आत्मा से परमात्मा बनने की कला सिखलाई। उनमें आस्था रखने वाले विभिन्न धर्मावलम्बी अनुयायी आज भी उसका आचरण करने का प्रयास करते हैं। प्रायः सभी व्यक्ति अपने-अपने धर्म अथवा आचरण को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। परन्तु धर्म क्या है? उसका आचरण क्यों और कैसे किया जाना चाहिये? धर्म तो सदैव कल्याणकारी होता है। अपरिवर्तनीय होता है। उसमें वैमनस्य, विरोध और विभेद को कोई स्थान नहीं। धर्म अलग है और साम्प्रदायिकता अलग है। धर्म तो प्राणिमात्र को जन्म, जरा एवं मृत्यु रूपी चक्रव्यूह से मुक्त करता है। धर्म की प्रामाणिकता उसके मानने वाले अनुयायियों की संख्या के आधार पर नहीं, अपितु उसके सिद्धान्तों की सूक्ष्मता पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से जितना स्पष्ट, तर्क संगत, वैज्ञानिक एवं सूक्ष्म विश्लेषण भगवान महावीर ने किया, अन्यत्र दुर्लभ है।

महावीर : जैन धर्म के प्रवर्तक नहीं

जैन परम्परा में तीर्थङ्करों का स्थान सर्वोपरि है। वे साक्षात् ज्ञाता, द्रष्टा, वीतरागी होते हैं। भगवान महावीर से पूर्व भी इस अवसर्पिणी काल में तेईस तीर्थङ्कर हो चुके हैं, जिन्होंने धर्म के शाश्वत स्वरूप का बोध कराया। महावीर ने किसी नये धर्म का प्रतिपादन नहीं किया, परन्तु उसी सनातन सत्य का साक्षात्कार कर प्राणिमात्र के कल्याण हेतु उपदेश दिया। सभी सर्वज्ञों के उपदेश एवं सिद्धान्त समान होते हैं, क्योंकि सत्य सनातन होता है। आवश्यकता है उसके सही स्वरूप को समझने एवं अपनाने की। धर्म आचरण की वस्तु है, थोपने की नहीं। इसी कारण

जैनियों के महामंत्र नमस्कार, मंगलपाठ एवं अनुष्ठानों की साधना में गुणों को ही महत्त्व दिया गया। किसी महापुरुष की नाम से पूजा अथवा गुणगान नहीं किया गया है। अतः यह मानना गलत होगा कि वर्तमान में जैन धर्म के नाम से प्रचलित धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर थे।

महावीर मात्र नाम नहीं

महावीर मात्र नाम नहीं है, उसका सम्बन्ध कर्म से है, कथन मात्र से नहीं। जो वे करना चाहते थे उसका पहले स्वयं उन्होंने अनुभव किया। शारीरिक बल से मानसिक बल ज्यादा शक्तिशाली होता है और आत्मबल के सामने सारे बल तुच्छ हैं। युद्ध में हजारों योद्धाओं को जीतने की अपेक्षा अपने आपको जीतना, स्वयं को संयमित, नियमित, नियन्त्रित, अनुशासित रखना ज्यादा दुष्कर है। आत्मा पर आये कर्मों का आवरण हटते ही व्यक्ति सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान एवं त्रिकाल ज्ञाता-द्रष्टा बन जाता है। सम्पूर्ण आत्मानुभूति की अवस्था में विज्ञान की भौतिक जानकारी तो होती ही है, परन्तु उससे भी कहीं अधिक ब्रह्माण्ड के वर्तमान, भूत एवं भविष्य की सूक्ष्मतर एवं सम्पूर्ण जानकारी हो जाती है। वास्तव में वे जीवन के सर्वोच्च कलाकार, पथ प्रदर्शक एवं सर्वोच्च वैज्ञानिक होते हैं। उनका उपदेश भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति के लिये न होकर जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति हेतु होता है।

महावीर को समझने के लिये हमें पहले अपने सभी पूर्वाग्रहों को छोड़ना होगा। उनका प्रत्येक आचरण एवं उपदेश सनातन सत्य पर आधारित है, जिसको समझने के लिये आवश्यक है व्यापक दृष्टिकोण। उनके उपदेश विषम परिस्थितियों एवं काल के थपेड़ों के बावजूद आज भी अक्षुण्ण बने हुए हैं। आध्यात्मिक साधना में उनका दृष्टिकोण सम्पूर्णता की खोज पर आधारित था। अनुशासनहीनता के बीच उनका जोर आत्मानुशासन पर था। उन्होंने आत्म-विकास के लिये ज्ञान एवं क्रिया के समन्वित प्रयास को आवश्यक बतलाया। वे उस ढ़ोंगवाद को नहीं मानते, जो भोगी होते हुए भी अपने आपको परम योगी मानते हैं। भोगी निर्विकारी कैसे हो सकता है? जो मन में होगा वही तो आचरण में प्रदर्शित होगा। उन्होंने भाव क्रिया के महत्त्व को भी उजागर किया। मात्र जड़ क्रिया-काण्डों से व्यक्ति का उत्थान नहीं हो सकता। उन्होंने यतना अर्थात् विवेक में ही धर्म माना। यदि हमारा प्रत्येक कार्य विवेक एवं प्रज्ञानुसार हो तो नवीन कर्मों के बन्ध की सम्भावनाएं कम हो जाती हैं।

उनके अनुसार प्रमाद विकास में सर्वाधिक बाधक है। प्रमाद अर्थात् सुषुप्त अथवा असावधान। अज्ञानी ही प्रमादी होता है। जो स्वयं असजग है, अपने प्रति ईमानदार नहीं, वह दूसरों को कैसे जगा देगा। अतः भगवान महावीर ने स्वयं साढ़े बारह वर्ष तक उग्र साधना कर पूर्णता प्राप्त की। जब तक सर्वज्ञ न बने, पूर्ण मौन रहे। परन्तु जागृत होने के पश्चात् संसार को सही मार्ग का उपदेश देने में कंजूसी नहीं की। जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति की जितनी सूक्ष्मतम, तर्कसंगत व्याख्या और विवेचन महावीर ने श्रमणाचार की नियमावली में किया उसकी अन्यत्र कल्पना भी नहीं की जा संकती। आज भी बढ़ती मायावृत्ति एवं शिथिलाचार के बावजूद महावीर की परम्परा के श्रमण और श्रमणी वर्ग, जिस सूक्ष्म अहिंसा का पालनकर अपनी जीवनचर्या चलाते हैं, वैसी कठोर आचार संहिता अन्यत्र ढूँढ़ना कठिन है। वास्तव में महावीर का उपदेश प्राणिमात्र के लिये उपयोगी है। वहाँ भेदभाव और आशंकाओं की कोई गुंजाइश नहीं। न तो किसी के साथ भेदभाव, न अपने भक्तों के लिये विशेष रियायत। उनके विराट् व्यक्तित्व को चन्द प्रसंगों के आधार पर परखा जा सकता है।

प्रतिकूलता : आत्मबल की कसौटी

महावीर ने साधना हेतु राजपाट छोड़ा। पद, पैसे और परिवार का त्याग किया। अगर वे चाहते तो अपने राज्य में भी एकान्त साधना कर सकते थे। परन्तु उन्होंने साधना के लिये प्रतिकूल क्षेत्र चुना जहाँ उनका कोई परिचित नहीं था। वे जानते थे कि आत्मबल की परीक्षा प्रतिकूलता में ही हो सकती है। परन्तु आज हम प्रतिकूलताओं को पसन्द नहीं करते। उन्होंने पद, पैसा और परिवार का मोह त्यागा। परन्तु आज प्रायः हम पद, पैसे और परिवार के पीछे दिवाने बन अपने आपको उनके अनुयायी समझने का अहम् करें तो यह, कितना अप्रासंगिक है। इस पर सारे पूर्वाग्रह छोड़ शुद्ध चिन्तन अपेक्षित है।

स्वावलम्बन के उद्घोषक

महावीर आत्म-साधना में स्वावलम्बन के पक्षधर थे। मनुष्य को अपने कर्मों का क्षय अपने ही पुरुषार्थ से करना होता है। अतः वे साधना पथ पर अकेले ही आगे बढ़े। जब देवों के सम्राट् शक्रेन्द्र उनकी सेवा में उपस्थित हो प्रार्थना करने लगे ''भगवन् आपको साधना काल में भयंकर उपसर्ग (कष्ट) आने की संभावना है,

अतः मैं आपकी सेवा में रहकर उससे रक्षा करना चाहता हूँ।'' उसके प्रत्युत्तर में भगवान महावीर ने कहा– ''आज तक कोई भी प्राणी दूसरों की सहायता से अपने समस्त कर्मों से मुक्त नहीं हुआ। किये हुए कर्मों का भुगतान तो स्वयं को ही करना पड़ता है।'' इस प्रकार उन्होंने प्राणिमात्र में स्वावलम्बी बन अपनी सुषुप्त चेतना को जागृत करने का आत्मविश्वास उत्पन्न किया। स्वावलम्बन की पहली शर्त है स्वाधीनता। पराधीनता दुःख का कारण है, जो दासता में जकड़ती है। स्वाधीनता में ही सुख है। वही अपनी शक्तियों के विकास का केन्द्र बिन्दु है। स्वाधीनता से ही अपनी अनन्त शक्तियों का द्वार खुलता है। जिससे सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र प्रकट होता है। महावीर कठोर, परन्तु हृदयग्राही आत्मानुशासन के प्रवर्तक थे। साधक यदि कठोर मार्ग पर न चले तो उसके फिसलने की संभावना सदैव बनी रहती है। अतः वे स्वयं कठोर चर्या में रहे तथा अपने शिष्य समुदाय के लिये भी उन्होंने कठोर श्रमणाचार का निर्देशन किया। उन्होंने भक्त और भगवान के बीच की खाई को समाप्त करने का उपदेश दिया। वे भक्त को सदैव भक्त ही रखने के पक्षधर नहीं थे। अवतारवाद की मान्यता उन्हें स्वीकार नहीं थी। उन्होंने प्राणिमात्र के अन्दर उस परम परमात्म पद को पहिचाना। इसी कारण उनके सम्पर्क में आकर सम्यक् साधना में पुरुषार्थ करने वाले अनेक साधक उनके समकक्ष सर्वज्ञ बन गये।

अनन्त करुणामय व्यक्तित्व

दुनियाँ में मातृत्व के कारण अपने बच्चे के प्रति अपार अनुराग होने से माता के स्तनों में दूध आने लगता है। महावीर के जीवन के अलावा संसार में आज तक ऐसा दृष्टान्त उपलब्ध नहीं कि चण्डकौशिक जैसा भयंकर दृष्टि विषधारी सर्प काटे और रक्त के स्थान पर दूध की धारा बहे। ऐसे महापुरुष में प्राणिमात्र के प्रति दया, करुणा, अनुकम्पा और कल्याण की कितनी भावना होगी, इसकी सहज कल्पना भी नहीं की जा सकती।

नारी उत्थान

भगवान महावीर के युग में भारतीय नारी की बहुत दुर्दशा थी। नारी उत्पीड़न की तरफ जनसाधारण का ध्यान आकर्षित करने हेतु अपने साधना–काल में उन्होंने तेरह बोलों का कठोर अभिग्रह (संकल्प) लिया। जिसके अनुसार उन्होंने निश्चय किया कि कोई तीन दिन की भूखी, रोती हुई राजकुमारी, हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़िया पहिने, सिर से मुण्डित, अबला उन्हें भिक्षा देगी तो वे भिक्षा

ग्रहण करेंगे। कैसी उपेक्षित थी नारी उस युग में? सहज ही कल्पना की जा सकती है।

ऐसे समय में नारी को अपने धर्म-संघ में दीक्षित कर श्रमणी बनाना तथा अपने धर्म तीर्थ में साधु और श्रावक के समकक्ष क्रमशः साध्वी तथा श्राविका के रूप में स्थान देना उस युग का कितना क्रान्तिकारी कदम था।

जातिवाद का प्रतिकार

भगवान महावीर की स्पष्ट घोषणा थी कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान् बनता है। हरिकेशबल जैसे नीच कुल में जन्मे क्षुद्र को अपने धर्म संघ में दीक्षित कर, धर्म के नाम पर जातिवाद का उन्होंने प्रतिकार किया। जातिवाद के नाम पर राष्ट्र में विघटन करने वालों एवं अपने स्वार्थों से प्रेरित अनुसूचित एवं नीच जातियों के उत्थान का दावा करने वालों को महावीर के जीवन प्रसंगों का अध्ययन कर अहम् छोड़ देना चाहिए।

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं

भगवान महावीर ने 1141 व्यक्तियों की हत्या करने वाले पापी अर्जुनमाली जैसे को अपने धर्म संघ में दीक्षित कर साधना के क्षेत्र में इतना गतिमान किया कि छः मास के अन्दर ही उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। भगवान महावीर ने इस घटना के माध्यम से जनसाधारण को प्रतिबोधित किया कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। क्योंकि पापी कभी भी पाप छोड़ धर्मी बन सकता है, परन्तु पाप कभी धर्म नहीं हो सकता।

रागद्वेष त्यागे बिना मोक्ष नहीं

सम्पूर्ण सत्य की व्याख्या और सूक्ष्मतम विश्लेषण वही कर सकता है जो स्वयं वीतरागी है। उसका न तो किसी के प्रति राग होता है और न किसी के प्रति द्वेष। जब तक राग और द्वेष रहेगा अपने भक्तों के प्रति ममत्व और अन्य की उपेक्षा होना संभव है। विश्व के इतिहास में शायद ही कहीं ऐसा दृष्टान्त मिलता है कि भक्त अपने परम लक्ष्य मोक्ष को तब तक प्राप्त न कर सका जब तक उसको अपने आराध्य के प्रति राग था। भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य गणधर गौतम को भी तब तक केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई जब तक कि उनका भगवान के प्रति राग समाप्त नहीं हुआ। आज जो साम्प्रदायिक कट्टरता से धर्म बदनाम हो रहा है, उसका रूप विकृत हो रहा है, अपने को ही अच्छा और अन्य को बुरा बतला कर घृणा का वातावरण बनाया

जा रहा है उन सभी धर्म के ठेकेदारों को चिन्तन करना होगा कि कहीं उनका आचरण उनके आत्म-विकास में बाधक तो नहीं है?

सम्यक्त्व ही साधना का केन्द्र

भगवान महावीर ने मिथ्यात्व अथवा गलत धारणा, मान्यता, श्रद्धा को मोक्ष की साधना में सबसे अधिक बाधक माना। सम्यक्त्व (सही दृष्टि) के बिना सच्चा ज्ञान और आचरण सम्यक् नहीं हो सकता। उनकी साधना का लक्ष्य था समभाव से वीतरागता की प्राप्ति। समता ही धर्म का लक्षण है। वह विवादों से परे होता है। उतार-चढ़ाव, मान-अपमान, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने आपको विचलित न होने देने का वह मूल मंत्र है। दूसरी बात यह है कि जब तक जीव-अजीव का सूक्ष्मतम भेद समझ में नहीं आएगा अहिंसा का पालन पूर्ण रूप से नहीं हो सकता। पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल में चेतना को सर्वज्ञ ही जान सकते हैं। वर्तमान विज्ञान की पहुँच से भी वह बहुत परे है। इसी कारण अन्य धर्मों में सूक्ष्म हिंसा से बचने का उतना प्रावधान नहीं है, जितनी बारीकी से जैन श्रमणाचार की नियमावली में प्रतिपादित किया गया है।

महावीर का दर्शन सभी के लिये जीवन्त दर्शन है, अलौकिक दर्शन है। उसके अभाव में ज्ञानी का ज्ञान, पंडित का पांडित्य, विद्वान् की विद्वत्ता, धार्मिक का धर्माचरण, भक्तों की भक्ति, अहिंसकों की अहिंसा, न्यायाधीश का न्याय, राजनेताओं की राजनीति, वैज्ञानिकों की वैज्ञानिक शोध, चिकित्सकों की चिकित्सा, चिन्तकों का चिन्तन, लेखकों का लेखन, कवि का काव्य अधूरा है। कहने का सारांश यही है कि महावीर के सिद्धान्तों से मतभेद रखना, उन्हें अस्वीकारना, चिन्तनशील, प्रज्ञावान, विवेकवान व्यक्ति के लिये संभव नहीं। फिर वह जीवन का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो? उनके दर्शन में अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह का समग्र दर्शन है जो शाश्वत सत्य की आधारशिला पर प्ररूपित किया गया है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोनः 0291-2621554, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com

Website: www. chordiahealthzone.com

चिन्तन

आचार्य हस्ती की दृष्टि में

जैन धर्म के प्रचार के लिए प्रबुद्ध वर्ग की आवश्यकता

डॉ. दिलीप धींग

जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम और सर्वतंत्र स्वतन्त्र धर्म है। वर्तमान अवसर्पिणी काल की दृष्टि से प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव इस धर्म के प्रवर्तक संस्थापक माने जाते हैं। भगवान ऋषभदेव को इतिहासकार प्रागैतिहासिक काल का महापुरुष स्वीकार करते हैं। जैन ग्रंथों के अलावा वैदिक, बौद्ध और पुराण साहित्य में भी भगवान ऋषभदेव के उल्लेख मिलते हैं। रामधारीसिंह दिनकर ने लिखा कि ऋषभदेव वेदोल्लिखित होने पर भी वेदपूर्व हैं।[1] वर्तमान इतिहासकार जैन धर्म के तेबीसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ को सुस्पष्ट रूप से ऐतिहासिक महापुरुष स्वीकार करते हैं।[2] कुछ इतिहासकार बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमी को भी ऐतिहासिक महापुरुष के रूप में स्वीकार करते हैं।[3] अतः यह बात दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है कि जैन धर्म संसार का सबसे प्राचीन और सुस्थापित धर्म है। प्राचीन होने के साथ ही प्राणिमात्र का हितकारी यह धर्म मानव को महामानव तथा आत्मा को महात्मा और परमात्मा बनाने वाला धर्म है।

एक प्रश्न बार-बार किया जाता है कि इतना प्राचीन और श्रेष्ठ धर्म होने के बावजूद इस धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार क्यों नहीं हो पाया। जहाँ तक भारतवर्ष में जैन धर्म के प्रचार की बात है, किसी समय इस देश में यह एक बहुसंख्यक धर्म रहा है। लेकिन आपसी फूट और प्रचार-प्रसार के प्रति उदासीनता के कारण इसका विस्तार नहीं हो पाया। इसके अलावा जैन धर्म एक आचार-प्रधान धर्म रहा है। जैन धर्मावलम्बियों ने अपने धर्म के प्रचार से अधिक आचार-पक्ष की सुदृढ़ता पर ध्यान दिया। जैनाचार का पहला पाठ अहिंसा का है तथा इस पाठ का पहला चरण शाकाहारिता है। इतिहास के पन्नों पर एक भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलता है कि जैन धर्म के प्रचार के लिए कभी कहीं जोर-जबर्दस्ती की गई। जैनाचार्यों का सारा जोर मानव को श्रेष्ठ मानव बनाने पर रहा, चाहे वह किसी भी धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रखे। यही जैन धर्म के सम्यक् आचार और सम्यक् प्रचार का

केन्द्रीय तत्त्व है, जिसने हमेशा मानवता का मान बढ़ाया। धर्म के नाम पर होने वाले झगड़ों को शमन्त और उपशान्त करने में जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त की उल्लेखनीय भूमिकाएँ रही हैं। इन्हीं मूल्यों तथा योगदान के कारण जैन धर्म की प्रासंगिकता पहले से अधिक बढ़ गई। जैन जीवन-मूल्यों की यह प्रासंगिकता और उपयोगिता ही जैन धर्म के अधिकाधिक प्रचार की प्रबलतम प्रेरणा है।

जैन धर्म की संघीय व्यवस्था में साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका; ये चार तीर्थ चार स्तम्भ होते हैं। साधु-साध्वी महाव्रतों को धारण करते हैं, इसलिए उनके द्वारा प्रचार-प्रसार की सीमाएँ होती हैं। चूंकि श्रावक-श्राविकाएँ भी तीर्थ-स्वरूप होते हैं और संघ के आधारस्तंभ होते हैं, इसलिए प्रचार-प्रसार का उनका दायित्व बढ़ जाता है। लेकिन इस दायित्व को निभाने के लिए विशेष योग्यता और समय के नियोजन की जरूरत होती है। एक तरफ श्रमण वर्ग को अपनी मर्यादाओं का अनुपालन करना होता है, दूसरी ओर गृहस्थ वर्ग को अपने जीवन-संघर्ष और सांसारिक दायित्वों से फुर्सत नहीं मिलती है। इसलिए प्रचार की जो रफ्तार होनी चाहिये, वह नहीं बन पाई। ऐसी स्थिति में यह बात समय-समय पर उठती रही कि जैन धर्म के प्रचार के लिए श्रमण-श्रमणी वर्ग और श्रावक-श्राविका वर्ग के मध्यवर्ती एक अन्य वर्ग की स्थापना होनी चाहिये।

जैन इतिहास के आलोक में देखें तो राजा सम्प्रति ने जैन धर्म के प्रचार-प्रसार का एक अभियान चलाया, जिसमें उन्होंने अपने परिजनों, सैनिकों और अधिकारियों समेत सबको अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार शिक्षण-प्रशिक्षण देकर देश-विदेश में अहिंसा और जैन धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा। जनमत और लोक मनोविज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए सम्प्रति ने एक प्रयोग किया। उन्होंने अनेक प्रचारकों को जैन मुनि के वेश में भेजा।[4] एक ओर इससे वेश धारण करने वाले को अपने दायित्व का बोध रहता था, दूसरी ओर जनमानस पर भी व्यक्तित्व के साथ ही वेश का भी प्रभाव पड़ता था। गणवेश, परिधान-संहिता और शालीन पहनावे के पक्ष में ये तथ्य आज भी सर्वत्र लागू होते हैं।

मध्यकाल में अस्तित्व में आई भट्टारक परम्परा ने भी मध्यवर्ग के रूप में अपनी ऐतिहासिक भूमिका का निर्वहन किया। पहले यह परम्परा श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय, तीनों ही जैन संघों में विद्यमान थी। बाद में चूंकि यापनीय जैन परम्परा का पूर्णतः लोप हो गया, इसलिए इस परम्परा के अनुगामी श्वेताम्बर

अथवा दिगम्बर परम्परा से जुड़ गये। बाद में श्वेताम्बर परम्परा में भट्टारक व्यवस्था भी समाप्त हो गई। लेकिन किसी-न-किसी रूप में असंस्थानिक व संस्थानिक मध्यवर्ती प्रचारक सभी परम्पराओं में बने रहे। पन्द्रहवीं सदी में लोंकाशाह की धर्मक्रांति के बाद स्थानकवासी परम्परा का पुनरुद्धार हुआ और थोड़े ही समय में यह परम्परा जैन धर्म की एक सुव्यवस्थित और प्रभावशाली परम्परा बन गई।

ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया, स्थानकवासी परम्परा में भी प्रचारकों की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। बीसवीं सदी में कुछ मनीषी और आचार्य इस बारे में अपने विचार रखने लगे। सदी के पूर्वार्द्ध में जैन दिवाकर चौथमलजी महाराज, आचार्य जवाहरलालजी महाराज आदि सन्तों ने यह विचार प्रस्तुत किया कि जैन धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए श्रमण और श्रावक के बीच एक प्रचारक वर्ग की स्थापना होनी चाहिये। प्रवर्तक पन्नालालजी महाराज ने इस जरूरत की पूर्ति करते हुए साधु-साध्वियों से वंचित क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना करवाने के लिए सर्वप्रथम स्वाध्यायी-वर्ग की स्थापना का ऐतिहासिक कदम उठाया। इस समयोचित कदम की उपयोगिता का आदर करते हुए स्थानकवासी परम्परा की सभी सम्प्रदायों ने इसे अपनाया।

इधर, स्थानकवासी परम्परा से ही अस्तित्व में आये तेरापंथ के नौवें आचार्य तुलसी ने सुनियोजित रूप से मध्यवर्ती प्रचारक वर्ग की स्थापना का ऐतिहासिक कार्य किया। श्रमण-श्रमणी के प्राकृत शब्द 'समण-समणी' के रूप में उन्होंने इस वर्ग का नामकरण किया। इसके बावजूद स्वाध्यायी वर्ग को छोड़ दें तो स्थानकवासी परम्परा में एक ऐसे सुदृढ़ शिक्षित-प्रशिक्षित आचारनिष्ठ उच्चतर मध्यवर्ती प्रचारक वर्ग की जरूरत है, जो देश-विदेश में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार कर सके।

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में युगमनीषी आचार्य हस्ती ने इस आवश्यकता को बार-बार महसूस किया और कहा - ''हमारे स्थानकवासी समाज में ऐसा कोई रूप नहीं है, जिससे साधु-साध्वी देश-विदेश जाकर धर्म-प्रचार कर सकें, धर्म-ध्यान करा सकें।''[5] समय-समय पर वे इस विषय पर अपने विचार रखते रहे। उनका कहना था - ''यदि जिनशासन को उन्नत करना है, साधु समाज को ऊँचा रखना है, तो साधुओं और श्रावकों के बीच एक मध्यमवर्ग की स्थापना करना परमावश्यक है।''[6] आचार्य हस्ती के जीवन-चरित 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' तथा उनके प्रवचन-संग्रह 'गजेन्द्र व्याख्यानमाला' में अनेक स्थलों पर जैन धर्म के

सुनियोजित प्रचार-प्रसार के लिए विचार पढ़ने को मिलते हैं।

फरवरी 1961 में भोपाल (म. प्र.) में आचार्य हस्ती ने श्रावक-श्राविकाओं को उनका कर्तव्यबोध कराते हुए कहा - ''आज के उपासक अपना कर्तव्य भूल गये हैं। अब फिर उन्हें उत्साहपूर्वक धर्मरक्षा में लगना है। चित्त ने प्रदेशी राजा को केशीश्रमण के चरणों में लाने का कार्य किया। उसके माध्यम से प्रदेशी का सुधार हो गया। सम्प्रति ने भी धर्मप्रचार में बड़ा योग दिया। आज भी प्रचार का क्षेत्र श्रावक संभालें तो पारस्परिक सहयोग से शासन की अनुपम सेवा हो सकती है।''[7] 1961 के जोधपुर चातुर्मास में उन्होंने फिर कहा - ''संघ की आवश्यकताओं का विचार कर श्रावक-श्राविकाओं को धर्मनायक का सहकारी होना चाहिये। साधु की अपेक्षा श्रावक के धर्मप्रचार का क्षेत्र विशाल है।''[8]

आचार्य हस्ती चाहते थे कि जिनशासन की प्रभावना के लिए श्रावक-श्राविकाएँ अधिक त्यागमय जीवन जीएँ। वे स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर धर्म-शिक्षा और धर्म-रक्षा के लिए श्रावक-श्राविकाओं का आह्वान करते हुए कहते हैं - ''आप समझ रहे हैं कि धर्मरक्षा और सत्शिक्षा साधुओं का काम है, किन्तु यह भूल है। चार-पाँच श्रावक भी हर स्थान पर ब्रह्मचारी वर्ग के रूप में सेवा दें तो संघ-व्यवस्था उचित ढंग से चल सकती है।''[9] जनवरी 1971 में उन्होंने स्पष्ट रूप से अपने मनोभाव व्यक्त करते हुए कहा - ''साधु जीवन की मर्यादा होने से समाज और देश-विदेश में सुसंस्कारों का प्रचार-प्रसार एक ऐसे श्रावक समुदाय से हो जो सुसंस्कृत, सुशिक्षित तथा सुव्रती हो।''[10] धर्म प्रचार की दृष्टि से संघीय व्यवस्था में श्रावक-जीवन की महिमा रेखांकित करते हुए फरवरी 1978 में आचार्यप्रवर ने कहा - ''धर्मतीर्थ में सन्तों के साथ श्रावकों के सहयोग की भी व्यवस्था है। श्रावकों के सहयोग से ही धर्म का प्रचार-प्रसार व्यापक रूप ग्रहण करता है। धर्म को आज भी श्रावक व्यापक रूप दे सकते हैं।''[11]

आचार्य हस्ती स्वाध्यायियों को 'शास्त्रधारी सैनिक' सम्बोधन के माध्यम से उनके विशेष दायित्व-बोध से अवगत कराते थे। 1982 के जलगाँव चातुर्मास में उन्होंने कहा - ''साधु अपने संयम जीवन की मर्यादा में आचार के माध्यम से प्रचार का कार्य करते हैं, उनके विचरण व विहार की सीमाएँ हैं। देश-विदेश में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार श्रमण भगवान महावीर के शास्त्रधारी सैनिक स्वाध्यायी बन्धुओं द्वारा किया जा सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि

सम्राट् सम्प्रति ने जैन धर्म को देश-विदेश में फैलाने के लिए धर्म प्रचारकों को भेजने का कार्य किया था। आज इस कार्य को आगे बढ़ाकर भगवान महावीर का विश्वकल्याणकारी सन्देश विश्व के कोने-कोने में प्रसारित किये जाने की आवश्यकता है।''[12] आचार्य हस्ती जहाँ कहीं कोई प्रेरक उदाहरण देखते तो बड़े सहज भाव से उसका उल्लेख करते थे। ''विदेशी प्रचारकों और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को देखते हैं तो विचार होता है कि अनार्य कहे जाने वाले लोग देश, धर्म व समाज के लिए घरबार का मोह छोड़कर जीवन अर्पण कर देते हैं, फिर क्या कारण है कि वीतराग संस्कृति में वैसे कार्यकर्ता आगे नहीं आते। तरुण पीढ़ी इस पर गहराई से विचार करे और इस कार्य में आगे बढ़े, समाज में ऐसे कार्यकर्ता सुलभ हों, यही शुभेच्छा है।''[13] धर्म प्रचार की दृष्टि से उनका यह कथन पूरे जैन समाज के लिए विचारणीय है। प्रचार के विवेक और प्रचारकों में सद्गुणों के सर्जन के लिए सदाचार और सद्व्यवहार पर जोर देते हुए आचार्यश्री कहते हैं - ''आप किसी पर दया करें तो ऐसी करें कि जिससे उसका राग-रोष मिट जाए और कर्मबंध का कारण नहीं बने। यह भावना आये तो उसके लिए मिशनरियों की तरह काम हाथ में लेना पड़ेगा।''[14] इसी प्रकार की भावना अन्यत्र भी व्यक्त करते हुए आचार्यश्री कहते हैं- ''जैन गृहस्थ अपनी सेवानिवृत्ति बढ़ायें तथा मिशनरी (धर्म प्रचारक) की तरह जन-साधारण से प्रेम बढ़ावें तो जैन धर्म का प्रचार व विस्तार हो सकता है।''[15]

प्रचार के लिए विशेष योग्यता और धन का समुचित नियोजन आवश्यक है। इस सम्बन्ध में आचार्य हस्ती कहते हैं - ''कहीं पैसा नहीं होने पर काम अटका हुआ है, कहीं पर प्रेरणा नहीं होने से काम अटका है, तो कहीं मतभेद होने से काम अटका है। लोगों में भावना हो और सोचें कि धर्म-रक्षा भी हमारा कर्तव्य है, तो समाज-रक्षण हो सकता है। क्षेत्रों को संभालने और उनमें प्रचार करने के लिए समय-दान और द्रव्य-दान दोनों आवश्यक हैं। विचार-दान से भी बहुत-सा कार्य हल हो सकता है।''[16] अन्यत्र आचार्यश्री फरमाते हैं - ''अजैन बंधुओं के हृदय में जब हम जैन धर्म के मर्म को गहरे बैठाएँगे तथा अपनी उदारता, सरलता, सदाशयता का प्रभाव उन पर डालेंगे, तभी धर्म का अधिकाधिक प्रचार हो सकता है। श्रीमन्तों को चाहिये कि वे अपनी सम्पत्ति का अधिक से अधिक उपयोग धर्म के प्रचार-प्रसार में करें।''[17]

आचार्य हस्ती ने ज्ञान की उपासना पर बहुत बल दिया। उनका मानना था

कि ज्ञान के बिना प्रचार-प्रसार को गति नहीं दी जा सकती। उनकी इस प्रेरणा के फलस्वरूप स्वाध्यायी वर्ग अधिक योग्य, प्रबुद्ध और उदार हुआ। साधारण गृहस्थ से लेकर उच्च शिक्षित और उच्चाधिकारी तक स्वाध्याय प्रवृत्ति से जुड़े। वे चाहते थे कि ज्ञान की उपासना हर स्तर पर होनी चाहिये। इसलिए उनकी प्रेरणा से नवम्बर 1978 में अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् के गठन का ऐतिहासिक कार्य हुआ। श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा की ओर से विद्वानों का यह प्रथम संगठन बना और समाज में श्रुत-चेतना का संचार हुआ। सब अपने-अपने स्तर पर किस प्रकार धर्म-प्रचार को आगे बढ़ा सकते हैं, इस बारे में आचार्य हस्ती के दृष्टिकोण से अवगत कराते हुए डॉ. नरेन्द्र भानावत लिखते हैं - ''विदेशों में श्रमण संस्कृति के शुद्ध स्वरूप को प्रस्तुत करने के लिए स्वाध्यायियों को विशेष रूप से भी तैयार करने की बात उन्होंने (आचार्य हस्ती ने) कही। यह भी संकेत किया कि विदेशों में विभिन्न क्षेत्रों में हमारे समाज के लोग अच्छी स्थिति में हैं। यदि उन्हें संगठित कर कोई योजना बनाई जाए तो वहाँ श्रमण संस्कृति के प्रचार-प्रसार का अच्छा वातावरण बन सकता है। आर्थिक दृष्टि से तो ये लोग आशा से अधिक सम्पन्न हो गये हैं, पर धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विपन्न न रहें, इस ओर ध्यान देना विद्वत् परिषद् का कर्तव्य है। काश! आचार्यश्री के इन विचारों को मूर्त रूप देने के लिए समाज कुछ कर सके।''[18]

इस प्रकार आचार्य हस्ती ने श्रावकों, स्वाध्यायियों, विद्वानों और धनवानों सहित सबको किसी-न-किसी रूप में धर्म के व्यापक व सम्यक् प्रचार की प्रेरणा दी है। वर्तमान में स्थानकवासी जैन समाज में स्वाध्यायियों का एक व्यवस्थित वर्ग है, जो पर्युषण पर्व के दौरान धर्माराधना करवाता है। यह धर्माराधना विदेश में एक-दो स्थानों को छोड़कर मुख्यतः देश के अन्दर ही करवाई जाती है।

इस प्रकार स्वाध्यायियों की महत्त्वपूर्ण सेवाएँ देश और काल से सीमित हैं। जैन धर्म के सुनियोजित प्रचार-प्रसार के लिए विशिष्ट विद्वान स्वाध्यायी तैयार किये जाने चाहिये, जो श्रावक और श्रमण के बीच में महत्त्वपूर्ण कड़ी बन सकें। मध्यम वर्ग की शुरुआत, शिक्षण-प्रशिक्षण, नामकरण, परिधान आदि के बारे में विचार-विनिमय किया जाना चाहिये।

मध्यमवर्ग की स्थापना से समाज को अनेक फायदे होंगे। इस वर्ग की शिक्षण-प्रशिक्षण व्यवस्था से जुड़कर जिज्ञासु स्वाध्यायी अधिक योग्य अथवा श्रमण-तुल्य योग्यता हासिल करने वाले बन सकेंगे। जिनके जीवन का महान लक्ष्य

श्रमण-दीक्षा अंगीकार करना है, उनके लिए यह शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था वरदान साबित होगी। मुमुक्षु अपने वैराग्यकाल में धर्म-प्रचार के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों को अच्छी तरह से समझ सकेंगे। इस उद्देश्य के लिए वे अपनी वैराग्य अवधि बढ़ाकर अधिक अनुभवी तथा परिपक्व बन सकेंगे। इस प्रकार, यह व्यवस्था स्वाध्यायियों, प्रचारकों और वैरागी भाई-बहिनों के लिए समान रूप से उपयोगी साबित होगी। इस व्यवस्था से समर्पित प्रचारकों के अलावा समाज को विशेष धर्मनिष्ठ विद्वान, विद्वान स्वाध्यायी और श्रेष्ठ सन्तों की प्राप्ति सुलभ होगी। श्रमण वर्ग अपने श्रमणाचार के प्रति अधिक सजग हो सकेगा।

साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं, समाज के नेतृत्वकर्ताओं और मनीषियों ने समय-समय पर इस विचार को रखा कि स्थानकवासी परम्परा में एक सुदृढ़ व प्रबुद्ध प्रचारक वर्ग की स्थापना होनी चाहिये। अब इस विचार को मूर्त रूप देने का समय आ गया है। इस कार्य को बड़े मन, अनेकान्त दृष्टि और युगीन अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर किया जाए तो पंथवाद और अनावश्यक होड़ा-होड़ी पर भी अंकुश लगेगा।

सन्दर्भ :-

1. आचार्य हस्ती प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठांक 135
2. वही, पृष्ठांक 475
3. वही, पृष्ठांक 428 से 430
4. आचार्य हस्ती प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास, द्वितीय भाग, पृष्ठांक 475
5. नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठांक 458
6. वही, पृष्ठांक 398
7. वही, पृष्ठांक 137
8. वही, पृष्ठांक 125
9. वही, पृष्ठांक 141
10. वही, पृष्ठांक 167
11. वही, पृष्ठांक 191
12. वही, पृष्ठांक 231
13. वही, पृष्ठांक 368
14. वही, पृष्ठांक 391
15. वही, पृष्ठांक 418
16. वही, पृष्ठांक 393
17. वही, पृष्ठांक 418
18. वही, पृष्ठांक 544

-उमराव सदन, 53 डोरे नगर, उदयपुर (राज.)

चिन्तन

क्या मैं भी पाप का भागी हूँ?

श्री उदय मुनि जी

मुमुक्षुः – मुझे ज्ञात है कि मेरे पिता की कमाई भारी पाप से होती है, क्या उसका भोग करने से मैं भी पाप का भागी हूँ?

उत्तरः – हाँ! यदि आपको ज्ञात है कि पिता (या पति या कोई भी परिजन) के कारोबार में, उद्योग में भारी हिंसा होती है, छल-प्रपंच-कपट-मायाचार, भारी कर-चोरी, रिश्वत, घूस, बेईमानी होती है, तभी लाखों-करोड़ों की कमाई होती है। उसी के कारण आपको बढ़िया भोजन, पहनने के लिए कीमती वस्त्र-परिधान मिलते हैं, पढ़ने, लिखने की या अन्य सुख-सुविधाएँ मिलती हैं, आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण एवं वाहन मिलते हैं। आप इन्हें प्राप्तकर भोग-उपभोग कर मज़ा ले रहे हैं। तो आप भी उस पाप के भागीदार, अपराधी हो गए। आप भी कर्म बांध रहे हैं, आपको भी उसके दुष्फल में जन्म-मरणरूप चतुर्गति में भटकना पड़ेगा।

मुमुक्षुः – पर मैंने तो उन्हें नहीं कहा कि आप ऐसी काली कमाई करके हमें पालो तब मुझे पाप क्यों लगेगा? हमने तो एक डाकू की कहानी सुनी थी। संन्यासी ने कहा- अरे भाई! तुम डाका डालकर क्यों पाप कर रहे हो, सोचो जरा तुम तो यह पाप करके नरक-तिर्यंच में जाकर दुःख पाओगे और परिजन मजा उड़ाएँगे। जरा पूछ आओ कि वे भी तुम्हारे पाप-फल में हिस्सा बटाएँगे? वे कह रहे थे-हम क्यों हिस्सा बटाएँ, हमने कब कहा कि तुम डाके डालकर लाओ? मैं भी ऐसा ही कहता हूँ तब आप क्यों कहते हो कि मैं भी पाप का भागी होऊँगा?

उत्तर – डाकू के परिजनों ने कहा था कि हमने कब कहा कि तुम डाके डालो, मेहनत करके कमाकर लाओ। आपने कभी उन अपने प्रियजन पिता-पति से कहा कि पाप की कमाई करके इतनी सुख-सुविधाएँ मिलती हैं तो मुझे नहीं चाहिए? नहीं कहा। यदि वे ईमानदारी से कमाएँ तो आप ऐसी रईसी से नहीं रह सकते। इसलिए आप प्रत्यक्षतः उन्हें प्रेरणा देते हैं, अप्रत्यक्षतः अधिकाधिक सुख-सुविधाओं का भोग कर आप उन्हें

प्रोत्साहित करते हैं। इसलिए आप भी उस पाप के भागीदार हैं।

प्रश्नः– आप कोई उपाय बताओ कि मेरे पिता या पति भी पाप से बचें और मैं भी।

उत्तरः– पिता तो बच पाएँ या नहीं, उनकी जानें, पर यदि आप बचना चाहते हैं तो आप उस कमाई में से न्यून से न्यूनतम उपयोग-उपभोग करो। अपनीं समस्त आवश्यकताएँ सीमित कर लो।

प्रश्नः– यह भी संभव नहीं है। हमने वर्षों से जाने-अनजाने यह रईसी जीवन पद्धति अपना ली, जीवन वैसा ही ढ़ाल लिया। साथ ही वे जो सुख-सुविधाओं के साधन लाकर देते हैं, यदि उन्हें न अपनाएँ, भोग-उपभोग-उपयोग न करें तो वे कहते हैं कि क्यों कुटुम्ब में, समाज में मेरी नाक नीची करवाते हो? वे रुष्ट, क्रोधित हो जाते हैं, तब बताओ कि मैं क्या करूँ?

उत्तरः– यदि आपने उस ऐशोआराम वाले जीवन को आदर्श, सुखकारी माना है, उसी में सुख माना है तब तो पाप से बचने का कोई उपाय नहीं है। यदि आप वास्तविक धर्ममय-संयमित जीवन अपनाकर आत्मिक आनंद में रह सकते हैं तो न आप दुःखी, न आपके पिता या पति रुष्ट होंगे न समाज में प्रतिष्ठा गिरेगी, अपितु प्रतिष्ठा बढ़ेगी। देखो! कैसे संस्कारी हैं कि इतना वैभव होते हुए भी उसका घमंड नहीं, दिखावा नहीं और सीमित उपयोग कर कैसे आनंद में रहते हैं, ऐसी प्रशंसा भी होगी। यह उपाय करो तो बचोगे।

सदस्यता शुल्क में परिवर्तन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की 12 मार्च 2011 को सम्पन्न कार्यकारिणी बैठक में जिनवाणी एवं मण्डल द्वारा प्रकाशित सदस्यता शुल्क में परिवर्तन किया गया है। नये शुल्क इस प्रकार हैं-

त्रिवार्षिक : 120/- रु. **स्तम्भ सदस्यता : 21,000/- रु.**

आजीवन देश में : 500/- रु. **संरक्षक सदस्यता : 11,000/- रु.**

आजीवन विदेश में : 12,500/- रु.

साहित्य आजीवन सदस्यता : 4000/- रु.

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (2)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा एवं द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-सम्पादक

महाराज साहब,

आपका पत्र मैंने तीन बार पढ़ा।
आप सही हैं।
चाहे मुझे रुपयों की भाषा नहीं आती,
लाभ-हानि की भाषा नहीं आती, परन्तु
सच-झूठ की भाषा तो अवश्य आती है।
मुझे जो सच लगता है उसे पकड़कर रखने में
मैं किसी के बाप की परवाह नहीं करता।
मुझे जो झूठ लगता है उसे चुनौती देने में
मैं किसी की शर्म नहीं रखता।
एक बात आपका बता दूँ कि
हम दोनों भाई,
दुकान में अर्थात् व्यापार में भागीदार हैं।
घर में 'भाई' का व्यवहार
और दुकान में 'भागीदार' का।
कठिनाई तो तब होती है जब
घर में बड़े भैया का आदर करने वाला मैं,
व्यापार में भागीदार होने के नाते उनका लिहाज नहीं रख पाता।
कई बार ऐसा हुआ है कि जिस ग्राहक को माल नहीं देना चाहिए था,
बड़े भैया ने उसे माल दिया

और उसमें नुकसान हुआ।
जिसको ब्याज से रुपये देने में मुझे खतरा लगता था,
मेरी स्पष्टरूप से असहमति होने पर भी बड़े भैया ने उसे
रुपये दिए और आखिर वह रुपये डूब गए।
ऐसे समय बड़े भैया के साथ मेरी
उग्र भाषा में कहा-सुनी हुई ही है।
हो सकता है इस कारण और ऐसे अनेक कारणों से
बड़े भैया के प्रति मेरा प्रेम कम हो गया हो।
मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि
संबंध बनाए रखने के लिए क्या जान बूझकर
'सत्य' की उपेक्षा ही करते रहना चाहिए?
मौन रहकर क्या 'झूठ' को सहन करते ही रहना चाहिए?
अलबत्ता,
केवल व्यापार के मामले में ही बड़े भैया के साथ ऐसा होता है, ऐसी बात नहीं है,
व्यवहार में भी अक्सर ऐसा ही होता है।
मुझसे अन्याय सहन नहीं होता।
झूठ को स्वीकारने के लिए मेरा मन तैयार नहीं होता।
पक्षपातपूर्ण व्यवहार मुझे पसंद नहीं आता।
दंभपूर्ण व्यवहार करने वाले के साथ मैं समझौता नहीं कर सकता।
पर न जाने क्यों इन मामलों में बड़े भैया का नज़रिया मुझसे अलग ही है।
उनका मानना है कि
''संस्करण के बिना
कोई वस्तु जैसे गौरवप्रद नहीं बन सकती, वैसे ही
समाधान वृत्ति अपनाए बिना
संबंधों में मधुरता टिक नहीं सकती।''
वन के वृक्षों को माली काटता रहे तो ही
वन उपवन में परिवर्तित हो सकता है।
स्वर्ण अग्नि में प्रवेश के लिए तैयार हो तो ही

वह आभूषण में परिवर्तित हो सकता है।
पत्थर शिल्पी की छेनी से मार खाता रहे तो ही
वह नयनाभिराम प्रतिमा में परिवर्तित हो सकता है।
बस, इसी तरह
यदि हम अपने मन का आग्रह छोड़ देने के लिए तैयार हैं,
तभी हम सामने वाले व्यक्ति के साथ हमारे संबंधों में
मधुरता बनाए रखने में सफल हो सकते हैं।''
बड़े भैया ने यह मनोवृत्ति आत्मसात् कर ली है
और तदनुसार जीवन जीकर वे निरंतर प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे हैं।
लेकिन, मुझे ऐसा लगता है कि इस मनोवृत्ति में
'शरणागति', 'समाधानवृत्ति' और 'कायरता' की वृत्ति का ही
महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस बारे में आपका क्या कहना है?

यश,

जिस रास्ते पर एक भी वाहन अथवा व्यक्ति नहीं हो,
उस रास्ते पर तुम्हें वाहन चलाने का अवसर मिले
और उस समय यदि तुम अपनी मनमानी से वाहन चलाओ-
कभी धीरे तो कभी तेज,
कभी दायीं ओर, कभी बांयी ओर,
तो कभी बीच में,
कभी तुम अपना पाँव एक्सिलीटर पर रखो और
कभी ब्रेक पर,
तो न इसमें किसी को आपत्ति होती है और
न ही तुम्हारी स्वतंत्ररूप से वाहन चलाने की व्यवस्था में
कोई अड़चन आती है; परंतु यदि
ऐसे रास्ते पर वाहन चलाने का अवसर आए
जिस रास्ते पर वाहनों की अत्यधिक चहल-पहल हो,
अनेक व्यक्ति रास्ते पर चल रहे हों,
ऐसे रास्ते पर यदि तुम अपनी मरजी के अनुसार ही वाहन चलाने का

आग्रह रखो और पहले की तरह ही वाहन चलाओ तो दो ही परिणाम आएँगे–
तुम्हारी गाड़ी किसी के साथ टकरा जाएगी अथवा
कोई अपनी गाड़ी तुम्हारी गाड़ी के साथ ठोक देगा।
तुम्हारा एक्सिडेन्ट हो जाएगा अथवा
तुम किसी का एक्सिडेन्ट कर बैठोगे।
तुम परलोक सिधार जाओगे अथवा
किसी को परलोक में भेज दोगे।
इसका तात्पर्य क्या है?
यही कि अनेकों की चहल–पहल वाले रास्ते पर गाड़ी चलाने का
अवसर हो तब सब को ध्यान में रखकर ही गाड़ी चलानी पड़ती है।
स्व–पर दोनों की सुरक्षा इसी में है।
तुमने गत पत्र में जो प्रश्न पूछा था उसका यही उत्तर है।
तुम, मैं, हम सभी अनेकों के बीच जी रहे हैं।
मेरी इच्छा चाहे कितनी ही सुंदर हो,
मेरी बात चाहे कितनी ही सच्ची हो,
मेरी मान्यता चाहे कितनी ही हितकारी हो,
फिर भी, उसको प्रस्तुत करने से पहले,
उसको लागू करने से पहले,
मुझे आस–पास के संयोगों को देखना ही होगा।
मेरे इर्द–गिर्द के व्यक्तियों के व्यवहार को मुझे
दृष्टिगत रखना ही होगा।
मेरी अपनी मानसिक स्थिति को भी मुझे समझना होगा।
बम्पर आता है,
ड्राइवर को गाड़ी की गति कम करनी पड़ती है।
लाल सिग्नल दिखता है,
उसे गाड़ी खड़ी रखनी ही पड़ती है।
रास्ते पर कोई व्यक्ति शराब पीकर चल रहा है,
गाड़ी को उसे बचाकर निकालना पड़ता है।
हरा सिग्नल दिखता है,

गाड़ी को आगे बढ़ाना ही पड़ता है।
पीछेवाला हॉर्न बजा रहा है,
उसको Side देनी ही पड़ती है।
गाड़ी खुद की है, पर रास्ता सभी का है।
और इसलिए उस रास्ते पर जो कुछ है,
जो कोई है, उन सभी को ध्यान में रखकर ही गाड़ी चलानी पड़ती है।
यश,
मुझे ऐसा लगता है कि तुम यही गलती कर बैठे हो।
जीवन तुम्हारा है, यह सच है।
इच्छा तुम्हारी है, यह भी सही है।
तुम्हारी इच्छा सच्ची है, तुम्हारा आशय अच्छा है, यह भी ठीक है।
पर फिर भी, अपने इर्द-गिर्द रहने वाले सभी के दिमाग को,
आस-पास के संयोगों को देखने के बाद ही
अपनी इच्छा को प्रस्तुत अथवा लागू करना चाहिए।
क्या इस मामले में तुम कुशल सिद्ध हुए हो? मुझे बताना। **(क्रमशः)**

विचार

उत्तम पुरुष

संकलनकर्ता -श्रीमती सुमन डागा

मातृभक्त-जन देव, गुरु, पिता एवं मातृ चरणों की वन्दना करके अपने दिन की शुरुआत करते हैं। यह उत्तम पुरुषों की प्रवृत्ति है। पशु दूध पीने तक ही माता से सम्बन्ध रखते हैं। अधम पुरुष विवाह होने तक ही माता का सम्मान करते हैं। मध्यम पुरुष विवाह के बाद स्वार्थ सिद्धि तक माता से सम्बन्ध रखते हैं और उत्तम पुरुष जीवन भर माँ को साक्षात् देवी के समान सदा सम्मान देते हैं। ऐसे उत्तम पुरुषों के लिये किसी ने ठीक ही कहा है-

माता-पिता के श्री वचनों में, जो सुत है अनुरागी,
धन्य-धन्य जग में है उसका, वो सुत है बड़ भागी।
मात-पिता अरु गुरु की वाणी, जिसने उर में धारी,
सब सुख-साधन उसके कर में, जो सुत आज्ञाकारी।।

- W/o श्री नवरतन डागा,
898 ए-प्रथम, डागा टॉवर, सरदारपुरा द्वितीय डी रोड़, जोधपुर (राज.)

प्रासंगिक

महावीर वाणी : आज भी प्रासंगिक

श्री कमलेश मेहता

विश्वभर में यह बात सर्वमान्य है कि भगवान् महावीर ने ऐतिहासिक तीर्थंकर के रूप में जन्म लिया और आत्म-साधना द्वारा ज्ञान के सर्वोत्कृष्ट सर्वोत्तम-सर्वोपरि शिखर पर पहुँचकर जन-जन को समता, सहिष्णुता, मैत्री एवं करुणा का संदेश दिया।

भगवान् महावीर के सिद्धान्त तथा उनके द्वारा दी गयी हित शिक्षाएँ जितनी उस युग में महत्त्वपूर्ण थीं उससे कहीं अधिक वर्तमान के इस भौतिकवादी एवं आधुनिक युग में उपयोगी है। आज के युग में हिंसक भाव एवं क्रियाएं बढ़ रही हैं। आज का व्यक्ति मत, पंथ के आग्रह से ग्रस्त है, संकीर्ण विचारों में जी रहा है। स्वयं के जीवन के लिए कैसा भी अनैतिक-अनुचित कार्य हो उसे आचरित कर अपने जीवन की सार्थकता मानने की भयंकर भूल कर रहा है। भगवान् महावीर के युग में भी व्यक्ति की सोच संकीर्ण थी, उनका कथन था कि-''यत् मम तत् सत्यं'' अर्थात् जो मेरा है या जो मैंने कहा है वही सत्य है। तब उस समय भगवान् महावीर ने कहा -''जो मैंने कहा है, वही सत्य है ऐसा समझकर किसी तत्त्व को स्वीकार मत करो, बल्कि अपने चिन्तन की कसौटी पर वह खरा उतरे तब स्वीकार करो।'' 'मेरा है वही सत्य है' ऐसा न मानकर 'सत्य है वह मेरा है' ऐसा मानो, जानो तथा कहो, इससे अनेक समस्याएँ मिट जाएगी। वैज्ञानिक युग में धर्म के उपदेशों को इसी कथन के आधार पर वर्तमान पीढ़ी के समक्ष रखने की आवश्यकता है। भय और लोभ से रहित होकर धर्म को महत्त्व मिलेगा तब ही वह धर्म जीवन्त होकर मानव के व्यवहार में प्रकट होगा।

वर्तमान में प्रायः यह मानवीय दुर्बलता देखी जाती है कि हर व्यक्ति दूसरों को अपने से निम्न देखना चाहता है। एक मौहल्ले का व्यक्ति अपने पड़ौसी के ऐश्वर्य को देखकर ईर्ष्या करता हे। एक सेठ यह नहीं चाहता कि उसके सेवक उसकी बराबरी करने लगें। एक भगवान् अपने भक्तों को भक्त ही रखना चाहता है। किन्तु महावीर सर्वेश्वरवाद के प्रतिपादक थे। उन्होंने हर आत्मा में परमात्मा का स्वरूप बताया। महावीर नहीं चाहते थे कि भक्त भक्त ही बना रहे। उन्होंने कहा- हर आत्मा में

अनन्त शक्ति है। शक्ति को उद्घाटित करके हर आत्मा मोक्ष जा सकती है।

जिस युग में यज्ञों, देवालयों, मन्दिरों में पशु-वध की भरमार थी, हिंसा के माध्यम से शांति की कामना की जाती थी, निर्दयतापूर्वक पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों को मौत के घाट उतार दिया जाता था, उस समय भगवान् महावीर ने उद्घोष किया था- "प्राणी-हिंसा महापाप है। सभी जीव जीना चाहते हैं, अतः उनके इस अधिकार की रक्षा करनी चाहिए।" भगवान् ने प्राणिमात्र में समता का दर्शन किया। उन्होंने कहा- आत्मतत्त्व की दृष्टि से जीव जीव के बीच कोई विभेद नहीं है। प्रत्येक जीव सुख चाहता है, दुःख नहीं। हर जीव जीना चाहता है, मरना नहीं। इसलिए किसी को मत मारो, मत सताओ। किसी को सुखी बनाना तुम्हारे वश में नहीं, पर किसी को दुःखी मत करो। जिस व्यवहार से या जिस भाषा के प्रयोग से तुम्हें कष्ट होता है वैसा व्यवहार व वैसी भाषा का प्रयोग दूसरों के साथ मत करो। जिस प्रकार अपने शरीर के एक अंग के लिए अगर लाखों-करोड़ों रुपए भी मिलें तो कोई व्यक्ति अपना अंग नहीं देगा, उसी तरह किसी प्रकार की हिंसा करने से पहले वही दर्द, वहीं दुःख स्वयं में महसूस करें। भगवान् महावीर का यह चिन्तन सार्वभौम सत्य है।

आज विश्व में उत्पन्न हो रही सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाएँ, हिंसा का सर्वत्र होने वाला ताण्डव, आतंकवाद, भ्रष्टाचार; अनैतिकता, वैमनस्य, युद्ध की स्थितियाँ, प्रकृति का शोषण आदि समस्याएँ विकराल रूप ले रही हैं। ऐसी स्थिति में कोई समाधान हो सकता है तो वह है महावीर की अहिंसा, अपरिग्रह और समत्व का चिन्तन।

वर्तमान युग में धर्म प्रदर्शन मात्र रह गया है। व्यक्ति धर्म तो करना चाहता है, पर साथ ही अपनी प्रसिद्धि भी चाहता है। वह धर्म को अन्तर में न जीकर केवल बाहर जीने में विश्वास कर रहा है। बाहर चाहे वह धर्म का बड़ा ज्ञाता ही क्यों न हो, अगर अन्तर में प्राणिमात्र के प्रति उसके मन में दयाभाव न आए तो वह सीखा हुआ ज्ञान उसके किसी काम का नहीं। स्वयं को उच्च तथा दूसरों को हीन समझना उसका स्वभाव बन चुका है। जातिवाद का प्रदूषण आज बहुतायत से दृग्गोचर हो रहा है। भगवान् महावीर ने इस प्रदूषण को दूर करने हेतु संदेश दिया- "उच्च जाति में जन्म लेकर यदि कोई हीन कर्म करता है तो वह उच्च कहलाने का अधिकारी नहीं, अपितु हीन जाति में जन्म लेकर यदि उत्तम कर्म करता है तो वह महान् है, उच्च है।"

वर्तमान युग में भगवान् महावीर के इन विचारों को व्यापक रूप से फैलाने

की आवश्यकता है। 2600 वर्षों के बाद भगवान् महावीर के संदेशों की मूल्यवत्ता पहले से भी अधिक बढ़ गई है। इसका कारण है महावीर ने शाश्वत तथ्य प्रकट किए। जो शाश्वत होता है उसका मूल्य कभी कम नहीं होता। महावीर के विचार किसी एक वर्ग, जाति या सम्प्रदाय के लिए नहीं, बल्कि प्राणिमात्र के लिए हैं। अतः आधुनिक युग में अधिक से अधिक महावीर के चिन्तन और विचारों के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है।

महावीर की वाणी को गहराई से समझने का प्रयास करें तो इस युग का प्रत्येक प्राणी सुख एवं शान्ति से जी सकता है। इसीलिए भगवान् महावीर की वाणी हर स्थिति में अर्थवान् है, आदरणीय तथा प्रासंगिक है। हम सभी उसे महापुरुषों से श्रवण कर, स्वाध्याय से मनन कर समझने तथा हृदयंगम करने का प्रयास करें तो परिवार, समाज तथा राष्ट्र में शांति एवं सफलता व्याप्त हो सकती है।

-रांका भवन, पेटी का नोहरा, मोती चौक, जोधपुर (राज.)

शब्द-दान

डॉ. दिलीप धींग

रात की एक बज गई थी। मैं कम्प्यूटर पर कुछ लिख रहा था। जीवन संगिनी सीमा आई, घड़ी देखी और बोली- "रोज ये नवरे काम करते रहते हो। कभी इसके लिए लिखा, कभी उसके लिए लिखा। आखिर इनसे आपको मिलता क्या है?"

अगले दिन शाम को निःशुल्क चिकित्सा जाँच शिविर का समापन होना था। उस शिविर में देश के नामी चिकित्सकों को बुलाया गया था। जिस संगठन की ओर से शिविर लगाया गया, उसकी ओर से चिकित्सकों को सम्मान-पत्र देना था। संगठन के एक पदाधिकारी ने मुझसे सम्मान-पत्र बनाने के लिए कहा था। मैं दिनभर कार्य करके देर से घर लौटा था। पहले थोड़ा विश्राम के लिए लेटा तो थकान से नींद आ गई। फिर मेरी नींद खुली तो सम्मान-पत्र बनाने बैठ गया।

मैंने सीमा को कहा- "देखो, कुछ लोगों ने पैसे खर्च करके मानवता की सेवार्थ एक आयोजन किया है। फिलहाल मैं धन का दान नहीं कर सकता, लेकिन शब्द-दान तो कर सकता हूँ। मेरे लिखे शब्दों से यदि आयोजकों और चिकित्सकों की सेवा भावना प्रोत्साहित होती है तो यह भी एक सेवा ही है।"

उसने समाधान पाया और चुपचाप सो गई। मैं भी मेरा कार्य करके पंच परमेष्ठी की स्तुति करते-करते कब सो गया पता ही नहीं चला।

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

गीत

आचार्य हीरा का 73 वां जन्म-दिवस

गुरुजी थांरी साधना में मेरु सी ऊँचाई

श्री मनमोहनचन्द बाफना

(तर्ज : मारुजी थारे देश में)

गुरुजी थांरी साधना में, मेरु सी ऊँचाई,
मेरु सी ऊँचाई है, सागर सी गहराई हो ।। गणिवर ।।
हस्ती घडियो इण हीरा नें, साधना शक्ति पाई ।।

आदिनाथ जन्मोत्सव रे दिन, हीरो आ धरती पे,
चंदन माटी में थे जनम्या, पीपाड़ रे समरांगण में
मोती रो हीरो वीर जी, जो पाग्यो हस्ती शरणो जी,
गाँधी कुल रो नाम दिपायो-2, वैराग्य री बजे शहनाई हो ।।

मन सूं रमग्यो, तन सूं रमग्यो, स्व आत्म में रमग्यो,
तपते सूरज सुं ज्यूं मुखड़ो, हीरो चमकण लाग्यो,
हस्ती तरसे ऐसी मस्ती में, प्रकट्यो अन्तर तेज हो,
ज्ञान क्रिया सुं जप, तप पावे-2 संयम री खरी कमाई हो ।।

व्यसन मुक्ति रो घणो सांतरो, जग में बिगुल बजायो,
सामायिक स्वाध्याय बांटता, रत्नवंश चमकायो,
विनय विवेक व ध्यान जी, अमीरस बरसे है भारी जी,
सिद्धान्ता री खातिर करता-2, शासन सेवा भारी हो ।।

परिग्रह घणा प्रांत पांत में, सुख दुख में सम जान्यो,
मुखड़ा पर मुस्कान अनूठी, समता सुखकर मान्यो,
आता घणा तूफान जी, ध्यान मौन जप धार जी,
गुरुवर सुं शक्ति पाकर हो-2, जिनशासन चमकायो हो ।

स्वर्ण कसौटी पर निखरे, ओ हीरो वीर सैनानी,
अनुशासन सूं संत सतीवर, रत्नवंश कुरबानी,
वे अंकुर बण्या विशाल जी, पुष्पित है फलित उद्यान जी,
इण कलयुग में ये सतगुरु जी-2, ज्ञान, क्रिया सुहायी हो।

कुशल रत्न रे वचनां पर ही, जीवन सारो ढाल्यो,
जीवण जीणों हस्ती सूं पायो, लाखां रो भार उतारयो,
जुग-जुग अमर इतिहास जी, चिर आयु हो विश्वास जी,
गणिवर हीरा जन्मोत्सव पर-2, लख वंदन शीश झुकायी हो।।

-प्रमोद दाल मिल, 112/109, पोखरपुर, कानपुर-208010

रत्नत्रय के दीपकों से, संयम-ज्योति जगमगालो

श्री देवेन्द्र नाथ मोदी

निर्वेद की मेहंदी रचाकर
संवेग की बिंदिया सजाकर
ज्ञान का काजल लगाकर,
निर्मोह का टीका सजा लो।
नवतत्त्वों के सिन्दूर से,
माँग अपनी आज भर लो।
समदर्शिता की चुनरी से
घूंघट अपना आज निकालो।
आराध्य को वरने का कर लो
आज अपना साकार सपना।
संवर का मंडप तानकर
लो निर्जरा के साथ फेरे।
क्षमा, तप आदि के
आभूषणों को धार कर

आकिंचन्य की डोली में चढ़
कर लो प्रस्थान अपना।
भक्ति-रस में डूब कर
विदा के गीत गाओ।
राग के उपहार तज
मिथ्यात्व को न देखो।
सिद्धत्व को पाने का ही
सपना दिन-रात देखो।
अशुभ कर्म का संसार तज
शुद्धत्व को जानो अपना।
विरति का आसन बिछा कर
ध्यान की लौ जलाओ।
रत्नत्रय के दीपकों से
संयम-ज्योति जगमगालो।

-''हुकुम'' 5-ए/1, सुभाषनगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

English-Section

PRAYER TO PEACE

K.S. Galundia (Retd. IAS)

The Power of Prayer- According to a new study prayer helps in tackling woes in crunch situations. "Those who choose to pray find personalised comfort during hard times and can easily deal with their emotions and problems. The 75% of Americans who pray on a weekly basis do so to manage a range of negative situations and emotions- Illness, sadness, trauma and anger, a researcher at university of Wisconsin- Madison has claimed" (TO I Dec 16, 2010)

What is Prayer- According to Oxford English dictionary the literal meaning of prayer is an earnest hope or wish. It also means a request for help and expression of thanks to God.

In the spiritual sense prayer means something more than the literal meaning. The first ingredient of Prayer is Faith and the second ingredient is an earnest desire to imbibe the virtues, which we pray for, in our life and action. Faith without action is like body without Soul. Prayer is the key which opens the portals to our innerself and raises our consciousness beyond the senses to a blissful state.

Where Lies the Power of Prayer- Most of the people believe that the power of prayer lies in the various Mantras which we chant and in the repetition of the various metaphors which we use in the prayer. No doubt the words and the mantras which constitute our prayers have their own importance in focussing our minds and creating a positive mind-set. However, more than that real power of prayer lies in the thoughts and the meaning of those words and mantras. Ultimately, whatever words of mantras we use or chant they should come from the depth of our heart. then only it will relieve us of all the stress and cleanse our mind.

Navakar Mantra and it's Efficacy- In Jainism Navakar Mantra is considered to be Maha Mantra and reliever of all

our woes and problems. If we analyse the Navakar Mantra we will come to know where lies the real power. By chanting Navkar Mantra, we pay obeisance to the Enlightened (Arihant), the Emancipated (Siddha), the preceptors (Acharya), the Deans (upadhyay) and all saints (Sadhus). It will be seen that without naming any body we pay obeisance to the various qualities and virtues imbibed in those persons. The Arihants are those who are unattached to this world and the world hereafter i.e. the enlightened souls, the sidhas are those who have attained salvation, who are form less and immortal souls (omnipotent and omni scient). Acharyas are the heads of the Sangh/Cult and the founders and path finders for us,, upadhyayas are those who are the store house of knowledge and masters of scriptures.

How the Prayer helps- In nut shell Prayer helps us in the following ways:-

1. **It helps in focussing our mind:-** Our thoughts and consciousness is always scattered and divided. Prayer helps us in focussing our thoughts. without concentration nothing can be achieved. Even the Sun's rays do not burn unless brought to Focus.
2. **It creates positive thinking:-** Prayer purifies our thinking and creates positive thoughts. Pure and powerful thoughts give us strength and inspiration for powerful action, weak thoughts result in Defeat. Whenever we remember Pure Soul in any form by any words from the depth of our hearts, we are one with the universal force and impossible things also become possible and miracles happen. Ultimately, it boils down to one single point i.e. positive thinking, which leads us to Peace and Equanimity. We may follow any religion, any cult, sect or way of life the ultimate GOAL is the same. The way of worship, the language, the ceremonials, rites and rituals may differ but the objective is the same.

   Our national Poet Maithlisharan Gupt has succiently

summarised this in his poem "Swagatam"

तेरे घर के द्वार बहुत हैं किसमें होकर आऊँ मैं।
और सब द्वारों पर भीड़ मची है, कैसे अंदर जाऊँ मैं ।।

3. **It helps in controlling our Ego:-** When we surrender to the ALMIGHTY i.e. the universal force, we kill our EGO, which is the greatest stumbling block in our pursuit of happiness and PEACE, Once we overcome the EGO, our dormant energies become active.
4. **It develops equanimity:-** Prayer focusses our mind on the virtues of the Tirthankars or the person whom we remember and in whose praise we pray. Those virtues get imbibed in us and we also follow and become that which we think and praise.
5. **It is the Fountain Head of Power and Energy:-** Prayer is the fountain HEAD of power and Energy. It frees us from the shackles of negative thinking and attachment to various worldly attractions and pleasures. It helps us in deriving power from the power house of the universe.

To sumup, true prayer cleanses our mind and soul and paves the way for eternal Peace.

The Fruit of Prayer is Faith.
The Fruit of Faith is Love.
The Fruit of Love is Service.
The Fruit of Service is Peace.

-53, Gopalwadi, Jaipur-302001 (Raj.)

FEW PEARLS

Ms. Minakshi Jain (Adv.)

1. Do not expect much from others & get disappointed, but more importantly, do not disappoint those who expect a little from you.
2. A Person dreaming of an ambition without effort, is much similar to a bird flying with wings & no legs to land.

-Surana ki Badi Pole, Nagaur-341001 (Raj.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 64)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(बकुश व प्रतिसेवना कुशील)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– बकुश निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं?

समाधान– बकुश का अर्थ है- शबल, अर्थात् विचित्र वर्ण। शरीर, उपकरण आदि की शोभा-विभूषा करने से जिसका चारित्र शुद्धि और दोषों से विचित्र बना है उसे 'बकुश निर्ग्रन्थ' कहते हैं।

दूसरे शब्दों में जिसके चारित्र रूपी निर्मल वस्त्र में दोष रूपी विविध प्रकार के दाग लग गये हैं। जो शोभा-विभूषा का इच्छुक है, ऊपरी सजावट पर ध्यान रखकर भाव संयम में दोष लगाता है, वह 'बकुश निर्ग्रन्थ' कहलाता है। बकुश निर्ग्रन्थों का चारित्र 'पुलाक' से श्रेष्ठ होता है। उनमें चारित्र भावना भी होती है, किन्तु फैशन प्रियता के कारण वे दोषों का सेवन करते हैं, इसी कारण वे 'बकुश' कहलाते हैं।

जिज्ञासा– 'बकुश निर्ग्रन्थ' कितने प्रकार के होते हैं?

समाधान– बकुश निर्ग्रन्थ दो प्रकार के होते हैं- 1. शरीर बकुश और 2. उपकरण बकुश।

शरीर बकुशः– हाथ, पाँव, मुँह, दाँत आदि को धोकर साफ रखने वाला, चमकाने वाला, केश सँवारने वाला, आँखों में शोभा के लिए अंजनादि लगाने वाला 'शरीर बकुश' कहलाता है।

उपकरण बकुशः– शोभा-विभूषा के लिए अकाल में चोलपट्टा रखने वाला, धूपादि देने वाला, पात्रादि को रोगन आदि लगाकर चमकाने वाला साधु 'उपकरण बकुश' कहलाता है।

ये दोनों प्रकार के साधु अत्यधिक वस्त्र-पात्राद्रि रूप ऋद्धि और यश के चाहने वाले होते हैं और साता गारव वाले होते हैं, इसीलिए रात-दिन के कर्त्तव्य अनुष्ठानों में पूरे सावधान नहीं रह

पाते हैं।

संयम की सुरक्षा एवं पालना हेतु श्रमण-श्रमणियों को अपनी-अपनी समाचारी के अनुरूप शरीर, वस्त्र, पात्रादि की शुद्धि करनी पड़ती है, उस समय सुसज्जित होना, अच्छा दिखने, चमक पैदा करने आदि का जो भाव उत्पन्न हो जाता है वह उन्हें बकुश की श्रेणी में ले आता है।

जिज्ञासा- बकुश निर्ग्रन्थ के अन्य प्रकार कौन-कौन से हैं?

समाधान- बकुश निर्ग्रन्थों की दोष-प्रियता से इनके साथी साधुओं तथा शिष्यादि में भी दोष बढ़ते रहते हैं। शरीर बकुश व उपकरण बकुश इन दोनों प्रकार के बकुश निर्ग्रथों के निम्नांकित पाँच-पाँच प्रकार होते हैं।-

1. आभोग बकुश- शरीर और उपकरणों की विभूषा करना साधु के लिए निषिद्ध है, यह जानते हुए भी शरीर और उपकरण की विभूषा करके चारित्र में दोष लगाने वाला साधु 'आभोग बकुश' है।

2. अनाभोग बकुश- अनजाने में शरीर और उपकरण की विभूषा करने वाला साधु 'अनाभोग बकुश' कहलाता है।

3. संवृत बकुश- छिपकर शरीर और उपकरणों की विभूषा कर दोष सेवन करने वाला साधु 'संवृत बकुश' है।

4. असंवृत बकुश- प्रकट रीति से शरीर और उपकरणों की विभूषा रूप दोष सेवन करने वाला साधु 'असंवृत बकुश' है।

5. यथा सूक्ष्म बकुश- उत्तर गुणों के विषय में प्रकट या अप्रकट रूप से प्रमाद सेवन करने वाला साधु 'यथासूक्ष्म बकुश' है।

शरीर, वस्त्र, पात्रादि में यदि कोई अशुचि हो तो उसे दूर हटाने में बाधा नहीं है, किन्तु शोभा-विभूषा के लिए अच्छा दिखने के लिए उन्हें चमकाना, रगड़ना आदि क्रियाएँ शरीर व उपकरण बकुश बना देती हैं। जीव-विराधना, आत्म-विराधना एवं संयम-विराधना से बचते हुए संयम-सहायक क्रियाएँ करके बकुशपन से बचा जा सकता है।

जिज्ञासा- 'प्रतिसेवना कुशील' किसे कहते हैं?

समाधान– चारित्रवान होते हुए भी जो इन्द्रियों के आधीन होकर पिण्ड विशुद्धि (आहार, वस्त्र, पात्र, शय्या की विशुद्धि) समिति, तप, प्रतिमादि में दोष लगावे, मूल या उत्तर गुणों में आज्ञा की विराधना करे, उसे 'प्रतिसेवना कुशील' कहते हैं।

जिज्ञासा– प्रतिसेवना कुशील के कितने भेद होते हैं?

समाधान– प्रतिसेवना कुशील के पाँच भेद होते हैं– 1. ज्ञान कुशील– ज्ञान के निमित्त से आजीविका करके ज्ञान को दूषित करने वाला। 2. दर्शन कुशील– दर्शन के निमित्त से आजीविका कर दर्शन को दूषित करने वाला, 3. चारित्र कुशील– चारित्र के निमित्त से आजीविका कर चारित्र में दोष लगाने वाला, 4. लिंग कुशील– लिंग अर्थात् वेशभूषा–वस्त्रादि, रजोहरण, मुखवस्त्रिकादि से आजीविका करने वाला, 5. यथासूक्ष्म कुशील– स्वयं के तपस्वी या अन्य विशेष गुणों की प्रशंसा सुनकर हर्षित होने वाला।

जिज्ञासा– बकुश निर्ग्रन्थ व प्रतिसेवना निर्ग्रन्थ में गुणस्थान कौन–कौन से होते हैं?

समाधान– बकुश व प्रतिसेवना इन दोनों ही निर्ग्रन्थों में गुणस्थान छठा व सातवाँ होता है। ये जिनकल्प तथा स्थविर कल्प दोनों ही कल्पों में पाये जाते हैं। किन्तु कल्पातीत नहीं होते हैं। दूसरी अपेक्षा से स्थित कल्प तथा अस्थित कल्प, इन दोनों ही कल्पों में बकुश व प्रतिसेवना निर्ग्रन्थ पाये जाते हैं।

जिज्ञासा– बकुश व प्रतिसेवना निर्ग्रन्थ में वेद कौन–कौन से पाये जाते हैं?

समाधान– क्योंकि बकुश व प्रतिसेवना निर्ग्रन्थ में छठा–सातवाँ गुणस्थान होता है, अतः ये दोनों सवेदी होते है, अवेदी नहीं। सवेदी में भी तीन वेद वाले अर्थात् स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और पुरुष नपुंसक वेदी होते हैं। पुरुष नपुंसक से तात्पर्य यहाँ जन्म नपुंसक तथा कृत नपुंसक दोनों से समझना चाहिए। स्त्री नपुसंक वेदी संयम के अयोग्य होने के कारण वे चारित्र ग्रहण नहीं कर पाते हैं।

जिज्ञासा– बकुश और प्रतिसेवना निर्ग्रन्थ में कौन–कौन से चारित्र होते हैं?

समाधान– बकुश और प्रतिसेवना निर्ग्रन्थों में सामायिक व छेदोपस्थापनीय

ये दो चारित्र होते हैं। भरत-ऐरवत क्षेत्रों में प्रथम व अन्तिम तीर्थंकरों के शासनकाल में ये दोनों चारित्र होते हैं, जबकि मध्य के 22 तीर्थंकरों के शासनकाल में एवं महाविदेह क्षेत्र में सामायिक चारित्र ही होता है, छेदोपस्थापनीय चारित्र नहीं होता। बकुश व प्रतिसेवना निर्ग्रन्थों में छठा व सातवाँ ये दो गुणस्थान ही होने के कारण सूक्ष्मसम्पराय व यथाख्यात चारित्र नहीं हो पाता। परिहार विशुद्धि चारित्र मात्र कषायकुशील निर्ग्रन्थों में ही होता है, अन्य किसी भी निर्ग्रन्थ में नहीं होता।

जिज्ञासा– बकुश और प्रतिसेवना निर्ग्रन्थ प्रतिसेवी होते हैं अथवा अप्रतिसेवी?

समाधान– संज्वलन कषाय के उदय से जो संयम विरुद्ध आचरण करता है वह प्रतिसेवी अर्थात् संयम विराधक कहलाता है। जो किसी भी प्रकार के दोषों का सेवन नहीं करता वह अप्रतिसेवी कहलाता है। बकुश निर्ग्रन्थ प्रतिसेवी होता है, वह मूल गुणों में दोष नहीं लगाता, उत्तर गुणों में दोष लगाने वाला होता है। प्रतिसेवना निर्ग्रन्थ भी प्रतिसेवी होता है, वह मूलगुण तथा उत्तर गुण दोनों में दोष लगाने वाला होता है।

जिज्ञासा– मूलगुण, उत्तरगुण किसे कहते हैं?

समाधान– अहिंसादि पाँच महाव्रतों को मूल गुण कहते हैं, जबकि अनागत, अतिक्रान्त, कोटिसहित इत्यादि दस प्रकार के प्रत्याख्यानों एवं उपलक्षण से पिण्ड विशुद्धि आदि उत्तर गुण कहलाते हैं।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

सूचना

जिनवाणी के लेखकों को सूचित किया जाता है कि गत वर्षों की भांति श्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कृत करने की योजना इस वर्ष भी लागू है। अतः आप अपनी मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण रचना/आलेख अवश्य प्रेषित करें।-सम्पादक

संस्मरण

वीर पिता एवं वीर पितामह : श्रद्धेय पूज्य पिताश्री

श्री प्रकाशचन्द हुण्डीवाल

27 नवम्बर 2010 को संथारापूर्वक दिवंगत हुण्डीवाल के कुल गौरव, रत्नसंघ के प्रति समर्पित पूज्य पिता श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल का जन्म 87 वर्ष पूर्व संवत् 1980 को आश्विनी पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) को श्रावकरत्न श्री हस्तीमल जी हुण्डीवाल की धर्मपरायणा धर्मपत्नी श्रीमती झणकार कंवर जी की कुक्षि से अपने ननिहाल धणारी में हुआ था। उनके जीवन की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं जो हमें निरन्तर प्रेरणा प्रदान करती हैं–

(1) **चारित्रनिष्ठ**– उन्होंने अपने जीवन में न्यायप्रियता, स्पष्टवादिता एवं सत्य को उच्च स्थान दिया। आप स्वावलम्बी एवं सक्रिय थे।

(2) **जीवदया के प्रति तत्पर**– जीवदया के प्रति उनकी विशेष सजगता थी। गायों, कबूतरों, बकरों एवं सूखे के समय मछलियों की जीवनरक्षा हेतु वे तत्पर रहते थे। फलस्वरूप विगत 40 वर्षों से प्रत्येक अमावस्या, पूर्णिमा एवं बदि षष्ठी को गायों को गुड, पाव तथा चारा खिलाते थे।

(3) **सेवाभावी**– गाँव में जिसकी सेवा करने वाला नहीं हो, बीमार हो उन्हें डॉक्टर के पास ले जाना, दिखाना एवं औषधि का कार्य वे तत्परता से करते थे। रोगी के घर जाकर उसकी देखरेख करने में वे हर समय तत्पर रहते थे।

(4) **संघनिष्ठ एवं त्यागी**– वे क्षण स्मरणीय हैं जब सन् 1981 में रायचूर में अपनी पुत्री की दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की, जो सम्प्रति साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की शिष्या के रूप में जिनशासन को दीप्त कर रही हैं। फिर पौत्र ललित एवं पौत्री सीमा को आज्ञा प्रदान की, जो श्रद्धेय लोकचन्द्र जी म.सा. एवं श्रद्धेया सुव्रतप्रभा जी महाराज के रूप में चतुर्विध संघ में यशोवृद्धि कर रहे हैं।

(5) **तपस्वी**– आपने भगवान महावीर निर्वाण की 25 वीं शती पर 47 वर्ष की वय में आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। उसके 2-3 वर्षों पश्चात्

रात्रि में चौविहार-त्याग प्रारम्भ कर दिया था। प्रतिवर्ष संवत्सरी पर चौविहार तेला करते थे। गत 10 वर्षों से सांयकालीन भोजन का त्याग कर दिया था। सन् 2001 से 2010 के मध्य उन्होंने 6 अठाई तप किए। प्रतिदिन उनके डेढ़ पौरसी का नियम था, अतः कई सन्त उन्हें डेढ़ पौरसी वाले श्रावक जी के नाम से पुकारते थे।

(6) **स्वाध्यायी**– सामायिक में प्रतिदिन सात घंटे धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करते थे। फलस्वरूप जैन धर्म का मौलिक इतिहास, ऐतिहासिक काल के तीन तीर्थंकर, नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक सूत्र का उन्होंने अनेक बार स्वाध्याय कर लिया था।

(7) **सम्यक् सोच**– आपकी सोच थी कि धर्म का फल इस जन्म में भी मिलता है।

(8) **समाधिमरण**– मार्गशीर्ष कृष्णा षष्ठी को व्याख्यानी महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के श्री मुख से आपने संथारा ग्रहण किया तथा 27 नवम्बर, 2010 को देह त्याग दी।

हम आपके जीवनकाल में प्रदत्त शिक्षाओं के लिए आभारी हैं। आपने हाथ, बात एवं चरित्र की सच्चाई की सीख सदैव प्रदान की। आपके गुणों का स्मरण कर हम धार्मिक प्रगति करते रहें तथा जीवन को सार्थक करते रहें, यही शुभभावना है।

-2/7, भीकमचन्द जैन नगर, पहला मजला,
पिंप्राला रोड़, जलगाँव-425001 (महा.)

प्रेरक-प्रसंग

जब बात दिल को छू गई

श्री सुरेन्द्र सिंघवी, यू.एस.ए.

एक बार मेरी माताजी एवं मैं जयपुर के लालभवन गए। मेरी माताजी ने मुझसे कहा कि तुम गुरुदेव (आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज) के चरणों से चिह्नित धूलि उठाकर ले आना, यह बहुत उपयोगी है। मैंने ज्योंही ऐसा प्रयास किया, वैसे ही गुरुदेव ने मुड़कर देखा, मुस्कुराए एवं मुझसे बोले- "यह धूलि तुम्हारा कोई भला करने वाली नहीं है, इसके बजाय तुम प्रतिदिन सामायिक एवं स्वाध्याय करो। उससे तुम्हारा भला होगा।" आचार्य भगवन्त की यह वाणी मेरे दिल को छू गई।

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

सूर्यनगरी-जोधपुर में

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** के मुखारविन्द से तथा परम श्रद्धेय **उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.,** की मंगल मनीषा से, महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि मुनिपुंगवों एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती **श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.,** तत्त्वचिन्तिका महासती **श्री रतनकंवर जी म.सा.,** विदुषी महासती **श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.,** व्याख्यात्री महासती **श्री सोहनकंवर जी म.सा.,**आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में

मुमुक्षु बहिन सुश्री कान्ता जी पींचा

की भागवती दीक्षा

वि.सं. 2068 वैशाख शुक्ला द्वितीया, गुरुवार, दिनांक 05 मई 2011 को

अग्राङ्कित कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होंगी।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पण के साथ जैन भागवती दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

दीक्षा-स्थल

आदर्श विद्या मन्दिर माध्यमिक विद्यालय
सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर

आयोजक

श्री ओसवाल समाज बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर, जोधपुर

एवं

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

मुमुक्षु बहिन

सुश्री कान्ता पींचा : परिचय

जन्मतिथि- 01 फरवरी 1987

जन्मस्थान-जोधपुर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा-बी.काम,सी.पी.टी., सी.पी.एल.

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : स्व. श्री भैरुलाल जी-स्व. श्रीमती मानीदेवी जी पींचा

पिता-माता : श्री शांतिलाल जी-श्रीमती कमलादेवी जी पींचा

भाई-भाभी : श्री मुकेशकुमार जी-श्रीमती मीनाक्षी जी पींचा
श्री हेमन्त कुमार जी-श्रीमती सरिता जी पींचा
श्री रवीन्द्र कुमार जी पींचा

बहन-बहनोई : श्रीमती मंजूलता-श्री अशोक कुमार जी कोठारी-चेन्नई (बोरून्दा वाले)

नाना-नानी : स्व. श्री चम्पालाल जी- स्व. श्रीमती सुगनीदेवीजी बाफण मुथा

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, आवश्यक सूत्र, वीरस्तुति, तत्त्वार्थ सूत्र।

आगम वाचनी : अन्तगडदसासूत्र, उपासकदशांगसूत्र, अणुत्तरोववाई, प्रश्नव्याकरण, विपाकसूत्र,उववाइय, रायप्पसेणीय, जीवाजीवाभिगम, पन्नवणा, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, निरयावलिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वण्हिदसा, उत्तराध्यन, दशवैकालिक, नन्दीसूत्र, व्यवहार सूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, 33 बोल, कर्मप्रकृति, गति-आगति, समिति-गुप्ति, लघुदण्डक, ज्ञानलब्धि, कर्मप्रकृति, 47, 50, 800 बोल की बन्धियाँ, 98, 32, 102 बोल का बासठिया, गमा, इन्द्रिय पद, नवतत्त्व, अन्तक्रिया, कर्मग्रन्थ 1,2,3,4 आदि 50 थोकड़े, जीवधड़ा, गुणस्थान स्वरूप, जीव-पज्जवा, अजीव-पज्जवा, कायस्थिति आदि।

स्तोत्र : भक्तामर, कल्याणमंदिर, महावीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से सप्तम कक्षा उत्तीर्ण।

पर्युषण सेवा : तीन वर्ष

वैराग्यावधि : तीन वर्ष

दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम

वि.सं. 2068 वैशाख शुक्ला प्रतिपदा, बुधवार, 04 मई 2011

शोभायात्रा : प्रातः 8.30 बजे वीर परिवार के निवास स्थान ई-190/26, रामेश्वर नगर से प्रस्थान कर प्रमुख मार्गों से होती हुई परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा की सेवा में स्वाध्याय भवन पहुँचकर मांगलिक श्रवण करेगी।

अभिनन्दन समारोह : वीर परिवार एवं दीक्षार्थियों का मध्याह्न 1.00 बजे
स्थान- सुहस्ती भवन, एफ-75, मरुधर इण्डस्ट्रियल एरिया, प्रथम फेज, नसरानी बाईस्कोप के सामने वाली गली में, बासनी, जोधपुर (राज.)

वि.सं. 2067 वैशाख शुक्ला द्वितीया, गुरुवार 05 मई 2011

अभिनिष्क्रमण यात्रा : प्रातः 8 बजे वीर परिवार के अस्थायी निवास स्थान से प्रस्थान कर दीक्षा-स्थल पर पहुँचेगी, जहाँ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के पावन सान्निध्य में दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा पाठ : परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से।

विनीत

सुमेरसिंह बोथरा-अध्यक्ष, गौतमचन्द हुण्डीवाल-कार्याध्यक्ष, पूरणराज अबानी-महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

एवं

इन्दरचन्द देसरला/अमरचन्द सदावत	भंवरलाल चौपड़ा	पारसमल ओस्तवाल
संरक्षक	अध्यक्ष	मंत्री

श्री ओसवाल समाज, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर

प्रसन्नचन्द बाफना	मानेन्द्र ओस्तवाल
अध्यक्ष	मंत्री

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

निवेदक

वीर परिवार

श्री भँवरलाल, चम्पालाल, शांतिलाल एवं समस्त पींचा परिवार

मूल निवासी-भोपालगढ़, हाल मुकाम-सरस्वती नगर, जोधपुर

दीक्षा महोत्सव व पारणा कार्यक्रम के लाभार्थी

ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर, जोधपुर

अक्षय तृतीया एवं वर्षीतप पारणक महोत्सव

शुक्रवार, दिनाँक 06 मई 2011

तप और दान के विशिष्ट पर्व 'अक्षय तृतीया' पर आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के मुखारविन्द से तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर तप-साधकों के साथ अनेक श्रद्धालुजन नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करेंगे और लाभार्थी ओसवाल समाज बासनी, सरस्वतीनगर, जोधपुर श्री संघ के तत्त्वावधान में आयोजित तप पूर्णाहुति समारोह में भाग लेंगे। अक्षय तृतीया महोत्सव का आयोजन सुहस्ती भवन, एफ-75, मरुधर इण्डस्ट्रियल एरिया, प्रथम फेज, नसरानी सिनेमा के सामने वाली गली में, बासनी, जोधपुर में रखा गया है। एकान्तर तप-साधक अपने नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख कर जानकारी सम्पर्क-सूत्र के पते पर फोन अथवा पत्र द्वारा अवश्य दें। आवश्यक जानकारी सम्पर्क सूत्रीय पतों पर की जा सकती है।

दीक्षा समिति

1. श्री कांतिलाल जी चौधरी, धुलिया, संयोजक
   फोन : 02562-233994/234309,98231-72765
2. श्री मीठालाल जी मधुर, बालोतरा, सह-संयोजक
   फोन : 02988-220459, 94141-08849

वीर परिवार सम्पर्क-सूत्र

1. श्री शांतिलाल जी मुकेशकुमार जी पींचा
   ई-190/26, रामेश्वर नगर, बासनी, जोधपुर-342001 (राज.)
   फोन : 0291-2745722/94131-21110/94141-45049

सम्पर्क सूत्र :

1. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
   घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) 2641445/2636763
2. श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, संरक्षक
   श्री ओसवाल समाज बासनी सरस्वती नगर, जोधपुर 2722136/2742138
3. श्री भंवरलाल जी चौपड़ा, अध्यक्ष
   श्री ओसवाल समाज बासनी, सरस्वती नगर, जोधपुर 2724718/94140-10385
4. श्री पारसमल जी ओस्तवाल, मंत्री
   श्री ओसवाल समाज बासनी, सरस्वती नगर, जोधपुर 2721391/94144-98815

कविता

गुरु हस्ती शतक (2)

श्री प्रसन्नचन्द बाफना

सघं समर्पित शासनसेवी गुरुभक्त श्रावकरत्न श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना ने अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में युगमनीषी अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज पर 108 पद्यों की रचना की है। उन्होंने इस काव्य रचना में 'नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ को आधार बनाया है, जिसकी पृष्ठ संख्या साथ में अलग से दी जा रही है।

पृ.सं.

रायचूर की अब आई बारी, भागी महामारी तप तेज की मारी।86/87
नगर चौमासा विनती भारी, शेषकाल बम्बई स्वीकारी।।39। 88
लासलगाँव का अगला चौमासा, मनमुटाव हुआ दूर प्रवासा। 89
बड़लू में जिनवाणी प्रकाशा, माता महासती अन्तिम श्वासा।।40। 89
दो हजार का उज्जैन चौमासा, जवाहराचार्य का सुरपुर वासा। 91
आषाढ़ शुक्ल बीज दिन सासा, मुनि माणक त्यागी गृह आशा ।।41। 90
पहली साल जयपुर चौमासा, उदयपुर की पूरी नहीं आशा। 92
भीलवाड़ा, भिनाय को फरसा, प्राज्ञ पूज्य से मिलने खासा।।42। 92
जयपुर चातुर्मास ब्यावर पधारे, मधुकरमुनि से हुआ प्रेम वधारे। 92
बड़लू को महत्व दिया स्वीकारे, पूज्य रत्न शताब्दी आप पधारे ।।43। 92
उत्कृष्ट ज्ञान क्रिया आराधक, पूज्य रत्नचन्द्रजी क्रियोद्धारक। 92
स्मृति में सम्यग्ज्ञान प्रचारक, मण्डल का बना बड़लू स्थापक।44। 92
तीन सम्प्रदायों की संयुक्त विनती, होगया चौमासा जोधानगरी। 93
उत्साह-उमंग से जनता उमड़ी, पूज्य शोभा की भूमि सखरी ।।45। 93
अब पाली होकर सोजत राजे, पूज्य गणेशीलालजी यहाँ विराजे। 94
तीन का चौमासा बड़लू छाजे, लक्ष 'बिकाणा' पुनः बारणी काजे।।46। 94
वीरपिता रीड़मलजी भण्डारी, सायर-मैनाजी की दीक्षा तैयारी। 95
वृद्ध महासतियों की विनती भारी, अजमेर चौमासा आई बारी।।47। 95
पाँच का चौमासा ब्यावर ने जीता, शास्त्रों के अवगाहन में बीता। 96

कुचामन में 'सिद्धान्त-सार' गीता, कनीरामजी ने लिखी विख्याता।।48। 96
दो हजार छः पाली सुखदाया, 'मिहो कहाहिं न रमे' फरमाया। 97
पीपाड़ चौमासा बिजयनगर आया, मीरानगरी ने अवसर पाया।।49। 100
प्रजातान्त्रिक ढंग अधिकार की माया, श्रमण संघ में उचित नहीं बतलाया। 100
शास्त्र प्रतिपादित श्रमणाचार समाया, समाचारी निर्माण पर बल फरमाया।।50। 100
बाईस सम्प्रदायों का सादड़ी सम्मेलन, प्रतिनिधि हुए उपस्थित चौपन। 102
भावना प्रबल विशुद्ध हित जिनशासन, एक आचार्य, हो श्रमण संगठन।।51। 102
एकरूपता सम्बन्धी विचार मंथन, आपकी भूमिका थी बड़ी गहन । 103
सुदृढ़ समाचारी दृढ़ता से पालन, सबने माना आपका चिन्तन।।52। 103
नागौर लक्ष पुनि जोधाणा पधारे, मुनि चौथमलजी संथारा धारे। 104
स्वर्ग गमन तक पाथेय सहकारे, तेरस को पहुँचे नगीना द्वारे।।53। 104
छः महापुरुषों का संयुक्त चौमासा, विक्रम दस का आज भी ताजा। 106
सिंहपोल में चला विचार धमासा, सर्वसम्मत निर्णय सबका साझा।।54। 106
माघ कृष्णा में घटना हुई सहसा, स्वामी सुजान पहुँचे सुरलोका। 106
साथ गणनाथ पूरण हुई आशा, कर आलोचना सुधारा परलोका।।55। 106
संस्कार निर्माण पर जोर लगाना, ग्यारा का चौमासा जयपुर माना। 107
छोगाजी महासती की रखी भावना, अजमेर चौमासा का परवाना।।56। 108
तेरह में हुआ भीनासर सम्मेलन, निर्णय अनेक हुए महत्त्वपूर्ण। 109
एकल विहार स्वच्छन्द विचरण, ध्वनि वर्धक का किया वर्जन। ।57। 109
इस वर्ष हुआ बीकानेर चौमासा, किशनगढ़ किया अगला वासा। 110
संवत्सरी दिन उनपचास पचासां, कॉन्फ्रेन्स मुखपत्र में खुलासा।।58। 111
पन्द्रह का चौमासा दिल्ली चावा, आचार्य आत्मा का पंजाब बुलावा। 113
अमरमुनि का स्वास्थ्य नहीं सावा, आग्रह टाल लक्ष्य बनाया सेवा।।59। 114
पन्द्रह ने स्वाध्यायी व्रत धारा, व्यवस्थित हुआ स्वाध्याय संघ काजा। 115
विनयचन्द्र ज्ञान भण्डारा, जयपुर चातुर्मास में काम हुआ ताजा।।60। 116
सत्रह का अजयशहर चौमासा, वातावरण में था खूब उल्लासा। 118
प्रथम स्वाध्यायी शिविर की आशा, जोधपुर की अरजी साधुभाषा।।61। 119
सिंहपोल में सिंह जगाया, अठारह का चौमासा फरमाया। 124
स्वाध्याय का शंख गुंजाया, तप संवर का काम सवाया।।62। 131

बूढ़े को याद किया फरमाया, पूज्य गणेशी ने प्रेम दरसाया। 131
झीलसागर देखण नहीं आया, गणेशसागर से मोती चाया।।63। 131
अब सैलाना चातुर्मासार्थ आये, रांकाजी प्यारा हनुमन्त कहाये। 134
संजीवनी पहाड़ उठाकर लाये, अभिनन्दन कर संघ हरषाये।।64। 135
बीसा वैशाख की चांदनी तेरस, मगन मान की दीक्षा श्रेयस। 142
उपाध्याय मान की वाणी सरस, दशों दिशाओं में है सुयश।।65। 142
अनुशासन की पीपाड़ में शिक्षा, मर्यादा पालन, हो न उपेक्षा। 144
वर्तमान आचार्य हीरा की दीक्षा, बढता रहे संघ यही अपेक्षा।।66। 145
इक्कीस का चौमासा इक्कीसा, रत्नसंघ की कर्मभूमि खासा। 147
इतिहास लेखन का श्री गणेशा, बड़लू में हुआ काम विशेषा। ।67। 148
बाईस का बालोतरा चौमासा, परस्पर मतभेद हुआ बाई सा। 150
रोटी बेटी व्यवहार खुलासा, मिट गया सिंवाची का क्लेशा।।68। 151
पालनपुर, पाटन आप पधारे, प्राचीन ज्ञान भण्डार निहारे। 153
पूज्य घासीलालजी हर्ष वधारे, मारवाड़ सरताज कहा विस्तारे।।69। 154
चौमासा अहमदाबाद बड़ौदा पधारे, यहां हैं अनेक ज्ञान भण्डारे। 155
आलोडन कर कर तथ्य निखारे, इतिहास लेखन का बना आधारे। ।70। 156
चौबीस का चौमासा जयपुर, समयधर्मी आये बाधा बनकर। 158
युगीन परिवर्तन के धुरन्धर, अनुशासन उन्हें नहीं था रुचिकर। ।71। 159
पाली,नागौर, मेड़ता ज्ञान-गंगा, आया दीक्षा अर्ध शताब्दी प्रसंगा। 161/165
मेरा क्या ? जीवन निर्माता की चंगा, छात्र ज्ञानेन्द्र को मंत्री तमगा।।72। 165
अठबीस चौमासा जोधाणा आया, कार्यकर्त्ता संघ बल है फरमाया। 170
त्यागव्रतियों से ही संघ महकाया, शीर्ष कंगूरों को शोभा बतलाया।।73। 173
उनतीस का चौमासा किया कोसाणा, पूरण कृपा पधारे जोधाणा। 174
तीस का चौमासा जयपुर बधाणा, तपस्या का ठाट लगाणा। ।74। 176
भरतपुर से आगरा पधारे, कविजी पद का सम्मान वधारे। 178
विषय ज्ञान-क्रिया पर सारे, व्याख्यान-चर्चा हुई विस्तारे। ।75। 178
कर्मों के आवरण का घेरा, वीतरागतामय स्वभाव है मेरा। 180
वर्ष तिरेपन संयम का सवेरा, राग-द्वेष का मैं नहीं चेरा। ।76। 180

(क्रमशः)

नारी-स्तम्भ

अजन्मी बेटी की पुकार

श्रीमती सुशीला बोहरा

माँ!
अरे! कैसे कहूँ तुम्हें माँ?
वह माँ थी जो नौ महीने मेरे,
आने की राह देखती थी।
और तुम तो पेट में आते ही
मेरे जाने की राह देखती हो,
कभी सोनोग्राफी करवाती हो,
कभी डॉक्टर के पास जाती हो,
कभी टेबलेट खाती हो
और मैं न जाने की जिद करूँ तो?
डॉक्टर से कह काट-काट कर
मुझे बाहर फिंकवा देती हो।
अरे! तुम्हें कैसे कहूँ माँ?
तुम तो कातिल हो।
अरे! कातिल को तो सरकार दंड देती है।
पर अब! पापा कातिल की
पीठ शाबास! कह थपथपाते हैं
माँ! मुझे बचा लो
क्या! तुम्हें मेरी चीख सुनाई नहीं पड़ती?
हाँ! यही वर्तमान का सच है
क्योंकि तुम व्यस्त हो,
सहेलियों में, कीटी पार्टी में
क्रिकेट के मेच देखने में
और टी वी के नये सीरियलों में

और बस एक ही बच्चा अच्छा
देख विज्ञापन, झटपट निर्णय कर
डॉक्टर के पास पहुँच जाती हो।
पर माँ! मैं दुनियाँ में आना चाहती हूँ
सच माँ! तुम्हें कोई तकलीफ न दूँगी
तुम्हारे हर कार्य में हाथ बटाऊँगी
पढ़ लिखकर अपने पैरों पर
खड़ी हो जाऊँगी।
और भैया की तरह
डॉक्टर बनूँगी, इंजीनियर बनूँगी
और भी बहुत कुछ बनूँगी,
बस माँ! मुझे जन्म लेने दो।
तुम्हारा बड़ा अहसान होगा
माँ! भगवान के लिये
इस रिश्ते पर कालिख न फेरो
जिसके आगे दुनियाँ के सारे रिश्ते फीके हैं
पर माँ! क्या? तुम्हें डर लगता है?
सड़ी गली दहेज की प्रथा से
या मँहगाई की मार से
पर सच माँ! मैं बड़ी होकर
तुम्हारे इस कर्ज को
सेवा से उतार दूँगी।
माँ! प्रकृति से मत खेलो
अभी तुम आँख दिखा रही हो
कल वो तुम्हें आँखें दिखायेगी
सारा समाज हिल जायेगा
परिवार का ढ़ाँचा ही बदल जायेगा
दुनियाँ का दस्तूर ही बदल जायेगा

तुम्हारे बेटों के लिये,
बहुएँ नहीं मिलेंगी
सोचो! क्या होगा?
माँ! कुछ तो सोचो
कहीं बाद में पछताना न पड़े
नरक, निगोद में जाना न पड़े
फिर रोने से कुछ नहीं होगा
कोई तुम्हें बचाने नहीं आयेगा
संभलो माँ! संभलो
अरे!यह तो खून का रिश्ता है
कहीं इस रिश्ते का ही खून न हो जाय
जागो! समय तुम्हें पुकार रहा है
अंगडाई लो!
बस जीत तुम्हारी होगी
तुम्हारे प्यार की होगी
तुम्हारे ममत्व की होगी
और हमारे तुम्हारे रिश्तों की होगी
माँ! जागो.....।

-संयोजक, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

अनमोल वचन

श्री एन.के. जैन, बैंगलोर

1. आसक्ति को मिटाना ही धर्म-साधना है।
2. बाहर में मंगल है या नहीं, भीतर में मंगल आना चाहिए।
3. सार्थक बनो जीवन में अपने आप पुण्यवानी मिलेगी।
4. भक्ति के द्वारा भक्त बन सकते हैं, समर्पण के द्वारा भगवान बन सकते हैं।
5 इस दुनियाँ में सबसे Power Full आशीर्वाद है।

- महासती श्री भाग्य प्रभा जी के प्रवचनों से संकलित

युवा-स्तम्भ

युवा बनें आदर्श

श्री त्रिलोकचन्द जैन

आज समस्त विश्व में तनाव, बिखराव और भटकाव दृष्टिगोचर हो रहा है। सभी अपने में कोई न कोई कमी अनुभव कर रहे हैं। इस भौतिकता की चकाचौंध रूपी प्रबल वेग की आँधी में जो व्यक्ति अपनी कमियों को दूर कर पर की सेवा रूपी दीपक को जलाने में सक्षम होता है वह अनेक व्यक्तियों का आदर्श बन जाता है। आज की युवा शक्ति को आगे बढ़कर अपना जीवन आदर्श बनाना चाहिये, जिससे कि अनेक लोग उनके अनुगामी बनकर अपना जीवन खुशहाल कर सकें।

तुम्हें स्वयं ही स्वर्णिम उज्ज्वल, निज इतिहास बनाना है।
करो सदा सत्कर्म विहंसते, कर्म योग अपनाना है।।

आदर्श बनने के लिये युवाओं को निम्नलिखित बिन्दुओं को अपने जीवन में आत्मसात् करना आवश्यक है-

1. पवित्र विचार:- 'सत्त्वेषु मैत्रीम्' 'मित्ती मे सव्वभूएसू' 'सव्वे पाणा पियाउआ' आदि आगम-वचन पवित्र विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं। हमारी सोच में प्रत्येक प्राणी के प्रति उपकार की भावना फलवती होनी चाहिये। हमें प्रत्येक कार्य पवित्र उद्देश्य से करना है तभी हम आदर्श जीवन के नजदीक पहुँच पायेंगे। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. की पवित्र वाणी से निसृत विचार भी यहाँ मननीय हैं यथा- ''वर्तमान आवश्यक कार्य को सर्वहित प्रवृत्ति के साथ, लक्ष्य पर दृष्टि रखते हुए, पवित्र भावना के संग, फलासक्ति को छोड़कर, पूरी शक्ति लगाकर, सही रीति से सम्पन्न करना चाहिये।'' हरपल प्रत्येक प्राणी के प्रति सद्भावना प्रस्फुटित होनी चाहिये कि कोई भी प्राणी दुःखी न रहे अथवा उसमें दुःख सहने की शक्ति प्राप्त हो अथवा मैं उसका दुःख दूर कर सकूँ। सम्यक् विचारों का आदान-प्रदान हमें श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करता है।

यदि आपके पास एक रूपया है और किसी अन्य के पास भी एक रूपया है। इन्हें आपस में बदल लेने पर दोनों के पास एक-एक रुपया ही रहता है।

किन्तु यदि आपके पास एक बेहतर विचार है और किसी अन्य के पास भी एक बेहतर विचार है तो आपस में बदल लेने पर दोनों के पास दो-दो बेहतर विचार हो जाते हैं। पवित्र विचार जब भाषा रूप लेते हैं तो मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. के भजन की कड़ियाँ बन जाती हैं-

मधुर व्यवहार हो अपना, मधुरता हो वचन में,
टूटे ना दिल किसी का, बसे वो प्रेम मन में।
क्षमा का पाठ पढ़ा है, अभी सहना है बाकी,
गुरु ने राह दिखाई, अभी चलना है बाकी।।

पवित्र विचार होने पर व्यक्ति सभी का प्रियपात्र बन जाता है और सभी उसके अनुगामी बनने लगते हैं।

2. उदारवादी चिंतन- उदार दिल रखना, बड़े दिलवाला बनना, मैं को हम में बदलना भी एक विशेष सद्गुण को जीवन में आत्मसात् करना है। Simple Living and High Thinking. अर्थात् 'सादा जीवन उच्च विचार' हमारे जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिये। रेलवे लाइन भी तीन प्रकार की होती है- नैरो गेज, मीटर गेज तथा ब्रोड गेज। लेकिन ब्रोड गेज पर चलने वाली रेलें ही सबसे तेज गति वाली व आरामदायक होती हैं। बस हमें भी Broad Mind या उदारवादी चिंतन रखना है जिससे हम दुनियाँ की भेड़ चाल से अलग तेज गति से चल सकें और खुशहाल जीवन जी सकें।

मानवता की महक, परोपकार की पराग एवं सदाचार की सुवास से युक्त चिंतन जिसके पास है, वह व्यक्ति धरती को भी स्वर्ग बना देता है। उदार चिंतन से उसका मन मयूर हर समय प्रफुल्लित रहता है। वह आदर्श पथ पर कदम बढ़ाता रहता है। वह मन में बस यही विचार करता है-

मेरा पथ है प्रेम स्नेह का, मैं क्या जानूँ कौन गैर है।
मैं सबका हूँ सब हैं मेरे, मैं क्या जानूँ कौन वैर है।
सबके आँसू मेरे आँसू, सबका हास्य हास्य है मेरा।
सबका सुख-दुःख मेरा सुख-दुःख, एक हुआ सब मेरा तेरा।।

किसी को तुच्छ नहीं मानकर सभी को उच्च मानने का उच्च चिंतन रखने वाले आदर्श व्यक्ति का पथ सभी अपनाना चाहते हैं।

3. चरित्र की निर्मलता– चरित्र व्यक्ति के जीवन का थर्मामीटर है। चरित्रहीन शिष्य को शास्त्र में सुअर तथा सड़े कान वाली कुतिया के समान बताया गया है। चरित्र की निर्मलता से ही चारित्र रूपी उत्कृष्ट रत्न की सम्यक् आराधना संभव है। जब हम दूध में मिलावट पसंद नहीं करते, कार में खराबी नहीं चाहते, मुँह में बदबू बर्दाश्त नहीं करते, फिर भला चरित्र में किसी भी प्रकार की ढिलाई व समझौता क्यों? ध्यान रहे– Character is Lost Everything is Lost. चरित्रहीन व्यक्ति इस दुनिया में सबसे निर्धन है।

Good बने बिना कोई God नहीं बन सकता है। जो व्यक्ति मन और इन्द्रियों को नियंत्रण में रखकर चरित्रवान का अनुसरण करता है, आंतरिक और बाह्य सभी प्रलोभनों का प्रतिरोध करता है, और जिसके हृदय में अनुकम्पा, उदारता, निःस्वार्थता का निवास है, जो ईमानदार व व्यवहार कुशल हो, जिसके बोलने में मधुरता हो, जिसमें साहस व दृढ़ता हो, वही श्रेष्ठ मानव है। जाति से कोई सरोकार नहीं, बस कर्म उसके अच्छे होने चाहिए। इस चरित्र के कारण ही सुदर्शन सेठ, पूणिया श्रावक, अंजना सती, सुभद्रा सती आदि हमारे आदर्श हैं। चरित्र की महत्ता को हम भी समझें और इसे कोडियों के भाव नहीं गिरने दें। चरित्र की महत्ता का अनुभव कर चरित्र निर्माण करेंगे तो अनेक लोग हमारे पथगामी बनेंगे।

4. आहार का संयम– जीवन आदर्श बनाने के लिए शरीर–पोषक आहार का संयमन भी अति आवश्यक है। प्रत्येक प्राणी को जीवन चलाने के लिए आहार करना अनिवार्य है, लेकिन स्वल्पाहारी तथा संयमित आहारी ही अपने आपको स्वस्थ एवं प्रसन्न रख सकता है और प्रसन्न व्यक्ति लोकप्रियता को प्राप्त होता है, कहा भी है– जैसा खावे अन्न, वैसा रहे मन।

हमें आहार चित्त की पवित्रता से एवं वित्त की शुद्धता से मितरूप में ही करना चाहिये। शास्त्रों में साधु के आहार ग्रहण करने के छह कारण बताये हैं। उसी प्रकार गृहस्थ भी अपने जीवन में प्रसन्नता, मुदिता को बढ़ाने एवं धर्मसाधना में सहायक शरीर के पोषण के लिए आहार करता है। विद्यार्थी के पाँच लक्षणों में एक लक्षण अल्प आहारी होना है। अति गृद्ध होकर आहार करना ब्रह्मचर्य

विनाशक होता है। कहा भी है- जो वित्तरागी बन गया वह कभी भी वीतरागी नहीं बन सकता है। इसी प्रकार आहार में गृद्ध एवं लोसुप व्यक्ति साधना में आगे नहीं बढ़ सकता। शास्त्रों में आहार का पुरुष एवं स्त्री की अपेक्षा से भी प्रमाण बताया है और आहार के नियमन-संयमन रूप छह प्रकार के बाह्य तप भी बताए गये हैं। इन तपों की आराधना करके व्यक्ति समाज में आदर्श जीवन स्थापित कर सकता है।

5. धन का सदुपयोग- पुण्य एवं पुरुषार्थ से व्यक्ति को धन, सम्पत्ति, वैभव प्राप्त होता है। अनेक लोगों को सम्पत्ति-वैभव जन्म से ही प्राप्त हो जाता है, लेकिन उसके समुचित उपयोग की कला वे जिन्दगी भर नहीं सीख पाते हैं। धन शब्द में दो अक्षर है- 'ध' अर्थात् धारण करना और 'न' अर्थात् नहीं। जो हमको धारण करने में समर्थ नहीं है, त्राण रूप नहीं है, वह धन है। लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तो वह त्राण क्या प्राण रूप माना जा रहा है और व्यक्ति इसकी अन्धी दौड़ में अपने जीवन आदर्शों को मटियामेट करता जा रहा है। धन को सर्वस्व मानकर अपने भाई-बन्धु, माता-पिता एवं अपने सिद्धान्तों की सर्वस्वता को लुटा रहा है।

इस धन का सदुपयोग तभी है जब यह किसी दुःखी जीव के आँसू पोंछने में काम आये, किसी अनपढ़ को ज्ञान कराये, भिखारी का दारिद्य मिटाने में सहायक बने। जो दान में दिया उसे ही जिन्होंने असली पूँजी माना उन सेठ हुकमचन्द जी इन्दौर को सभी याद करते हैं। जगडुशाह, भामाशाह आदि इतिहास प्रसंग भी दृष्टिगोचर होते हैं। हमारे सभी तीर्थङ्कर भी एक वर्ष तक दान देकर धन के सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

जीवन रूपी गाड़ी को सही रूप से चलाने के लिए पेट्रोल व कूलेण्ट की आवश्यकता के रूप में क्रमशः धन व धर्म हैं। धन पेट्रोल का कार्य कर सकता है लेकिन यदि धर्म रूपी कूलेण्ट (पानी) नहीं हुआ तो जीवन में निश्चित ही आग लग जायेगी। प्रसिद्ध प्रबन्ध व्यवसायी श्री घनश्यामदास जी बिड़ला ने भी अपने अन्तिम समय में अपने पुत्रों को धन के सदुपयोग के लिए शिक्षा दी कि- "जीवन में धन का सदुपयोग परोपकार करके करना, नहीं तो यह धन नष्ट होने में देर नहीं लगती है। पराये का दुःख दूर करने में किया धन ही उसका सदुपयोग

है। धन का कण भी साथ में जाने वाला नहीं है।''

अक्षय धन परिपूर्ण खजाने, शरण जीव की होते।
तो अनादि के धनी सभी, इस भूतल पर ही होते।।

अतः धन का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति समाज व देश में प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है और सभी उसे अपना आदर्श बनाते हैं। क्योंकि वह दूसरों के दुःख से खेदित बनता है। धन के सदुपयोग करने वाले आदर्श जीवन से युक्त होते हैं।

6. कर्त्तव्य परायणता– जो कार्य करके आत्म सन्तुष्टि प्राप्त हो तथा जो कार्य मन में बेचैनी उत्पन्न करने वाले न हों उन्हें करना व्यक्ति की सच्ची कर्त्तव्यनिष्ठा है। कर्त्तव्य मानव जीवन का अनिवार्य तत्त्व है। सारे जग की सुव्यवस्था कर्त्तव्यपरायणता पर ही निर्भर है।

कर्त्तव्य इन्सान को महान् बना देता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति कर्त्तव्य की पगदण्डी पर चलता रहे तो वह राष्ट्र भी महानता की श्रेणी में आ जाता है। कर्त्तव्य का पालन करने वाला आदर्श व्यक्तित्व का धारक बनता है और सबके लिए परम प्रेरणादायी स्तम्भ का कार्य करता है।

7. अप्रिय प्रसंग–विस्मरण– जीवन अविरल चलने वाली हवा के झोंके के समान है जो कभी तो सरसराहट रूपी हल्की–हल्की मनमोहक हवा के रूप में मन को प्रसन्न करने वाली होती है तो कभी–कभी अन्धड, धूल, मिट्टी को लेकर आयी आँधी के समान मन को उद्विग्न करने वाली होती है। मन के हारे हार हुई है मन के जीते जीत सदा, सावधान मन हार न जाने मन से मानव बना सदा। सभी के जीवन में अप्रिय प्रसंग घटित होते हैं और वे ही उन्हें इस जीवन युद्ध में लड़ने का सामर्थ्य प्रदान करते हैं। आदर्श बनने वाले उनका विस्मरण करके समभाव की साधना को अपनाते रहते हैं।

गिराएं जाएं वे गिरि से, या गिरि ही आ गिरे उन पर,
भयानक मौत भी आ जाये, तो भय खाया नहीं करते।
भरोसा है जिन्हें अपने सिदक पर और सद्गुरु पर,
तमन्नाओं में दामन मन का उलझाया नहीं करते।।

अनेक अप्रिय प्रसंगों को भुलाकर जो वर्तमान में वर्धमान की राह को अपनाता है वही सफलता की सीढ़ी पर चढ़ता है और आदर्श व्यक्ति बनता है

और ऐसे आदर्श के प्रत्येक कार्य को अपने जीवन का लक्ष्य मानने वालों की कमी नहीं होती है।

8. सम्यग्ज्ञान दर्शन– जीव का लक्षण ज्ञान-दर्शन है, लेकिन व्यवहार जगत में हमें हेय, उपादेय की अभिव्यक्ति कराये वह ज्ञान तथा हमारा नजरिया, दृष्टिकोण दर्शन होता है। यदि व्यक्ति का ज्ञान और दर्शन सम्यक् अर्थात् सही और सकारात्मकता लिए होता है तो वह आदर्श व्यक्तित्व का धारक बनता जाता है।

दूध कम था। माँ ने अपने दोनों बेटों को आधा-आधा गिलास दूध दिया। एक की नज़र गिलास के दूध पर थी, सन्तोष था। गटगट खुशी-खुशी पिया और स्कूल चल दिया। दूसरे की नज़र गिलास के खाली भाग पर थी, असन्तोष था। चिल्लाया, गिलास खाली क्यों? गिलास उठाई और फेंक दी। बगैर दूध पिये ही स्कूल चल दिया। जिसकी दृष्टि भाव पर है, जो सन्तोषी है, वह सुखी है। जिसकी दृष्टि अभाव पर है, जो असन्तोषी है, वह दुःखी है।

इस प्रकार सम्यक् जानकारी और सम्यक् दृष्टिकोण पर प्रसन्नता निर्भर रहती है। इस प्रकार व्यक्ति सम्यक् सोच और सकारात्मक पहलुओं से आगे बढ़ता हुआ महान् बन जाता है और सामान्यजन उसका अनुगमन करना चाहते हैं।

उक्त अष्ट बिन्दुओं को अपने जीवन में ग्रहण कर युवा खुशहाल जीवन व्यतीत कर एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। जिससे वे नई पीढ़ी के रोल मॉडल बन सकते हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक रॉल मॉडल तो होता ही है। बस हम भी ऐसा ही आदर्श जीवन बनाएँ जिससे हम अपने इस दुर्लभ मानव भव में अपने अस्तित्व से गौरवान्वित महसूस कर सकें। जीवन के प्रत्येक पड़ाव को उसी तरह जीयें जिसका कि अन्य अनुगमन कर सकें।

बचपन आया मैंने उसको जीवन की हर आशा दे दी,
यौवन आया मैंने सुन्दर कर्मों की अभिलाषा दे दी।
जबकि बुढ़ापा आया अनुभव और ज्ञान की भाषा दे दी,
आई मौत उसे तब हँसकर जीवन की परिभाषा दे दी।।

-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

बाल-स्तम्भ

अन्तसमे मणिज्ज छप्पिकाए

डॉ. मंजू सांड

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 मई 2011 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक बार मगध-नरेश श्रेणिक ने राज सभा में बैठे हुए सामन्तों की ओर एक प्रश्न-भरी दृष्टि डाली। सहसा सबके हाथ जुड़ गये और दृष्टि महाराज की मुख मुद्रा पर टिक गई। मगधेश ने पूछा-''राजगृह में अभी सबसे सस्ती और सुलभ खाद्य वस्तु क्या है, जिसे प्राप्त करके साधारण मनुष्य भी अपनी क्षुधापूर्ति कर सके?''

मगधेश के प्रश्न पर सामन्त गम्भीर हो गये। विचार के पंख फड़फड़ाने लगे-''अन्न सबके लिए सुलभ है, सस्ता भी है। पर कहाँ सस्ता और सुलभ है वह? कृषक कितना कष्ट उठाकर एक-एक दाना धरती के गर्भ में बोता है, खून-पसीना एक कर देता है, थोडे से अन्न के लिए। फिर भी खेती तो बिल्कुल भाग्य पर निर्भर है। कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि। कीट, पतंग, रोग! कितने दुश्मन हैं उसके? अनेक कठिनाइयों के बाद थोड़ा सा अन्न किसान के हाथों में पहुँचता है। फिर यह सुलभ कैसे हुआ? अन्न क्रय करने के लिए भी धन चाहिए। अन्न से तो मांस सुलभ है। शिकार के लिए निकल गये जंगल में एक बाण से दो-चार हिरण या खरगोश मार डाले कि बहुत-सा मांस मिल जाता है। शिकार का आनंद भी और भोजन के लिए मांस भी। एक तीर से दो शिकार। भोजन का इससे सस्ता और सुलभ साधन दूसरा क्या हो सकता है? न प्रकृति की अधीनता, न कोई अधिक श्रम! मनुष्य जब चाहे तब प्राप्त कर सकता है।''

मगधपति ने सामन्तों को मौन देखकर अपना प्रश्न पुनः दुहराया। तभी एक सामन्त ने अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा-"महाराज! सबसे सस्ती चीज मांस है, जिसे मनुष्य जब चाहे तब सहज ही से प्राप्त करके अपना गुज़र कर सकता है।" दूसरे सामन्त ने भी सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की। जंगल में पशु-पक्षियों की क्या कमी है। धनुष-बाण लिया, और मार लाए दो-चार पशु या पक्षी। बन गया काम। न कुछ मेहनत, न कुछ खर्च।"

कोई शिकार का रसिक था, तो कोई मांसाहार का कीडा। एक-एक करके सभी सामन्त प्रथम सामन्त की बात का समर्थन करते चले गए। मगधपति ने महामात्य अभयकुमार की ओर देखा। अभयकुमार गम्भीर चिन्तन की मुद्रा में चिबुक पर हाथ रखे बैठे थे। मगधेश के प्रश्न और सामन्तों के उत्तर पर अभयकुमार का यह गम्भीर मौन सभासदों के हृदयों को चंचल कर रहा था। अभयकुमार ने कहा-"महाराज! प्रश्न इतना सरल नहीं कि तुरन्त इसका उत्तर दे दिया जाय। मैं सोच विचार के लिए आज की रात का अवकाश चाहता हूँ। कल प्रातःकाल, हो सका तो श्रीचरणों में उत्तर उपस्थित कर दूँगा।"

सभा विसर्जित हो गई। मगधेश का प्रश्न अनुत्तरित ही रह गया। आज का यह प्रश्न आज का ही नहीं था। यह वह प्रश्न था, जो मानवता के परम सत्य को उजागर करने के लिए था। अभयकुमार इसी सत्य को उजागर करने की चिन्ता में थे। "मनुष्य का मन कितना विचित्र है। अपने प्राण उसे प्रिय हैं। पर, दूसरे के प्राणों का कोई मूल्य नहीं उसके लिए? क्या दुर्बल और निरीह प्राणी का जन्म मानव के भोजन के लिए हुआ है? उसके अपने जीवन का कोई महत्त्व नहीं? असंख्य स्वर्णमुद्राओं से भी दुर्लभ ये प्राण क्या शिकारी के एक बाण से भी अधिक सुलभ और सस्ते हैं? नहीं, यह तो अज्ञान है। जब तक अपने प्राणों के समान दूसरे के प्राणों का मूल्य नहीं समझा जाता, तब तक मनुष्य यों ही बहकता रहेगा। 'पर' के साथ 'स्व' की ऐक्यानुभूति- यही तो करुणा का स्रोत है। जब तक हृदय में करुणा का उदय नहीं होता, तब तक मनुष्य पराये दुःख और कष्ट की अनुभूति नहीं कर सकता।" अभयकुमार इन्हीं विचारों में डूबता-उतरता राज-सभा से निकल गया। चिंतन में वह इतना गहरा उतर चुका था कि उसे पता ही नहीं चला, कब वह महाराज को प्रणाम करके राज-सभा से चला, और अब अशोक वाटिका में बैठे उसे

कितना अधिक समय हो गया। ऊपर नीलगगन में कुछ तारे झिलमिला रहे हैं और इधर सत्य के प्रकाश का प्रतिनिधित्व करते हुए महामात्य अकेले ही चले जा रहे हैं, उसी सर्वप्रथम उत्तर देने वाले सामन्त के महल की ओर।

"आइए महामात्यवर! कैसे कष्ट किया आपने?" सामन्त ने अभयकुमार को गहराती रात के अंधेरे में आया देखा तो उसका मन आशंकाओं से भर गया। दीपक के टिमटिमाते प्रकाश में अभयकुमार के चेहरे पर उभरी हुई गम्भीर रेखाएँ साफ पढ़ी जा सकती थी। कुछ भय और चिन्तामिश्रित भर्रायी आवाज किसी महान् संकट की सूचना दे रही थी। महामंत्री ने अपने को संभालते हुए कहा-"सामन्त! मगधपति आकस्मिक भयंकर रोग के कारण मृत्यु-शय्या पर पडे हैं। कोई उपचार, औषध नहीं लग रही है। वैद्यों का कहना है, किसी स्वस्थ व्यक्ति के हृदय का मांस मिल सके तो सम्राट् के प्राण बच सकते हैं, अन्यथा नहीं। सिर्फ दो तोला हृदय का मांस चाहिए औषध के लिए। इसके बदले में तुम्हें जितनी भी लक्ष या स्वर्ण-मुद्रा चाहिए, सो मांग लो। अधिकार या पद चाहिए तो वह भी मिलेगा। जो चाहिए वही मिलेगा, सिर्फ दो तोला मांस चाहिए। महाराज के जीवन मरण का प्रश्न है। तुम्हारी स्वामिभक्ति की कसौटी है आज।" अभयकुमार एक ही साँस में यह सब कह गया, और फिर रुककर सामन्त के चेहरे की ओर देखने लगा।

सामन्त के चेहरे का रंग उड़ गया। "हृदय का मांस? जब प्राण ही नहीं रहेंगे, तो यह धन, यह अधिकार किस काम आयेगा? प्राणों के साथ धन का सौदा?" सामन्त ने अभयकुमार के चरणों में सिर रख दिया, और गिडगिडाते हुए कहा- "महामंत्री! कृपा करके मुझे जीवन दान दे दीजिए। आप मेरी ओर से लाख स्वर्ण मुद्रा ले जाइए और किसी ऐसे व्यक्ति के हृदय का मांस, जो लाख स्वर्ण मुद्रा लेकर देता हो, कृपया ले लीजिए।"

अभयकुमार ने गहरी दृष्टि से सामन्त के कातर नयनों पर झलकती जिजीविषा को देखा। जीवन कितना प्रिय होता है? मांस कितना मंहगा है? क्यों, अब कुछ समझे?- अभयकुमार होठों में ही मुस्करा उठा। सामन्त की बहुत अधिक आजिजी के बाद अभयकुमार लाख स्वर्ण मुद्रा अपने महल में भिजवाकर आगे चल पड़ा। सभा में जिन-जिन सामन्तों ने इस सामन्त की बात का समर्थन किया था, अभयकुमार उन सबके द्वार पर घूम आया। दो तोला मांस के बदले, वे लाखों स्वर्ण मुद्रा देते गए, अपने प्राणों की भिक्षा

मांगते गए। पर कोई भी माँ का वह लाल नहीं मिला, जो अपने हृदय का मांस देकर सम्राट् के प्राण बचाने को प्रस्तुत हो।

प्रातःकाल कार्य से निवृत्त होकर महामंत्री अभयकुमार प्रश्न का उत्तर देने के लिए राज सभा में उपस्थित हो गए। रात-ही-रात समस्त नगर में चर्चा फैल गई थी कि कल प्रातः महामंत्री अपना उत्तर प्रस्तुत करेंगे, और बस, इसीलिए आज राजसभा में जन-समूह समा नहीं रहा था। महाराज की आज्ञा पाकर अभयकुमार ने अपने प्रमुख सेवक को संकेत किया। कुछ ही देर में खन-खनाती लाखों स्वर्ण-मुद्राओं का ढेर लग गया। मगधेश आश्चर्य से देख रहे थे। कुछ समझ में नहीं आ रहा था, क्या रहस्य है?

अभयकुमार सम्राट् के सम्मुख करबद्ध खड़ा हुआ। महाराज का अभिवादन करके सामन्तों के शंकाकुल निष्प्रभ चेहरे पर एक दृष्टि डाली और निवेदन किया-"महाराज, आप ने पूछा था, सबसे सस्ती चीज क्या है। और हमारे वीर सामन्तों ने उत्तर दिया था कि 'मांस! मैं उन सब सामन्तों के द्वार पर भटक आया, पर इन करोड़ों स्वर्णमुद्राओं के बदले दो तोला जितना मांस भी कहीं नहीं मिल सका, फिर मांस सस्ता कैसे?" अभयकुमार एक क्षण रुका, सामन्तों के चेहरे म्लान हुए जा रहे थे। रात्रि की घटना बताते हुए अभयकुमार ने कहा-"महाराज! दो तोले मांस का मूल्य यह हो सकता है, तो जिसका पूरा मांस निकाला जाता है उसके प्राणों का क्या मूल्य होगा? असंख्य स्वर्णमुद्रा देकर क्या किसी के प्राण का मूल्य चुकाया जा सकता है? फिर यह कैसी बहक है कि मांस सस्ता है? हम अपने प्राण और अपने मांस का मूल्य आंकते हैं, वही मूल्य दूसरे के प्राण और मांस का क्यों नहीं आंकते? जीवन का मूल्य अनन्त है। मनुष्य सिर्फ अपनी रसलोलुपता और विषयान्धता के वश दूसरों के जीवन से खिलवाड़ करता है, और उसका कुछ भी मूल्य नहीं समझ पाता है। जब वह दूसरों के मांस को अपने मांस के साथ तौलेगा, तभी ठीक तरह से समझ सकेगा कि मांस का क्या मूल्य हो सकता है।"

सभा में सन्नाटा छा गया। सामन्तों की आंखें जमीन पर झुकी जा रही थीं। विचारों में एक गहरी उथल-पुथल थी। अभयकुमार ने सामन्तों के साथ हुए रात्रिकालीन गुप्त वार्तालाप का विश्लेषण करते हुए बताया-"एक मनुष्य में ही नहीं, प्राणिमात्र में जीने की इच्छा कितनी प्रबल होती है। कोई भी प्राणी अपनी मृत्यु नहीं चाहता। फिर अपनी रसना की लोलुपता के कारण

मनुष्य किसी के प्राणों को लूटकर उन्हें सस्ता कैसे कह सकता है?

जैन दर्शन में आत्म-साम्य का सिद्धान्त है। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है-

सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासइ।
पिहिआसवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बंधइ।।

-दशवैकालिक सूत्र 14.9

जो समस्त त्रस-स्थावर जीवों को अपने समान समझता है और यह मानता है कि जैसे मेरे पैर में कांटा लगने से वेदना होती है, वैसे अन्य जीवों को भी पीड़ा होती है। इस प्रकार जीव मात्र को आत्मवत् देखता है, फिर आस्रवद्वार को रोकता है वह जितेन्द्रिय आत्मा पाप कर्म का बंध नहीं करता।

'अत्तसमे मण्णिज्ज छप्पिकाए' (दशवैकालिकसूत्र 10.5) छः काय के जीवों को आत्मवत् समझना चाहिए। 'मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ ण केणइ' सभी प्राणियों के प्रति मेरी मैत्री हो, किसी के भी साथ मेरा वैर न हो। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो 'सभी जीव अपने समान हैं' इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं।

प्रश्नः-

1. माँस सस्ता एवं सुलभ खाद्य वस्तु है - इसके पक्ष में सामन्तों ने क्या तर्क दिए?
2. कथा में आए 'मगधेश' शब्द के पर्याय शब्दों को लिखिए।
3. सन्धि-विच्छेद कीजिए-
   शंकाकुल, विषयान्धता, महामात्य, ऐक्यानुभूति, मांसाहार, मगधेश।
4. मनुष्य के मन की विचित्रता को समझाइए।
5. 'दो तोला मांस कितना महंगा है'- यह बात अभयकुमार ने अन्य सामन्तों को कैसे समझाई?
6. मनुष्य रसलोलुपता और विषयान्धता के वश होकर दूसरों के जीवन से खिलवाड़ करता है- इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?
7. जितेन्द्रिय आत्मा क्या पाप का बन्धन करता है? समझाइये।

-व्याख्याता, जीवन विज्ञान जैन दर्शन,
वर्धमान कन्या महाविद्यालय, ब्यावर (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (13)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह तेरहवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 मई 2011 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2

(पृष्ठ 1 से 30 तक से प्रश्न)

'अ' अक्षर से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. .....वीतराग वाणी की सुधा-सागर के तट पर पहुँच कर भी प्यासे रह गये।
2. विद्वान इन्द्रभूति आदि के अन्तर में रुंधे हुए के स्रोत.....फूट पड़े।
3. सर्वज्ञ के.....मनोगत भावों को कौन जान सकता है?
4. वस्तुतः आत्मा.....ध्रौव्य है।
5. मिथ्यात्व एवं.....माया के कारण ही स्त्रीनामकर्म का बन्ध होता है।
6. 11 गणधरों ने पूर्व जन्म में गणधर-पद की.....के योग्य साधना की थी।

'आ' अक्षर से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

7. इसने अपनी सर्वज्ञता का.....रचकर मेरे क्रोध को भड़का दिया।
8. प्रभो! मुझे आपके चरणों में पूर्ण.....है।
9. क्या एक.....ईंट को खींच लेने पर सारा दुर्ग ढह नहीं पड़ता?
10. शरीर जीव का.....और जीव शरीर का.....है।
11. .....इन्द्रभूति की यशोगाथा दशों दिशाओं में फैल चुकी थी।
12. आचार्य हेमचन्द्र ने धर्मोपकरण ग्रहण करने की..... पर प्रकाश डाला है।
13. आचार्य प्रवर ! समीपस्थ.....में सर्वज्ञ श्रमण भगवान् महावीर पधारे हैं।

'क' अक्षर पीछे आना है–

14. पूर्वधर आचार्यों के काल तक का.....विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।
15. इस ग्रन्थ के मुख्य.....श्री राठौड़ ने बड़ी सहायता की।
16. प्रतीत होता है, वह कोई बहुत बड़ा.....है।
17. आचार्य काल के.....कुछ काल तक भगवान महावीर का धर्म संघ निर्ग्रंथ संघ के नाम से लोक विश्रुत रहा।
18. अवन्ती के राज्य सिंहासन पर चण्डप्रद्योत के पुत्र.....का राज्याभिषेक हुआ।
19. धार्मिक एवं.....घटनाक्रम का साथ-साथ विवरण प्रस्तुत कर विश्वसनीय बनाना है।

एक शब्द में उत्तर दीजिए–

20. भगवान महावीर को केवलज्ञान किस नदी पर हुआ?
21. वीर निर्वाण के 12 वर्ष पश्चात् किसे केवलज्ञान की प्राप्ति हुई?
22. गौतम गोत्र कितने प्रकार का है?
23. मथुरा के कंकाली टीले की खुदाई तीसरी बार किसके तत्त्वावधान में हुई?
24. वीर निर्वाण सं. 170 में कौनसे आचार्य स्वर्गस्थ हुए?
25. सोमिल! हमने सत्ययुग के दृश्य को साक्षात्-साकार उपस्थित कर दिया है। ये शब्द किसके हैं?

चिंतन सरिता

सन्तं शरणं गच्छामि

डॉ. रमेश 'मंयक'

- मैं बनूँ-धनी-किसका?
  सांसारिक ऐश्वर्य, मुद्रा, सम्पदा का? - नहीं
  तो फिर- आत्म-बल, मनोबल, वचन बल का। मगर कैसे?
  साधना से, आत्म-साधना से।
- यदि साधना नहीं करूँगा तो होगा क्या?
  कुछ होगा प्राप्त? - नहीं
  तो फिर व्यर्थ गवाऊँगा समय, जीवन, शक्ति।
  तो फिर देखूँ- किस तरफ-बाहर अथवा भीतर?
  जब तक नहीं देखूँगा भीतर-न होगा परिष्कार अन्तर जगत का।
- अन्तर जगत का परिष्कार- आत्म चिंतन का अवसर है।
  किसके निर्देशन में करूँगा इस परिष्कार को? कौन बनेगा गुरु? कौन होगा मेरा पथ प्रदर्शक? कौन थामेगा मेरी अँगुली- अध्यात्म चेतना के इस पथ पर बढ़ाने के लिए?
- मैं कहाँ से पाऊँगा प्रेरणा- भ्रान्त धारणाओं को तोड़ने की, मिथ्या विश्वासों को मिटाने की? किस प्रक्रिया को अपनाऊँगा? हाँ- सुनूँ प्रवचन अध्यात्म गुरु के? करूँ स्वाध्याय अनुभूत व श्रुत संग्रह का, जिससे जागेगा मेरा आत्म-चिन्तन।
- मुझे मिटाने होंगे दुर्गुणों के अवरोधक। तोड़ना होगा मोह का मिथक। बढ़ाने होंगे कदम उस तरफ जहाँ से फूटता है ज्ञान के प्रकाश का अंकुर। अज्ञान के अंधकार रूपी आवरण को तोड़कर। पीछे छोड़नी होगी आसक्ति व्यक्ति, वस्तु एवं स्थान के प्रति।
- मुझे घुलना होगा- पूर्ण समर्पण के साथ- समस्त भावनाओं, संज्ञाओं को तिरोहित करते हुए। जीवन क्षणभंगुर। मिटेगी संज्ञाएँ। उभरेगा सर्वनाम।

फिर छाएगा विशेषण। बनेगी पहचान। क्रिया-विशेषण से पूरा होगा धीरे-धीरे जीवन का व्याकरण।

- कैसे होगी गति? तीव्र अथवा मंथर या फिर मध्यम? आत्म-कल्याण की गति न तीव्र न मंथर न मध्यम। छोड़ दूँ गति विषयक विचार। यह निर्णय करेगा मेरा पथ प्रदर्शक। प्रकृति प्रदत्त गति होगी उचित। वही करेगा कल्याण मेरा। आगत का। वही कराएगा मुक्त मुझे भूत के पराभव से।
- धीरे-धीरे घुलने लगी हैं गांठे- मन की, राग-द्वेष की, प्रमाद की, पद की, वर्चस्व की, अहंकार पूर्ण अस्तित्व की। मेरा गुरु कराएगा मेरे दुष्कर्मों का क्षय, बढ़ाएगा-अनन्त ज्ञान की तरफ, आत्म-दर्शन की तरफ, आत्मिक-आराधना की तरफ, साधना की तरफ।
- मेरी अध्यात्म चेतना जगाने वाले गुरु-साधारण नहीं, असाधारण हैं, अति विशिष्ट हैं, महान हैं। वे समर्पित हैं धर्म के प्रति। वे गुणों के सागर हैं। अनुभवों के आगर हैं। वे ही हैं मेरे समस्त पापों के नाशक। मैं उनकी वन्दना करता हूँ।
- हाँ! धीरे-धीरे टूट रही है मेरी मूर्च्छा। आ रही है- जागृति। लौट रही है चेतना। विशाल और विराट् हो रहा है अनुभूति का फलक। जागृति में समाहित होती है चेतना।
- मुझे जागना होगा, उठना होगा, चलना होगा, बहना होगा, सर्वजन हितार्थ। उत्कृष्ट कर्म पथ के साथ। सम्यक् दर्शन के साथ। गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान-दीपक को पूरना होगा स्वचेतना के स्नेहक से। सर्वत्र आलोक फैलाने के लिए।
- आ रही है ध्वनि- सन्तं शरणं गच्छामि।

-बी-8, मीरा नगर,, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

दीक्षा का सम्बन्ध

दीक्षा का सम्बन्ध लक से नहीं ललक से होता है।

दीक्षा का सम्बन्ध व्यवहार से नहीं, विनय-विवेक से होता है।

दीक्षा का सम्बन्ध भाग्य से नहीं, भावों से होता है।

दीक्षा का सम्बन्ध अर्थ से नहीं, परमार्थ से होता है।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन धर्म का मौलिक इतिहास (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ भाग-संक्षिप्त संस्करण)- ***प्रणयन***- आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज, ***प्रकाशक*** - सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापूबाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2575997, फैक्स : 0141-2570753, ***पृष्ठ*** - 474+385+300+300, ***मूल्य*** 75 रुपये प्रत्येक भाग, ***संस्करण*** - 2010 (आचार्य हस्ती जन्म शती)

आचार्य हस्तीमल जी महाराज अध्यात्मयोगी एवं युगमनीषी सन्त होने के साथ आगम-व्याख्याकार एवं इतिहास-गवेषक विद्वान् सन्तरत्न थे। उनके द्वारा प्रणीत 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चार भाग जैन इतिहास के दर्पण हैं, जिनमें ज्ञान भण्डारों में प्राप्त सामग्री के आधार पर जैन धर्म के प्रामाणिक इतिहास लेखन का प्रयत्न किया गया है। गुजरात एवं राजस्थान के अनेक ज्ञान भण्डार तथा प्राचीन उपलब्ध साहित्य इतिहास के लेखन में आधार बने हैं। प्रमुख रूप से श्री गजसिंह राठौड़ एवं श्री प्रेमराज बोगावत का इन चार भागों के सम्पादन में उल्लेखनीय योगदान रहा। इन चार भागों पर गुरुभक्त श्री रतनलाल जी बाफना द्वारा प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया गया, जिससे हजारों जिज्ञासुओं ने इन इतिहास-ग्रन्थों का स्वाध्याय कर ज्ञानवर्धन किया। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर आदि अनेक विश्वविद्यालयों में ये इतिहास ग्रन्थ सन्दर्भ-ग्रन्थों के रूप में अनुशंसित हैं। पं. दलसुख भाई मालवणिया सदृश मूर्धन्य विद्वानों एवं डॉ. डी.एस.कोठारी जैसे वैज्ञानिकों ने इन इतिहास ग्रन्थों को प्रामाणिक दस्तावेज बताया है।

ये चारों भाग विस्तृत विवरण के साथ सरस शैली में लिखे गए हैं, जिनमें क्रमशः निम्नानुसार इतिहास वर्णित है-

प्रथम भाग (तीर्थंकर खण्ड)- प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर तक के युग का गवेषणापूर्ण वर्णन।

द्वितीय भाग (केवली व पूर्वधर खण्ड)- वीर निर्वाण संवत् 1 से 1000 तक की प्रमुख धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक घटनाओं के साथ धर्माचार्यों की

परम्परा का क्रमबद्ध परिचय।

तृतीय भाग (सामान्य श्रुतधर खण्ड-1) – वीर निर्वाण संवत् 1001 से 1475 तक का उपर्युक्तानुसार प्रामाणिक एवं क्रमबद्ध विवरण।

चतुर्थ भाग (सामान्य श्रुतधर खण्ड-2) – वीर निर्वाण संवत् 1476 से 2000 तक की उपर्युक्तानुसार घटनाओं का तथ्यपरक विवेचन।

इन चार भागों में प्रत्येक की पृष्ठ संख्या 850 से 900 के लगभग होने से उनको रखना, उठाना एवं पढ़ना कठिन लगता था। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज के समक्ष संघ के प्रबुद्ध श्रावकों ने संक्षिप्त हिन्दी संस्करणों एवं अंग्रेजी संस्करणों हेतु चर्चा की एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा ने इनके हिन्दी एवं अंग्रेजी लघु संस्करणों का बीड़ा अपने हाथ में लिया एवं पूर्ण मनोयोग से इस कार्य में जुट गए। जो पावन लक्ष्य के लिए समर्पित भाव से जुट जाता है, उसको सफलता अवश्य प्राप्त होती है। श्री सुराणा साहब को इस कार्य हेतु योग्य सहयोगी मिल गए।

'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के प्रथम भाग का संक्षिप्तीकरण श्री रामगोपाल मिश्रा एवं श्री दिलीपकुमार वया 'अमित' ने किया है तथा द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ भाग का संक्षिप्तीकरण सूरत निवासी तपस्वी श्रावक श्री जयवंतभाई पी. शाह ने अथक परिश्रम पूर्वक किया है। वे स्वयं जैन धर्म का मौलिक इतिहास खुली पुस्तक परीक्षा' में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित हुए थे। मूलतः उदयपुर निवासी प्रसिद्ध कवि डॉ. दिलीप धींग ने चेन्नई में रहकर अपनी मेधा से चारों भागों का सुन्दर सम्पादन किया है। प्रथम भाग का मुद्रण एच.टी.बुर्दा मीडिया लि., ग्रेटर नोएडा, दिल्ली से हुआ है तथा शेष तीनों भागों का मुद्रण इण्डियन मैप सर्विस, जोधपुर से हुआ है। कागज, मुद्रण एवं कवर सभी स्तरीय एवं आकर्षक हैं।

संक्षिप्तीकरण करना एक कठिन कार्य होता है। क्या लें और क्या छोड़े, विस्तृत को संक्षेप में दुबारा कितना लिखें- निर्णय लेना एवं उसको क्रियान्वित करना सरल नहीं होता। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने हिन्दी भाषा में मौलिक इतिहास के इन चार भागों के संक्षिप्त एवं सारगर्भित संस्करण उपलब्ध कराकर हजारों पाठकों का उपकार किया है। मूल्य भी अत्यल्प रखा गया है। अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित हो गए हैं तथा इतिहास के चार भागों के प्रमुख प्रसंगों को 40 भागों में प्रेरक रूप में प्रकाशित किया गया है।

जैनागम स्तोक वारिधि (पंचवर्षीय पाठ्यक्रम) का शुभारम्भ

जैनागमों को समझने में थोकड़े अत्यन्त सहयोगी बनते हैं। थोकड़ों के अध्ययन से आगम की अनमोल निधि से सहज ही सुपरिचित होने का अवसर प्राप्त होता है। प्रत्येक जिज्ञासु भाई-बहिन थोकड़ों के माध्यम से तत्त्वज्ञान को क्रमशः एवं सुव्यवस्थित ढंग से प्राप्त कर सके, इसी भावना से जैनागम स्तोक वारिधि (पंचवर्षीय पाठ्यक्रम) का शुभारम्भ अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा किया जा रहा है। प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में निम्नांकित थोकड़े रहेंगे-

प्रथम प्रश्न-पत्र	द्वितीय प्रश्न-पत्र
25 बोल, 67 बोल, सुपच्चक्खाण, दुपच्चक्खाण, संज्ञा, सवणे-नाणे	कर्म प्रकृति, गति-आगति, चौदह गुणस्थान का बासठिया, रूपी-अरूपी, उपयोग

उक्त पाठ्यक्रम के परीक्षा-सम्बन्धी प्रमुख नियम इस प्रकार हैं-

1. परीक्षा जनवरी 2012 में प्रस्तावित है।
2. परीक्षा लिखित रहेगी। इस परीक्षा में कोई भी भाई-बहिन भाग ले सकते हैं। चाहे उन्होंने शिक्षण बोर्ड की पहले परीक्षा उत्तीर्ण की हो अथवा नहीं की हो।
3. शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रकाशित पुस्तकें मान्य होंगी। जब तक शिक्षण बोर्ड की पुस्तक प्रकाशित न हो तब तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें परीक्षा हेतु अधिकृत रहेंगी।
4. प्रत्येक वर्ष में दो-दो प्रश्न-पत्र होंगे। दोनों प्रश्न-पत्र उत्तीर्ण होने पर ही अगले वर्ष की परीक्षा हेतु योग्य माना जायेगा।
5. जहाँ-जहाँ शिक्षण बोर्ड की परीक्षा के केन्द्र संचालित हैं, उन स्थानों पर तथा अन्य स्थानों पर भी जहाँ कम से कम 10 परीक्षार्थी हो सकें, वहाँ पर परीक्षा केन्द्र रहेगा।
6. परीक्षा में भाग लेने हेतु निम्न प्रारूप में आवेदन-पत्र भरकर केन्द्राधीक्षकों के माध्यम से अथवा शिक्षण बोर्ड कार्यालय को सीधे भेजे जा सकते हैं।
7. इस परीक्षा सम्बन्धी जानकारी हेतु सम्पर्क करें- कार्यालय- 0291-2630490, संयोजक-श्रीमती सुशीला बोहरा-94141-33879, रजिस्ट्रार-श्री धर्मचन्द जैन-93515-89694

---

1. परीक्षार्थी का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री.....
2. पिता/पति का नाम.....आयु.....
3. जन्मतिथि.....शैक्षणिक योग्यता.....
4. पत्राचार का पूरा पता.....
   जिला.....प्रान्त.....पिनकोड नं. ☐☐☐☐☐☐
5. धार्मिक योग्यता.....
   .....
6. कक्षा (जिसमें परीक्षार्थी प्रवेश चाहता है).....
7. परीक्षा केन्द्र.....केन्द्र कोड संख्या ☐
8. परीक्षा का माध्यम हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

दिनाँक : ...../...../..... आवेदक के हस्ताक्षर

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 अप्रेल, 2011)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	निमाज से विहार कर करमावास पधारे हैं, जोधपुर की ओर विहार चल रहा है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10	:	ब्यावर से विहार कर निमाज पधारे हैं, जोधपुर की ओर विहार संभावित है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	सामायिक-स्वांध्याय भवन घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराजमान हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	सुखसाता पूर्वक ब्यावर विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9	:	बाबई विराज रहे हैं, इटारसी की ओर विहार संभावित है।
तत्त्वचिंतिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	ब्यावर से विहार कर कापरडा पधारे हैं, जोधपुर की ओर विहार संभावित है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	जैतारण विराज रहे हैं, जोधपुर की ओर विहार सम्भावित है।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	मेड़ता सिटी विराज रहे हैं, जयपुर की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	करमावास विराज रहे हैं, जोधपुर की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	करमावास विराज रहे हैं, जोधपुर की ओर विहार सम्भावित है।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	करमावास विराज रहे हैं, जोधपुर की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	बीजवाड़िया विराज रहे हैं, जोधपुर की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी	:	साहुकार पेठ, चेन्नई विराज रहे हैं,

म.सा. आदि ठाणा 7		उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	मायावरम विराज रहे हैं, चिदम्बरम की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	रूणीजा विराज रहे हैं, बदनावर की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	रामनगर सोढाला, जयपुर विराज रहे हैं, उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।
महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	निमाज विराज रहे हैं। जोधपुर की ओर विहार सम्भावित है।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	सागर भवन, जलगांव विराज रहे हैं। उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।

विक्रम संवत् 2068 के अब तक घोषित चातुर्मास

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने चैत्र कृष्णा प्रतिपदा, रविवार, दिनाँक 20 मार्च, 2011 को साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ विक्रम् संवत्-2068 के लिये निम्नांकित चातुर्मास घोषित किये हैं:-

जोधपुर	- क्षेत्र संतों के चातुर्मास से वंचित नहीं रहेगा।
मसूदा (जिला-अजमेर)	- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
भोपाल (म.प्र.)	- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
मालवीय नगर, जयपुर	- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
वेपेरी-चेन्नई	- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा

जानकी नगर, इन्दौर - व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा

माण्डल (जिला-जलगाँव) - सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा

वैशाली नगर-अजमेर - क्षेत्र महासती वृन्द के चातुर्मास से वंचित नहीं रहेगा।

धर्मधरा ब्यावर में मुमक्षु श्री आशीषजी जैन एवं मुमक्षु सुश्री पूनमजी जैन की भागवती दीक्षा 12 मार्च को सानन्द सम्पन्न

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी, शनिवार दिनांक 12 मार्च, 2011 को राजस्थान के हृदय स्थल धर्मधरा ब्यावर में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से **मुमक्षु श्री आशीषजी जैन** एवं **मुमक्षु सुश्री पूनमजी** जैन की भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। ब्यावर दीक्षा महोत्सव पर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति रत्नसंघीय समस्त मुनिपुंगवों के साथ सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवरजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.आदि ठाणा 39 के अलावा आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संतप्रवर श्री संजयमुनि म.सा., श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. एवं महासती श्री समताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में गिब्सन हॉस्टल, ब्यावर में पावन प्रव्रज्या महोत्सव हजारों भक्तों के जय-जयकार के गगनभेदी जयनादों के बीच उमंग-उल्लास से सम्पन्न हुआ।

शोभायात्रा

11 मार्च, 2011 को प्रातः 9 बजे विरक्त भाई-बहिन की शोभायात्रा का भव्य आयोजन रखा गया, जिसमें बैण्ड की सुमधुर ध्वनियों के साथ सुसज्जित गाड़ियों में विरक्त भाई-बहन एवं उनके परिवारजन विराजित थे। शोभायात्रा में विशाल जनसमूह ने यात्रा के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए और मंगल गीत गाते हुए तथा गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के सन्देश उच्चारित करते हुए शोभायात्रा का आकर्षण बनाये रखा। हजारों गुरुभ्राता

एवं श्रद्धालुजन कतारबद्ध हो अनुशासित रूप से शोभायात्रा में सम्मिलित थे। शहर के प्रमुख मार्गों से निकलती हुई शोभायात्रा का भव्य नज़ारा देखकर दर्शक भावाभिभूत हो गये। ब्यावर में सुज्ञश्रावकों ने स्थान-स्थान पर शीतल पेय के आतिथ्य का लाभ लिया। शोभायात्रा बरेली के नोहरे वाले स्थानक में जाकर सम्पन्न हुई। स्थानक जाकर शोभायात्रा में सम्मिलित मुमुक्षु भाई-बहिन उनके वीर परिवारजनों तथा उपस्थित महानुभावों ने दर्शन-वन्दन के साथ आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर से मंगल पाठ श्रवण किया।

अभिनन्दन समारोह

विरक्त भाई-बहिन एवं वीर परिवारजनों का अभिनन्दन एवं बहुमान श्री स्थानकवासी जैन वीरसंघ, ब्यावर, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, ब्यावर एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में गिब्सन हॉस्टल प्रांगण में किया गया।

अभिनन्दन-समारोह की अध्यक्षता रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने की। आयकर आयुक्त माननीय श्री बी. पी. जैन, जोधपुर मुख्य अतिथि थे। श्रीसीमेन्ट, ब्यावर के कार्यकारी निदेशक माननीय श्री महेन्द्रकुमारजी सिंघी एवं प्रमुख समाज-सेवी माननीय श्री पारसमलजी रांका-अजमेर का विशिष्ट अतिथि के रूप में सान्निध्य प्राप्त हुआ। शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलालजी बाफना-जलगाँव, संघ कार्याध्यक्ष माननीय श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल-चेन्नई, संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष माननीय श्री पी. एस. सुराना-चेन्नई, श्री स्थानकवासी जैन वीरसंघ के अध्यक्ष माननीय श्री ज्ञानचन्दजी विनायकिया-ब्यावर, मंत्री श्री महेन्द्रसिंहजी सांखला-ब्यावर, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष माननीय श्री शांतिलालजी सुराणा-ब्यावर, मंत्री श्री मूलचन्दजी भण्डारी-ब्यावर, दीक्षा समिति के संयोजक मानीय श्री कांतिलालजी चौधरी-धुलिया, अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष माननीय श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई को ससम्मान आमन्त्रित कर मंच की शोभा बढ़ायी गई। मंच पर विरक्त भाई-बहिन के साथ दादा-दादी, माता-पिता एवं परिवारजनों को भी आत्मीयता के साथ आमन्त्रित कर मंचासीन किया गया।

गिब्सन हॉस्टल का विशाल मंच एवं पाण्डाल अत्यन्त भव्यता लिए हुए था। मंच के सामने श्रावक-श्राविकाओं के बैठने के लिए कुर्सियाँ कतारबद्ध रखी हुई थीं। समारोह में उपस्थित विशाल जनमेदिनी ने अभिनन्दन-कार्यक्रम का आनन्द लिया। अभिनन्दन समारोह के मंगलाचरण की प्रस्तुति दी सोमी, मीनाक्षी, पायल व उनकी सहयोगी बहिनों ने। मंगलाचरण के बोल थे- **नवकार मंत्र है न्यारा इसने लाखों को तारा। इस महामंत्र का जाप करो, भव जल से मिले किनारा ।**

दीक्षा गीत स्वीटी, ऐश्वर्या,मीनू और उनके ग्रुप ने समवेत स्वर में प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे -

संयम के पथ पर अविरल बढ़ते जाना।
जिनशासन के उपवन को तुम हर दिन महकाना।।

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री स्थानकवासी जैन वीरसंघ-ब्यावर एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-ब्यावर द्वारा मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों का स्वागत-सम्मान माला एवं शॉल द्वारा किया गया, वहीं ब्यावर संघ द्वारा रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा का माल्यार्पण से स्वागत व शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, ब्यावर के मंत्री **श्री मूलचन्दजी भण्डारी** ने अतिथियों, दीक्षार्थी भाई-बहिनों एवं वीर परिवारजनों के प्रति संघ की ओर से संक्षेप में, किन्तु प्रभावी शब्दों में स्वागत भाषण तो दिया ही, ब्यावर में रत्नसंघ की दो भागवती दीक्षा के सुयोग को आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की अत्यन्त कृपा का सुफल बताया। संतरत्नों के सान्निध्य एवं महासती मण्डल के अच्छी संख्या में सुयोग को ब्यावर श्रीसंघ की पुण्यवानी बताते हुए वीर परिवार की भावना को अनुकरणीय बताया।

स्वागत-भाषण के अनन्तर पायल और उनके ग्रुप ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया जिसके बोल थे :-

आयेजी आयेजी आये ब्यावर नगरी में आये।
वेलकम वेलकम करते हैं हम स्वागत गीत सुनायें ।।

संघ द्वारा विरक्त भाई-बहिन का माल्यार्पण शॉल/चून्दड़ी से सम्मान किया गया। अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा मुमुक्षु श्री आशीषजी जैन एवं मुमुक्षु सुश्री पूनमजी जैन को अभिनन्दन-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

वीर परिवार के दादा-दादी, माता-पिता तथा परिवारजनों का

माल्यार्पण, शॉल/चून्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान तो किया ही गया, रत्नसंघ की ओर से रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन ससम्मान भेंट किये गये। विरक्त भाई श्री आशीषजी जैन एवं विरक्ता बहिन सुश्री पूनमजी जैन ने संयम-साधना के प्रति अपने मनोभावों की सशक्त प्रस्तुति दी।

मुमुक्षु भाई श्री आशीषजी जैन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि यह अभिनन्दन मेरा नहीं वरन् पूज्य गुरुभगवन्तों की कृपा का है। अभिनन्दन उम्र का नहीं उम्मीदों का है। मैं सभी पदाधिकारियों से, माता-पिता से, परिवारजनों से, समाज से क्षमायाचना करता हूँ। मेरे दादाजी श्री रतनलालजी चौधरी लोह पुरुष थे। उनका आशीर्वाद मुझे मिला। बेंगलोर चातुर्मास में प्रतिक्रमण पूर्ण किया। चातुर्मासकाल में सूत्रकृतांग सूत्र का वाचन चल रहा था उस समय के वर्णन को सुनकर मेरी वैराग्य भावना जागृत हुई, गुरुकृपा से संयम ग्रहण करने का अनमोल अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। यह सब इन महापुरुषों की कृपा का सुफल है।

मुमुक्षु बहिन सुश्री पूनमजी जैन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि देह के निर्माता संस्कारदाता माता-पिता को प्रणाम, क्यूं बिठाया गया मुझे इस मंच पर आप सब जानते हैं, यह स्वागत है गुरुकृपा का।

ये वीतराग वाणी का अभिनन्दन है।
आत्मशक्ति का सुरभित चन्दन है।।

कषाय कन्दरा को हटाकर दीक्षा से सकल सिद्धि को प्राप्त करूं यही शुभेच्छा है। मैं आप सभी से हार्दिक क्षमायाचना करती हूँ। मेरे प्रेरक पूज्य आचार्यप्रवर-पूज्य उपाध्यायप्रवर एवं गुरुणी मैया के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझ जैसी अबोध बालिका को संयम-मार्ग में प्रेरित किया। यह सब इन गुरुभगवन्तों की कृपा का सुफल है।

समारोह के अवसर पर **मुमुक्षु भाई श्री आशीषजी जैन के बड़े भ्राता श्री मनीषजी जैन** ने अपनी मनोभावना व्यक्त करते हुए कहा कि-दीक्षा नर को नारायण बनाती है, दीक्षा वीर को महावीर बनाती है। दीक्षा वह महापर्व है जहाँ देवता भी नाचते हैं। दीक्षा प्रबल पुण्यवानी से प्राप्त होती है। जिसकी पुण्यवानी प्रबल होती है उसे कोई नहीं रोक सकता। मुझे गर्व है कि भाई आशीष संयम ग्रहण कर रहा है, मेरी यही शुभकामना है कि आशीष शेर की तरह संयम-मार्ग पर चलकर संयम का निरतिचार पालन करेगा।

मुमक्षु बहिन सुश्री पूनमजी जैन की **माताश्री श्रीमती मायाजी जैन** ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि आपने जो हमारा स्वागत किया वह हमारा नहीं बल्कि चारित्र मार्ग पर बढ़ने वाली इन मुमुक्षु आत्माओं का है। पूनम को मेरा यही आशीष है कि वह संयम-मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ती रहे।

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के ब्यावर चातुर्मास में सूरज भवन उपलब्ध करवाने वाले श्री हुक्मीचन्दजी ओस्तवाल-ब्यावर एवं रंगजी की बगीची उपलब्ध करवाने वाले श्री रतनलालजी श्रीश्रीमाल-ब्यावर का एवं दीक्षा महोत्सव में प्रशासनिक सेवाएँ उपलब्ध करवाने वाले ब्यावर नगरपरिषद् के उप-सभापति, समाजरत्न श्री भंवरलालजी ओस्तवाल का भी ब्यावर श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया। कार्यक्रम-संचालक श्री प्रकाशचन्दजी जैन-जलगाँव ने अभिनन्दन कार्यक्रम के मध्य में एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे-

संयम से पायेंगे शांति अनमोल।
मुक्ति में जायेंगे, बन्धन सारे खोल।।

शासन सेवा समिति के संयोजक **माननीय श्री रतनलालजी बाफना** ने मुमुक्षु भाई-बहिन को आशीर्वाद प्रदान करते हुए जिनशासन की प्रभावना के साथ आत्म-कल्याण के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहने हेतु मंगल भावना व्यक्त की। अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उन्होंने संयम की महत्ता पर प्रकाश डाला-

अपने जीवन के जौहरी स्वयं ही बनें,
क्या पता यह मौका दुबारा मिले ना मिले।
आत्म ज्ञाता बनें, धर्म ध्याता बनें।
सुख में फूले नहीं, दुःख में तड़फें नहीं।
आत्म भावों की ध्वनियाँ गुँजाते चलें।
सिद्ध अरिहन्त में मन रमाते चलें।

विरक्त भाई श्री ओमप्रकाशजी जैन ने अपने विचार कुछ इस प्रकार रखेः-

सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव रखना यह है दीक्षा
बाईस परीषह लेंगे आपकी कठिन परीक्षा।
रखना हमेशा आप आगे बढ़ने की आस।
मैं भी कर रहा हूँ संयम में आने का प्रयास।

ब्यावर संघ के मंत्री **श्री महेन्द्रसिंहजी सांखला** ने कहा कि ब्यावर संघ का सौभाग्य है कि यहाँ आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि 54 संत-सतियाँजी विराजमान हैं। मुमुक्षु श्री आशीषजी जैन व मुमक्षु सुश्री पूनमजी जैन ने जीवन का ध्येय जाना, इनके माता-पिता को धन्य है, जिन्होंने ऐसे संस्कारित पुत्र-पुत्रियों को जन्म दिया। उन्होंने मंचासीन सभी पदाधिकारियों का शब्दों से स्वागत-अभिनन्दन किया। **श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा-ब्यावर** ने अपनी सुमधुर आवाज में भजन प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे-

बरसे है वाणी री धार, गुरुवर तुम्हारे द्वार
हीराचन्द्रजी महाराज तुम्ही तो मेरे गुरुवर हो।

विशिष्ट अतिथि माननीय **श्री महेन्द्रकुमारजी सिंघी-कार्यकारी निदेशक-श्री सीमेन्ट ब्यावर** ने अपने उद्बोधन में कहा कि-संयम की भावना से अपने आपको बदलें। इन दोनों दीक्षार्थियों को बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ। वीर परिवारों का भी हार्दिक अभिनन्दन। आज के इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ।

विशिष्ट अतिथि **माननीय श्री पारसमलजी रांका**- प्रमुख समाज-सेवी, अजमेर ने अपने उद्बोधन में मुमक्षु आत्माओं के प्रति हार्दिक शुभकामनाएँ दी तथा रत्नसंघ की शान एवं गौरव को बढ़ाने हेतु प्रेरणा की।

ब्यावर श्रीसंघ द्वारा दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम में पधारे पत्रकार बन्धुओं का सम्मान किया गया। श्रीमान लखपतचन्दजी भण्डारी-जोधपुर ने मुमुक्षु बहिन सुश्री पूनमजी जैन को अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

मुख्य अतिथि माननीय श्री बी. पी. जैन-आयकर आयुक्त, जोधपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि दोनों मुमुक्षुओं का एवं उनके परिवारजनों का अभिनन्दन। यहाँ आने पर आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर के दर्शन हुए, आप-सब लोगों से मिलना हुआ। ये मुमुक्षु ज्ञान और आचरण इन दोनों से स्थायी परिवर्तन की ओर बढ़ रहे हैं। पूर्ण आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। आप-स्व पर के कल्याण मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं। इस प्रेरक प्रसंग से हम कुछ सीखकर जायें। आप दीपक की भांति स्व-पर को प्रकाशित करें। आप वासना से उपासना की ओर बढ़ रहे है। आप अपने जीवन को स्वाध्याय, ध्यान आदि से सफल बनाएँ, यही शुभेच्छा है।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते कहा कि दीक्षा महोत्सव हेतु करमावास एवं निमाज

श्रीसंघ की भी विनतियां थीं, परन्तु ब्यावर को यह अवसर मिला, ब्यावरवासी उत्साह से जुटे हुए हैं, दीक्षा महोत्सव के सभी कार्यक्रमों की बहुत सुन्दर व्यवस्था की, उसके लिए वीरसंघ-ब्यावर को एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, ब्यावर, श्री जैन रत्न युवक परिषद् ब्यावर, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, ब्यावर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। उन्होंने दीक्षा महोत्सव-कार्यक्रम हेतु मुक्ता-मिश्री भवन, जवाहर भवन, महावीर भवन, अणुव्रत भवन, आनन्द भवन, गिब्सन हॉस्टल, गोविन्दम् भवन, गाँधी आराधना भवन, विरद भवन, प्राज्ञ भवन एवं रांका बगीची उपलब्ध करवाने वाले ट्रस्टियों एवं पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

मुमुक्षु भाई-बहिन धन्य हैं। इनके परिवार वालों को हार्दिक धन्यवाद जिन्होंने अपने कलेजे के टुकड़ों को जिनशासन हेतु समर्पित किया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिह्न प्रदान किये गए। संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी ने धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया। अभिनन्दन कार्यक्रम का सुन्दर संचालन श्री हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर एवं श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगाँव ने किया।

अभिनिष्क्रमण यात्रा एवं दीक्षा-समारोह

दिनांक 12 मार्च का मंगल प्रभात जन-जन को हर्षित-प्रमुदित करने वाला रहा। आगन्तुकों ने प्रातः आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन किए। हजारों लोग वीर परिवार के निवास स्थान पर पहुँचे, वीर परिवार के अस्थायी निवास स्थान से अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ हुई। अभिनिष्क्रमण यात्रा में पारिवारिक-परिजन, इष्ट-मित्र एवं विभिन्न श्रीसंघों से पधारे भाई-बहिन तो थे ही, ब्यावर एवं आसपास के संघ-समाज और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के महानुभावों ने विरक्त भाई-बहिन के प्रति आत्मीयता दर्शा कर आशीर्वाद दिया। अभिनिष्क्रमण यात्रा गुरुचरणों में गिब्सन हॉस्टल प्रांगण पहुँची, जिसके पूर्व हजारों भाई-बहिनों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया था। सामायिक-साधना करने वालों की बैठने की अलग व्यवस्था थी तो सबसे आगे वीर परिवारजनों हेतु पूर्व से व्यवस्था सुनिश्चित थी। प्रातः 9 बजे पूर्व गिब्सन हॉस्टल के बरामदे में आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द पधारे। बरामदे के ठीक नीचे दीक्षार्थियों का स्थान था। आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संतरत्न श्री संजयमुनिजी म.सा. एवं श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. एवं महासती श्री समताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 सतीवृन्द के भी इस पावन प्रसंग पर

समुपस्थित रहने से समाज में परस्पर प्रेम सम्बन्ध की बात देखने को मिली। प्रातः करीब 9 बजे प्रवचन का शुभारम्भ हुआ। **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल** ने दीक्षा-महोत्सव में उपस्थित जनसमुदाय को मंगलमय उद्बोधन फरमाते हुए उत्कृष्ट वैराग्य एवं संयम भावना की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करने की प्रभावी प्रेरणा की। पधारे हुए महानुभावों से दीक्षा महोत्सव के अवसर पर कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की प्रभावी प्रेरणा महापुरूषों द्वारा की गई, जिसके फलस्वरूप दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में ब्यावर गिब्सन हॉस्टल की प्रवचन सभा में **पाँच शीलव्रत के खंद** हुए। वीरपिता श्री शिवदयालजी जैन-हरसाना एवं उनके तीन मित्र श्री उदलसिंहजी चौधरी-लीली लक्ष्मणगढ़, श्री दिनेशजी बक्शी-हरसाना, श्री रामचरणजी शर्मा-जावली तथा वीरपिता श्री नरेशजी जैन-जयपुर ने सपत्नीक आचार्यश्री के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार किया। शीलव्रत ग्रहण करने वालों का श्री स्थानकवासी जैन वीर संघ-ब्यावर एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-ब्यावर द्वारा माल्यार्पण से स्वागत व साफा/चून्दड़ी से बहुमान किया गया। लगभग10 बजे विरक्त भाई-बहिन गुरुचरणों में उपस्थित हुए। वेश परिवर्तन कर दीक्षार्थी भाई-बहिन ने आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन किया। **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** ने साधुवेश में समुपस्थित दीक्षार्थी भाई-बहिन से कहा कि जब तक आप 'करेमि भन्ते' के पाठ से दीक्षित न हों तब तक माता-पिता के चरण स्पर्श कर सकते हैं। यहाँ उपस्थित सभी से क्षमायाचना भी कर लें। दीक्षार्थी भाई-बहिन ने माता-पिता, पारिवारिक-परिजन एवं उपस्थित जनसमुदाय से आशीर्वाद लिया और क्षमायाचना की।

आचार्यप्रवर ने माता-पिता एवं पारिवारिक-परिजनों से खड़े होकर दीक्षा की अनुज्ञा चाही तो विरक्त भाई-बहिन के माता-पिता, दादा-दादी, भाई-भाभी, चाचा-चाची एवं अन्य परिजनों ने खड़े होकर सहर्ष दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की। आचार्यप्रवर के संकेत पर ब्यावर संघ एवं रत्नसंघ के शीर्ष पदाधिकारियों ने भी खड़े होकर अनुमति प्रदान की। दीक्षार्थी भाई-बहिन द्वारा सभी संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन करने के बाद आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेणं, तस्सउत्तरी का पाठ बोलकर दीक्षार्थी भाई-बहिन को आलोचना-सूत्र के माध्यम से ध्यान करवाया। कायोत्सर्गशुद्धि-सूत्र के अवसर पर सभी संतरत्नों ने समवेत स्वर में

लोगस्स का पाठ उच्चरित किया।

आचार्यप्रवर ने 'करेमि भन्ते' के पाठ से सावद्य योगों का तीन करण-तीन योग से जीवन पर्यन्त के लिए प्रत्याख्यान करवाया एवं आजीवन सामायिक ग्रहण करायी। जनसमुदाय जो अपलक दीक्षा-पाठ देख-सुन रहा था, ने करेमि भन्ते के पाठ को श्रवण कर श्रमण भगवान महावीर की जय, प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की जय, सभी संत-सतीवृन्द की जय, दीक्षा लेने वाले मुमुक्षु भाई-बहिन की जय जैसे अनेक जयघोष स्वप्रेरित भावना से गुंजायमान करते हुए दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना का लाभ लिया। भक्तों ने गुरु हस्ती, गुरु हीरा-मान के नाम से प्रचलित नारों का उच्चारण भी भावना पूर्वक किया। जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए जनसमुदाय श्रद्धावनत था, दीक्षा और संयम के महत्व के प्रति आबाल-वृद्ध सबकी शुभभावना थी।

आचार्यप्रवर द्वारा घोषणा

दीक्षा-महोत्सव के पावन प्रसंग पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने बड़ी दीक्षा एवं फाल्गुनी चातुर्मासिक पक्खी हेतु निमाज श्रीसंघ को स्वीकृति प्रदान की वहीं ब्यावर श्रीसंघ को फाल्गुनी चौमासी पर उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के ब्यावर विराजने की घोषणा कर ब्यावर श्रीसंघ की भावना का समादर किया, साथ ही **विरक्ता बहिन सुश्री कान्ताजी पींचा की जैन भागवती दीक्षा वैशाख शुक्ला द्वितीया गुरुवार दिनांक 5 मई, 2011 को सरस्वती नगर, जोधपुर में होने की स्वीकृति प्रदान कर अक्षय तृतीया व दीक्षा महोत्सव का अलभ्य अवसर ओसवाल समाज बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर, जोधपुर श्रीसंघ को प्रदान किया।**

उपसंहार- दीक्षा-महोत्सव का कार्यक्रम लगभग 11.30 बजे तक चला। आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के अतिशय प्रभाव से विशाल जनमेदिनी में स्वप्रेरित अनुशासन तो बना ही रहा, अपूर्व शांति, उल्लास और उत्साह भी देखा गया।

व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित करने वालों से अनुरोध किया गया कि वे जब चाहें आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर से व्रत-प्रत्याख्यान अवश्य अंगीकार

करें, खाली हाथ न जावें। अन्त में ब्यावर वीरसंघ के मंत्री द्वारा सूचनाएं प्रसारित की गईं। उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण कर जनसमुदाय दूर से वन्दन-नमन करते हुए हर्ष-हर्ष, जय-जय, गुरु हीरा-गुरु मान के जय-जयकारों से प्रांगण को गुंजायमान करता रहा। बाद में सबने भोजन-प्रसाद ग्रहण किया।

ब्यावर के आबाल-वृद्ध सभी समाज बन्धु पूरे दो दिन दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर हर्षित-उल्लसित भावों से कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सजग रहे। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों एवं देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुजनों की कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी बनी रही। दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम में हर आगत ने ब्यावर श्रीसंघ की आत्मीयता, अपनत्व और सेवाभावना की सराहना की।

नवदीक्षित संत-सती का निमाज नगर में छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरोहण

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6, तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा.के पावन सान्निध्य में पुण्यधरा निमाज में फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा, शनिवार, दिनांक 19 मार्च, 2011 को प्रातः करीब 9 बजे श्री जैन भवन, निमाज में नवदीक्षित संतरत्न श्री आशीषमुनिजी व नवदीक्षिता महासती श्री पूनमजी महाराज की बड़ी दीक्षा सानन्द सम्पन हुई। बड़ी दीक्षा के प्रसंग एवं फाल्गुनी चातुर्मासिक पक्खी पर्व के कारण समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्रीसंघों के साथ देशभर के श्रद्धालुजन गुरु-दर्शन, गुरु-सेवा, गुरु-भक्ति की भावना से निमाज नगर में उपस्थित हुए।

आचार्यप्रवर ने दिनांक 14.3.2011 को ब्यावर से विहार किया। गहलोत कॉलोनी, नानणा, गिरी, हाजीवास क्षेत्रों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते हुए आचार्यप्रवर का 18 मार्च को पुण्यधरा निमाज में हर्षोल्लास पूर्वक मंगल प्रवेश हुआ। निमाज नगर के जैन-जैनेतर जनसमुदाय ने भक्ति-भावना से गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के निमाज पधारने के लिए हृदय की असीम आस्था से गुरुकृपा के लिए हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की। बैंगलुरु , चेन्नई, पनरूटी, पल्लीपट एवं दक्षिण के अन्यान्य ग्राम-नगरों से निमाज मूल के गुरुभक्तों ने अपनी जन्मभूमि में पहुँच कर

बड़ी दीक्षा, फाल्गुनी चौमासी एवं शेखेकाल गुरु-सेवा के सुअवसर का लाभ मिले इस भावना से कुछ दिन पूर्व निमाज पहुँचकर भक्ति-भाव प्रदर्शित किया। अनन्य गुरुभक्त श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल तथा करमावास के ठाकुर साहब सहित जैनेतर बन्धुओं ने आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में करमावास पधारने की पुरजोर प्रार्थना रखी। निमाज के ठाकुर साहब सहित सभी लोगों ने चातुर्मास की विनति भी श्रीचरणों में रखी। गुरु हस्ती के संथारे के पावन प्रसंग पर 20 वर्ष पूर्व मुस्लिम परिवारों ने स्वेच्छा से पशुवध नहीं करने, मांसाहार एवं मांस विक्रय नहीं करने का आदर्श उपस्थित किया था, उसी क्रम में गुरु हीरा के मुखारविन्द से सम्पद्यमान बड़ी दीक्षा के प्रसंग पर 19 मार्च, 2011 के दिन अगता रखकर जीव-दया का आदर्श उपस्थित किया।

जोधपुर, जयपुर, पाली, ब्यावर, बिलाड़ा, सोजत, पीपाड़, नागौर, मेड़ता, गोटन, बजरिया, सवाईमाधोपुर, गंगापुर, हिण्डौन, अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, करमावास मालियान, विजयनगर, अजमेर, पीपलिया, जैतारण आदि ग्राम-नगरों के श्रद्धालु बड़ी दीक्षा पर उपस्थित हुए।

नवदीक्षित संतरत्न एवं नवदीक्षित साध्वीरत्ना के द्वारा आचार्यप्रवर एवं सन्त-सतीवृन्द को वन्दन करने के पश्चात् आचार्यप्रवर ने चउवीसत्थव करवाया। तदनन्तर दशवैकालिक सूत्र के प्रथम चार अध्ययन मूल, अर्थ, विवेचन सहित समझाते हुए नवदीक्षित संतरत्न एवं नवदीक्षिता साध्वीरत्ना को जीवनपर्यन्त तीन करण-तीन योग से एक-एक महाव्रत का स्वरूप एवं हार्द समझाया।

आचार्यप्रवर ने छेदोपस्थापनीय चारित्र की महत्ता बताते फरमाया कि पूर्व में आचारांग सूत्र के माध्यम से छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाया जाता था, लेकिन वर्तमान में दशवैकालिक सूत्र के माध्यम से बड़ी दीक्षा प्रदान की जाती है।

आचार्यप्रवर ने नवदीक्षित संत-सती को पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय के जीव कौन होते हैं, उनकी विराधना के क्या कारण हैं, पूर्व में किए गए दोषों की शुद्धि कैसे होती है, उसका विवेचन प्रस्तुत करते हुए जीवन पर्यन्त के लिए तीन करण-तीन योग से पाप कर्म से बचने की युक्ति समझाई।

आचार्यप्रवर ने पाँच महाव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग का स्वरूप समझाया, एक-एक महाव्रत में पूर्व कृत पापों के शुद्धीकरण और नये कर्म-बन्ध

नहीं करने का संकल्प इतना प्रेरणाप्रद व प्रभावी था कि सभी दत्त-चित्त हो महाव्रतों का स्वरूप जानने-समझने में तल्लीन हो गए। पहले प्राणातिपात में हिंसा नहीं करना, न करवाना और अनुमोदना भी नहीं करना, हिंसा की तरह झूठ, चोरी मैथुन और परिग्रह त्याग को जीवन पर्यन्त के लिए बिना किसी छूट के स्वीकार करना श्रमण धर्म का वैशिष्ट्य है। यही नहीं, एक श्रमण शरीर की भी आसक्ति नहीं रखते हुए शुद्ध संयम की आराधना का लक्ष्य रखता है। जैन संत-सती मुंह पर मुखवस्त्रिका लगाते हैं इसका हार्द बताते हुए आचार्यप्रवर ने कहा-मुंहपत्ति जीव रक्षा के लिए है। मुंह पर मुंहपत्ति हो एवं ऊपर पंखा चले तो, यह अहिंसा की साधना नहीं है।

साधक हर काम यतना के साथ करें। अयतना से पाप-कर्मो का बँध होता है चाहे वह साधक को दिखाई दे या नहीं। जीवन है तो क्रिया करनी पड़ेगी, साधक क्रिया करें, पर यतना से करें। जो यतना से क्रिया करता है उसके पाप-कर्म नहीं बंधते। साधक संसार के सभी प्राणियों को अपने समान समझता है। अपना मान लिया तो फिर किसी का नुकसान करने की भावना तक नहीं होती। जो अपने समान दूसरों को समझता है उसके अनेकानेक पाप कम हो जाते हैं। व्यवहार जगत् में भी अपनत्व आत्म शांति का कारण बनता है।

आचार्यप्रवर ने किसी क्रिया को करने के पहले ज्ञान करने की आवश्यकता बताते फरमाया कि ज्ञान के साथ क्रिया होगी तो आसक्ति, ममत्व और कर्मबन्ध कम होते चले जायेंगे।

आचार्यप्रवर ने बताया कि जिस साधक में स्थान, वस्तु, आहार में सुख-साता की आसक्ति रहती है वह साधना नहीं कर पाता। प्रमादी भी साधना में आगे नहीं बढ़ता। जिस साधक में तप की प्रधानता है, भीतर-बाहर में एकरूपता है वह साधना पथ पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ता है।

संत शान्त होता है। क्षमा, सहनशीलता और प्रसन्नता साधक के जीवन में है तो वह अनुकूल-प्रतिकूल हर परिस्थति में अपने-आपको सम रख सकेगा।

आचार्यप्रवर ने सम्यक्दृष्टि-मिथ्यादृष्टि का स्वरूप समझाते हुए बताया कि सम्यक्दृष्टि यतना पूर्वक काम करता है जब कि मिथ्यादृष्टि दूसरों को सुधारने की चेष्टा करता है।

नवदीक्षितों को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाने के अनन्तर श्री आशीषमुनिजी महाराज और महासती श्री पूनमजी महाराज के नाम पूर्व की भाँति यथावत् रखे गए।

प्रवचन सभा में व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने संक्षेप में, किन्तु सारगर्भित शब्दों में विषय-वस्तु का विवेचन किया। **महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.** ने फरमाया-भूतकाल भूलों से भरा है। चातुर्मासिक पर्व भूलों की भूगोल को पढ़ने का पर्व है। भूल-सुधार से पापात्मा पुण्यात्मा बनकर परमात्म-पद प्राप्त कर सकता है। **तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा.** ने छज्जीवणी को लक्ष्मण रेखा निरूपित करते हुए कहा कि यह पाप, ताप, अभिशाप का नाश करती है। साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म .सा. की भावना आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में रखते हुए तत्त्वचिन्तिका महासतीजी ने कहा-आपश्री जोधपुर चातुर्मास करने की घोषणा फरमायें, मैं गुरुणीजी महाराज का सन्देश लेकर ही श्रीचरणों में उपस्थित हुई हूँ।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने अपने विचार रखते फरमाया कि यतना से जीने वाले की यातनाएँ छूट जाती हैं। यातना समाप्त करने के लिए एकान्त चाहिये। जहाँ भीड़ है वहाँ पीड़ा है। नवदीक्षित संत-सतीवृन्द के प्रति अपनी मंगल मनीषा व्यक्त करते हुए मुनिश्री ने कहा कि इस राजमार्ग में आकर मन में खेद नहीं होना चाहिये और चारित्र में भी कोई कसर नहीं छोड़ना चाहिये। नवदीक्षितों को खामियां छोड़कर खूबियाँ ग्रहण करनी है। जैसे माँ की ममता कभी छूटती नहीं, वैसे ही साधु की समता भी कभी कम नहीं होनी चाहिये।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अनन्त करुणार्द्र प्रभु महावीर ने साधक की साधना को तेजस्वी बनाने के लिए अनेक विधि-विधान, नियम-उपनियम की संरचना की। छोटी दीक्षा और बड़ी दीक्षा में फर्क है। गुरु ने सात दिन पूर्व छोटी दीक्षा दी तब से आज दिन तक रोटी का व्यवहार नहीं था। यह भेद नहीं, शास्त्र का कवच है। ज्ञानी कहते हैं-बड़ी दीक्षा में पूर्व पर्याय का छेद है तथा महाव्रतों में आरोहण है।

छेद क्या है? छेद दो प्रकार का होता है। आगम की स्वाध्याय करने वाले जानते हैं। एक है स-अतिचार तो दूसरा है निर्-अतिचार। अतिचार लगने पर दीक्षा पर्याय का छेद करके पुनः महाव्रतों में आरोहण करवाया जाता है वह सातिचार छेद है। आज की दीक्षा बड़ी दीक्षा है, निरतिचार दीक्षा है। सात दिन परीक्षा के थे। परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले साधक को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरुढ़ करवाया

जाता है। आपने अभी देखा है, आचार्यप्रवर का एक-एक वचन अनुभवपूर्ण निकल रहा था। उद्‌बोधन इन्हें (नवदीक्षितों को) है तो सम्बोधन हमें भी है। आज का पर्व स्व-निरीक्षण का है। जो जिनके साथ रहे उनके साथ वैर-विरोध का भाव न हो।

इन नवदीक्षितों का आज से संयम पर्याय प्रारम्भ होने वाला है। इन नवदीक्षितों ने गुरु साक्षी से पापों की आलोचना की है और जीवन का एक लक्ष्य बनाया है कि मैं श्रमण हूँ इसलिये मेरी हर क्रिया श्रमणोचित हो। ये नव-दीक्षित निरतिचार संयम-साधना करें, जिनशासन की शोभा बढ़ायें यही मंगल मनीषा है।

मुनिश्री के उद्बोधन पश्चात् निमाज श्रीसंघ की ओर से मोक्षद्वार ज्ञान पत्रिका के सम्पादक अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने पूज्य गुरुदेव, संत-सतीवृन्द की कृपा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की।

अनेक ग्राम-नगरों ने सन्तों एवं महासती मण्डलों के चातुर्मास की भावपूर्ण विनति प्रस्तुत की। प्रत्याख्यान के अनन्तर आचार्यप्रवर ने मांगलिक प्रदान की। *-श्री नौरतन मेहता*

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 73वें जन्म-दिवस पर त्याग-तप की प्रभावना

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का जन्म-दिवस आदि तीर्थंकर भगवान आदिनाथ के जन्म-कल्याणक चैत्र कृष्णा अष्टमी को उपस्थित होता है, अतः गुरु हीरा का जन्म-दिवस सहज स्वाभाविक रूप से संघ सदस्यों के मानस-पटल पर अंकित रहता है।

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 73 वां जन्म-दिवस पुण्यधरा निमाज में चतुर्विध संघ की समुपस्थिति में त्याग-तप के साथ मनाया गया। प्रवचन सभा में सर्वप्रथम नवदीक्षिता महासती श्री पूनमजी म.सा. ने गुरु हीरा के उपकारों से प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. ने भी गुरु गुणगान करते हुए आचार्यश्री के सुदीर्घ-स्वस्थ जीवन की शुभकामना की। महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. ने आज के दिन को कृतज्ञता ज्ञापित करने का दिवस बताते कहा कि आचार्यश्री सरलता के कारण बाल हैं तो विचारों की क्रांति के कारण युवा हैं वहीं अनुभव की अनुभूतियों से आप प्रौढ़ भी हैं। आचार्य श्री हीरा के प्रति शुभकामना व्यक्त करते महासतीजी ने आपके दीर्घायु व उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामना की।

महासती श्री रुचिताजी म.सा. ने अपनी बात-''खुशियों का दिन आया, हम खुशियाँ मनाते हैं, गुरुदेव के चरणों में हम शीष झुकाते हैं'' गीत की चन्द पंक्तियों के अनन्तर गुरु गुणगान करके गुरु हीरा की विशेषताएँ बताईं। महासती श्री रक्षिताजी म.सा., महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा., महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. ने गुरु हीरा के प्रेरक संस्मरण रखते हुए दायित्व-निर्वहन के प्रति आपश्री की सजगता पर प्रकाश डाला।

श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने आचार्यप्रवर की आत्मीयता के चन्द उदाहरण रखते हुए बताया कि आपश्री अनुशासन में रहने वाले महापुरुष हैं वहीं आपको अनुशासन करना आता है। आप दृढ़ संकल्प के धनी हैं, प्रवचन-प्रभाकर हैं और समस्याओं के सही समाधान निकालने में माहिर हैं। श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने कहा कि आज हर वक्ता गुरु के गुणगान कर रहा है इसके पीछे क्या कारण है ? गुरु के प्रति हमारी आस्था है। आचार्य श्री हमारी आस्था के केन्द्र हैं वहीं आपश्री अपने-आपमें संस्था भी हैं। गुरु के गुणगान करने से हम अपने में गुणग्राहकता का भाव जगाते हैं। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने कहा कि आज के पावन प्रसंग पर केवल शब्दों की अभिव्यक्ति ही न हो जीवन की अनुभूति भी हो। आज अर्चा का नहीं आचरण का दिन है। शब्दों में श्रद्धा व समर्पण तो हो ही, हम अपने जीवन का मूल्याकंन भी करें। मुनिश्री ने कहा कि वह शिष्य धन्य है जिसके हृदय में गुरु विराजमान है पर वह शिष्य महाधन्य है जो गुरु के हृदय में स्थान पा जाता है। आपश्री प्रवचन-प्रभाकर हैं, लेकिन आपके प्रवचन प्रभाव जमाने के लिए नहीं, जन-जन के मन को स्वभाव में लाने की प्रेरणा करते हैं। भद्रबाहू स्वामी ने आचार्य की गुणगरिमा का वर्णन किया ठीक वैसे ही आचार्य श्री हीरा रत्नसंघ की उज्ज्वल परम्परा की महिमा बढ़ा रहे हैं। आपश्री में उदारता है, सरलता है और सेवाभावना का गुण भी है। आप सहिष्णु हैं। समुद्र में ज्वार भाटे आते रहते हैं ऐसे ही संघ में समस्याएँ भी आती रहती है, आप समस्याओं का सम्यक् निदान निकालते हैं और संघ की दीप्ति बढ़ाते हैं। महान् अध्यवसायी मुनिश्री ने अपनी ओर से एवं उपाध्यायप्रवर सहित सभी संत-सतीवृन्द की ओर से मंगल भावना व्यक्त करते कहा कि जहाँ होगा गुरु का इशारा वहीं होगा कदम हमारा यह नारा नहीं, जीवन मंत्र बने।

परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि असंख्य वर्ष बीत जाने के बाद भी हम पंचम आरे में बैठे हुए तीसरे

आरे वालों के गुणगान करते हैं, उनको याद करते हैं। भगवान आदिनाथ की सरलता, सहिष्णुता, हलुकर्मीपन आज भी याद किया जाता है। भगवान की करोड़ पूर्व की आयु थी, पर उस समय जीवन-निर्माण का कोई संग नहीं, कोई रंग नहीं था, इसलिये साधना का एक चरण भी आगे बढ़ाना मुश्किल था। उस समय की निस्पृहता देखिये कि एक अर्न्तमुर्हूत में हाथी के हौदे पर बैठी माता मरुदेवी को केवलज्ञान हो गया। सरलता-सचेतनता का इससे बढ़कर और कोई दृष्टान्त क्या होगा ? साठ हजार वर्ष में चक्रवर्ती भरत जो काम नहीं कर पाये, भगवान ऋषभदेव के दो शब्द काम कर गये। भगवान ने कहा-मैं वह राज बताता हूँ जिसके सहारे वृत्तियाँ बदली जा सकती हैं। बाहुबलि को कैसे केवलज्ञान मिला, आप सुन चुके हैं।

आपने इस युग में सुना है, देखा है कि आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.) ने इसी पुण्यधरा पर संथारा किया, मृत्यु को महोत्सव बनाया। भगवन्त की सरलता, विचक्षणता, सहिष्णुता के बारे में मैं क्या कहूँ ? विभिन्न परम्पराओं के वरिष्ठ संतों ने खुले मन से जिस उदारता के साथ भगवन्त के लिए लिखा वह आप-हम-सबको प्रेरणा प्रदान करने वाला है।

आचार्यश्री ने कहा-अभी मेरे लिए जो बातें कही, मैं तो इतना ही कहूँगा कि भगवन्त मुझे जैसा बनाना चाहते थे मैं वैसा बन नहीं सका। मैं उस दिव्य दिवाकर के श्रीचरणों में रहकर भी शत-प्रतिशत खरा नहीं उतर सका। जीवन को बनाने के साथ भगवन्त के शासन को बढ़ाने में मुझसे जो प्रमाद हो रहा है, उसे पुरुषार्थ के साथ पूरा करूँ तथा संघ में संगठन, श्रावकों में श्रद्धा और श्रमणों में समता बढ़ा सकूँ, यही भावना है।

आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस के प्रसंग पर निमाज में पाँच शीलव्रत के खंद हुए। श्रीमती व श्री प्रेमचन्दजी गौड़, श्रीमती व श्री मोहनलालजी प्रजापत, श्रीमती व श्री लालूरामजी कुमावत, श्रीमती व श्री मांगीलालजी तिवाड़ी और श्रीमती व श्री चन्द्रशेखरजी पाठक ने आचार्यश्री के मुखारविन्द से शीलव्रत के प्रत्याख्यान अंगीकार किये जिनका निमाज श्रीसंघ की ओर से माल्यार्पण से स्वागत व साफा-चून्दड़ी के माध्यम से सत्कार किया गया।

संघाध्यक्ष श्री बम्ब साहब ने निमाज मूल के 73 के बजाय 93 एकासन होने के साथ आयंबिल-उपवास जैसी तपश्चर्याओं में निमाज के उत्साह पर संतोष व्यक्त किया। कुशालपुरा, करमावास, जैतारण के संघ सदस्यों ने आचार्यश्री के

श्रीचरणों में क्षेत्र फरसने की पुरजोर विनति दोहराई। निमाज की भांति जोधपुर सहित अनेक ग्राम-नगरों व चेन्नई-मुम्बई जैसे महानगरों तक में श्रावक-श्राविकाओं ने स्व-प्रेरित भक्ति-भावना से गुरु हीरा के जन्म-दिवस पर त्याग-तप का आदर्श उपस्थित किया। आचार्यश्री के जन्म-दिवस कर सामूहिक एकासन का कार्यक्रम देशभर में उत्साह से सम्पन्न हुआ।

जोधपुर में स्वाध्यायी संगोष्ठी सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 06 मार्च 2011 को जोधपुर के स्वाध्यायियों की संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक में आयोजित किया गया। साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के प्रभावी व प्रेरक उद्‌बोधन के पश्चात् विगत 10 एवं 20 वर्षों से अधिक सेवा प्रदान करने वाले स्वाध्यायी जो पीपाड़ स्वाध्यायी सम्मेलन के अवसर पर नहीं पधार सके, उन्हें रजत पदक तथा सम्मान-पत्र से सम्मानित किया गया। पर्युषण पर्व-2009 एवं 2010 में सेवा प्रदान करने वाले स्वाध्यायियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। स्वाध्यायियों ने अपने अनुभव भी सुनाए। संयोजक श्री नवरतन जी डागा ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश जी सालेचा ने किया।

पल्लीवाल क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 2 से 4 मार्च 2011 तक पल्लीवाल क्षेत्र के गंगापुर सिटी, करौली, बरगमा, हिण्डौन सिटी, वर्द्धमान नगर हिण्डौन, गोपालगढ़-भरतपुर, पहरसर, नदबई, खेरली, खौह, मण्डावर, अलवर आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ की मार्गदर्शक श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, स्वाध्याय संघ शाखा पोरवाल के परामर्शदाता श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय संघ शाखा पल्लीवाल के परामर्शदाता श्री सुरेश जी जैन-खेरली, स्वाध्याय संघ शाखा पल्लीवाल के संयोजक श्री कृष्णमोहन जी जैन-हिण्डौन सिटी, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता एवं शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री महावीरप्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में

भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्रों की स्थापना की गई, आगामी परीक्षा 31 जुलाई 2011 हेतु आवेदन पत्र भरवाये गये, 21 नये स्वाध्यायी बनाये गये, पुराने स्वाध्यायियों की इस वर्ष सेवा देने हेतु स्वीकृति प्राप्त की गई एवं बोर्ड के पूर्व संचालित केन्द्रों की समीक्षा की गई। संस्कार केन्द्र के अन्तर्गत चलने वाली आध्यात्मिक पाठशालाओं की समीक्षा की गयी तथा नई पाठशालाएं भी प्रारम्भ की गई। पर्युषण में स्वाध्यायी आमंत्रित करने हेतु प्रेरणा की गयी। जिनवाणी के सदस्य भी बनाये गये। सभी स्थानों पर स्थानक में आकर सामूहिक प्रार्थना एवं स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा करने के साथ ही अधिकांश स्थानों पर इस हेतु प्रत्याख्यान भी करवाए गए।

संस्कार केन्द्र का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के अन्तर्गत सिंहपोल केन्द्र द्वारा आचार्य श्री हस्ती जन्मशताब्दी की पावन वेला पर 26 दिसम्बर, 2010 को सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें संस्कार केन्द्र की दस शाखाओं ने भाग लिया। केन्द्र के बच्चों ने भजन, कविता, गीत, सामायिक के पाठ प्रस्तुत किये। महावीर नगर केन्द्र के बच्चों द्वारा 'बर्थ डे हम टॉफी बांटकर नहीं मनाएँ, सामायिक करके मनाएँ' तथा डंको बाजे केन्द्र द्वारा 'मनुष्य जीवन अनमोल रे' विषय पर नाटक मंचित किए गए। नाटक बहुत ही सुन्दर एवं प्रभावी थे। संस्कार केन्द्र के सचिव श्री सुभाष जी हुण्डीवाल ने अपने उद्‌बोधन में संस्कार केन्द्र के उद्‌देश्य बताते हुए, छोटी-छोटी बातों से बच्चों को संस्कारित करने के उपाय बताए। संस्कार केन्द्र के सहसचिव श्रीमती शान्ता जी कर्नावट ने बच्चों को संस्कार पर आधारित भजन सुनाये तथा संस्कार केन्द्रों की महत्ता का वर्णन किया। संस्कार केन्द्र के कोषाध्यक्ष श्री मन्नालाल जी बोथरा ने 'संस्कार केन्द्र की आवश्यकता' के बारे में बताया। वार्षिकोत्सव में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार दिये गये। सभी केन्द्रों के बच्चों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। सिंहपोल की अध्यापिका श्रीमती सुशीला जी गोलेछा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

-विमला मेहता, संयोजक

शिक्षण संस्थान,जयपुर में प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर

जयपुर- सम्पूर्ण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभावान छात्रों का जीवन सुसंस्कारित, सुखद, समुज्ज्वल एवं यशस्वी बनाने के लिए संस्थान विगत 36 वर्षों से कार्यरत है। इस वर्ष भी 10वीं अथवा 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को सत्र 2011-2012 में प्रवेश दिया जायेगा। यह संस्थान संस्कृत, प्राकृत एवं जैन धर्म-दर्शन का विशेष अध्ययन कराने के साथ विद्यालयीय, महाविद्यालयीय एवं विश्वविद्यालयीय अध्ययन में नियमित प्रवेश के साथ छात्रों के व्यावहारिक अध्ययन पर भी पूरा ध्यान देता है। यहाँ से निकले अनेक प्रतिभासम्पन्न छात्र अच्छे स्थानों एवं पदों पर कार्य कर रहे हैं। प्रवेशार्थी छात्र अपना नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, फोन नं., धार्मिक योग्यता एवं पूर्व के दो वर्षों की अंकतालिकाओं की प्रमाणित प्रतियाँ संलग्न कर आवेदन-पत्र प्रेषित करें। *-विजय मेहता, अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, आचार्य हस्ती भवन, दैनिक भास्कर के पास, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर- 302020, मो. 9462322197*

जैन धर्म दर्शन में प्रजातन्त्रीय मूल्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी जयपुर में सम्पन्न

सरस्वती उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसन्धान संस्थान-जयपुर, राजस्थान संस्कृत अकादमी-जयपुर एवं जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 29 मार्च से 31 मार्च 2011 तक 'जैन धर्म-दर्शन में प्रजातन्त्रीय मूल्य' विषयक 28 वीं अखिल भारतीय जैन विद्या संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए पद्म भूषण श्री डी.आर. मेहता ने कहा कि महावीर का समानता का सिद्धान्त प्रजातन्त्र की आत्मा है। अचौर्य एवं अनुकम्पा का सिद्धान्त प्रजातन्त्र को जैन धर्म की प्रमुख देन है। प्रो. के.एल. कमल, पूर्व कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रजातन्त्र में अनेकान्त दर्शन आवश्यक तत्त्व है। यह प्रजातन्त्र का प्राण है। विशिष्ट अतिथि डॉ. महावीर राज गेलड़ा, पूर्व कुलपति, जैन विश्वभारती, लाडनूँ ने कहा कि लालसाओं पर नियन्त्रण से ही प्रजातन्त्र सफल हो सकता है। संगोष्ठी के विशिष्ट वक्ता प्रो. धर्मचन्द जैन, जोधपुर ने प्रजातन्त्र के स्वतन्त्रता, समानता, बंधुत्व एवं न्यायशीलता नामक मूल्यों की चर्चा करते हुए उनको जैन धर्म-दर्शन से पुष्ट

किया। उन्होंने प्रजातन्त्र में स्वानुशासन पर बल दिया। विशिष्ट व्याख्याता प्रो. दयानन्द भार्गव 'विपुल' ने कहा कि वर्तमान प्रजातन्त्र का आधार बुद्धि है, जबकि प्रजातन्त्र की सफलता के लिए आत्मा को आधार बनाना चाहिए। उसी के आधार पर समानता, स्वतन्त्रता एवं बन्धुत्व के सूत्र घटित होते हैं। विशिष्ट व्याख्याता के रूप में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ने कहा कि जैन धर्म और दर्शन का अणुव्रत और अनेकान्तवाद प्रजातन्त्र की समस्याओं को सुलझा सकता है। संगोष्ठी संयोजक डॉ. पी.सी. जैन ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सुन्दर संचालन जैन अनुशीलन केन्द्र के निदेशक डॉ. अनिल जैन ने किया।

संगोष्ठी पाँच सत्रों में सम्पन्न हुई, जिसमें शताधिक शोधार्थियों, विद्वानों एवं जिज्ञासुओं ने भाग लिया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री एन.के. जैन ने कहा कि प्रजातन्त्र में मानवाधिकार का तात्पर्य है जैसा व्यवहार हम दूसरों से चाहते हैं वैसा ही व्यवहार हम उनके प्रति भी करें। अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री पानाचन्द जैन ने कहा कि प्रजातन्त्र में दण्ड की अवधारणा के साथ-साथ जैन दर्शन में वर्णित प्रायश्चित्त की अवधारणा को भी जोड़ना चाहिए। विशिष्ट वक्ता डॉ. सुषमा सिंघवी ने पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया तथा कहा कि सुकृत की प्रशंसा और दुष्कृत की आलोचना त्रिविध योग एवं करण से की जानी चाहिए। संगोष्ठी से यह बात उभरकर आई कि प्रजातन्त्र के सन्दर्भ में जैन सिद्धान्तों की प्रयोगधर्मिता के सम्बन्ध में शोध की आवश्यकता है।

'भारतीय चिन्तन में स्याद्वाद' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी दिल्ली में सम्पन्न

लाल बहादुर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली में 28 मार्च 2011 को 'भारतीय चिन्तन में स्याद्वाद' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विद्यापीठ के कुलपति प्रो. वाचस्पति उपाध्याय ने की। प्रमुख वक्ता प्रो. दयानन्द भार्गव, जयपुर ने वेद एवं विभिन्न भारतीय दर्शनों में विद्यमान अनेकान्तवाद/स्याद्वाद की चर्चा करते हुए उसकी महत्ता का प्रतिपादन किया। संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन संगोष्ठी संयोजक एवं जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो. वीरसागर जैन ने किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस.आर. भट्ट, दिल्ली ने की तथा विशिष्ट व्याख्यान प्रो. धर्मचन्द, जोधपुर ने दिया। उन्होंने स्याद्वाद को अनेकान्तवाद की

अभिव्यक्ति का माध्यम बताते हुए कहा कि स्याद्वाद पर जो इतर दर्शनों द्वारा दोषारोपण किए जाते हैं, वे भ्रान्त हैं। डॉ. राजकुमार छाबड़ा, जोधपुर ने स्याद्वाद की अवधारणा को स्पष्ट किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की प्रो. शशिप्रभा कुमार ने की तथा विशिष्ट व्याख्यान प्रो. दामोदर शास्त्री, लाडनूँ ने दिया।

संगोष्ठी में शास्त्रीय चर्चा का स्वरूप दृग्गोचर हुआ। विद्यापीठ के दर्शन-संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विशुद्धानन्द सहित सांख्य, मीमांसा, वेदान्त, न्याय-वैशेषिक आदि सभी भारतीय दर्शनों के विद्वान् उपस्थित थे। वे विगत 15-20 दिनों से जैन दर्शन के स्याद्वाद विषयक दार्शनिक ग्रन्थों का आलोडन कर रहे थे। संगोष्ठी की यह बहुत बड़ी सफलता रही कि इतर दर्शनों के विद्वानों ने शास्त्रीय अध्ययन करने के साथ चर्चा में रुचिपूर्वक भाग लिया।

समापन सत्र आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज के सान्निध्य में कुन्दकुन्द भारती में आयोजित हुआ, जिसमें आचार्य श्री ने स्याद्वाद के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यापीठ के कुलपति प्रो. वाचस्पति उपाध्याय ने भी सम्बोधित किया। संगोष्ठी के संचालन में डॉ. अनेकान्त जैन, डॉ. कुलदीप जैन का भी योगदान रहा। डॉ. सुदीप जैन, डॉ. जयकुमार उपाध्याय ने भी सक्रिय भाग लिया।

'संस्कृत वाङ्मय में समाज एवं राष्ट्र' विषयक संगोष्ठी

प्रोफेसर दयानन्द भार्गव के 75 वें जन्म-दिवस पर जयपुर में 5-6 मार्च 2011 को 'संस्कृत वाङ्मय में समाज एवं राष्ट्र' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, लाडनूँ आदि स्थानों से प्रमुख विद्वानों ने भाग लिया। संगोष्ठी में महाभारत, भगवद् गीता, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, वैदिकदर्शन, स्मृति-साहित्य, आधुनिक संस्कृत साहित्य आदि के आधार पर समाज एवं राष्ट्र विषयक शोध-निबन्ध प्रस्तुत किए गए।

उरुग्वे के उपराष्ट्रपति को दिया शाकाहारी भोज

चेन्नई- देश-दुनिया के प्रतिष्ठित विधि प्रतिष्ठान (लॉ फर्म) सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल अटोर्नीज की ओर से दक्षिण अमेरिका के देश उरुग्वे के उपराष्ट्रपति सिनेटर डेनिलो एस्टोरी एवं उनके साथ आये उच्चस्तरीय शिष्टमण्डल को 22

फरवरी 2011 को शुद्ध शाकाहारी भोज दिया गया। उपराष्ट्रपति के साथ उरुग्वे सरकार में मंत्री, उच्चाधिकारी तथा भारत में उरुग्वे के राजदूत सहित करीब 30 राजनीतिक प्रतिनिधि और उरुग्वे के वाणिज्य, उद्योग और न्याय क्षेत्र की इतनी ही हस्तियाँ मौजूद थीं। यहाँ इण्टरनेशनल लॉ सेण्टर के नवनिर्मित सभागार में हुए एक भव्य कार्यक्रम की समाप्ति पर फर्म के सीईओ डॉ. विनोद सुराणा ने मेहमानों को आहार के लिए आमंत्रित करते हुए बताया कि उनकी फर्म की नीति-परम्परा के अनुसार सदैव सबको शाकाहारी भोज ही दिया जाता है। इससे पूर्व फर्म के संस्थापक श्री पी.शिखरमल सुराणा (अध्यक्ष : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल), श्रीमती लीलावती सुराणा, श्री अशोक आँचलिया, श्रीमती रश्मि सुराणा आदि ने उपराष्ट्रपति और अन्य शीर्ष अधिकारियों का शॉल, स्मृति-चिह्न और मुक्ताहार से सम्मान किया। उल्लेखनीय है कि फर्म द्वारा नित्य संचालित केण्टीन में शुद्ध शाकाहार की व्यवस्था ही रहती है। फर्म के सभी प्रकार के व्यावसायिक सौदों, समझौतों और सम्बन्धों में मद्य-मांस का पूर्ण निषेध रहता है।

जैन संतों के सम्मान में डाक टिकिट

भारत सरकार के डाक विभाग की ओर से इस वर्ष एक जैन साध्वी व एक जैनाचार्य पर स्मारक डाक टिकिट जारी किया जाएगा। 30 अप्रेल 2011 को स्थानकवासी जैन साध्वी उमराव कुंवर 'अर्चना' पर पाँच रुपये मूल्य वर्ग के डाक टिकिट का लोकार्पण अजमेर (राज.) में होगा। उमराव कुंवर 'अर्चना' प्रथम जैन साध्वी होगी जिनके सम्मान में टिकट जारी होगा। आचार्य श्री जयमल जी म.सा. की स्मृति में डाक टिकिट 25 सितम्बर 2011 को जारी होगा।

संक्षिप्त-समाचार

जयपुर- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी जी म.सा., महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, ने होली चौमासी पर्व दया, पौषध एवं संवर साधना के साथ मनाया। 26 मार्च, 2011 को भगवान आदिनाथ का जन्म-कल्याणक व पूज्य हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्म-दिवस तेले, बेले, उपवास, एकासन, दया, पौषध, संवर, सामायिक साधना एवं तप त्याग पूर्वक मनाया गया। जन्म-दिवस पर आचार्य श्री के जीवन पर आधारित धार्मिक प्रश्नोत्तरी आयोजित की गयी, तत्पश्चात् प्रश्नमंच का आयोजन किया गया।

उज्जैन- विदुषी महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. की निश्राय में अध्यात्म योगी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा दिवस 5 फरवरी 2011 के पावन प्रसंग पर तप, आराधना और धार्मिक आयोजन सम्पन्न हुए। सामूहिक जाप, सामायिक और एकासन के साथ गुणानुवाद सभा हुई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। सतीवृन्द एवं श्रावकवृन्द ने आचार्य श्री का गुणानुवाद किया। इस अवसर पर पधारी दीक्षार्थी बहिन श्रीमती चन्द्रकला जी बनवट का अभिनन्दन व बहुमान किया गया। *-प्रेमचन्द बाफना*

जलगाँव- जैन भवन, एम.आई.डी.सी. में 19 मार्च 2011 को फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व व्याख्यात्री महासती श्री विमलेश प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में धर्म-ध्यान एवं तप-साधना के साथ मनाया गया। अनेक तपस्याएँ एवं करीब 80 पौषधव्रत हुए। इस अवसर पर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री ललित प्रभा जी आदि ठाणा 3 भी विशेष रूप से पधारे। सौहार्द एवं समन्वय का अद्‌भुत नजारा देखने को मिला। मुमुक्षु बहिन सुश्री कांता पींचा एवं उनके माता-पिता महासती जी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। जलगाँव श्री संघ द्वारा उनका शॉल, माला एवं अभिनन्दन-पत्र द्वारा सत्कार किया गया। श्री जैनरत्न युवक परिषद् द्वारा भी दीक्षार्थी बहिन, उनके परिवार एवं श्रीमान् कांतिलाल जी चौधरी का सत्कार किया गया। 20 मार्च, धुलंडी के दिन श्री जैन रत्नयुवक परिषद एवं महावीर जैन युवा मंच के माध्यम से दया व्रत का आयोजन किया गया। करीब तीन सौ लोगों ने रंग न खेलकर एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। सभी धर्म-साधना के रंग में रंगे हुए थे। महासती श्री विमलेश प्रभा जी आदि ठाणा के पदार्पण से जलगाँव में विशेष धर्म जागरणा प्रस्फुरित हो रही है। इससे पूर्व भी 5 फरवरी को परमपूज्य आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में करीब 100 लोगों ने दयाव्रत की आराधना की। वंसत पंचमी के दिन महासती जी ने युवकों को ज्ञानार्जन हेतु नये पाठ दिये एवं तप के साथ ज्ञानवृद्धि हेतु महती प्रेरणा प्रदान की।

सवाईमाधोपुर- चेत्रकृष्णा अष्टमी 26 मार्च 2011 को रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज का 73 वां जन्म-दिवस तप-त्याग के साथ उत्साहपूर्वक महावीर भवन में मनाया गया। इस अवसर पर एक मुहूर्त की पांच-पांच सामायिक, एकासन एवं उपवास किए गए। प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक चले कार्यक्रम में बहिनों द्वारा नवकार महामंत्र के जाप, सामूहिक गुरु गुणगान,

सामूहिक प्रार्थना का सुन्दर आयोजन हुआ। संघ अध्यक्ष श्री बाबूलाल जी समीधी वाले, पूर्व अध्यक्ष श्री सुबाहु कुमार जी सर्राफ, मंत्री पारसचन्द जी बोहरा, युवा रत्न श्री कुशल जी गोटेवाला, श्री राजमल जी चौधरी आदि ने आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को वर्तमान युग का महान आचार्य बताते हुए उन्हें आचार्य हस्ती द्वारा परखा गया सच्चा संघ नायक बताया एवं दीर्घायुष्य की कामना की।

बैंगलुरु- श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ द्वारा 20 फरवरी 2011 को संघ की 31 वीं वर्षगांठ एवं स्वाध्यायी, परीक्षार्थी तथा पत्राचार के अभ्यर्थियों का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, प्रायोजक गण एवं अध्यक्ष महोदय के कर कमलों से परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किये गए। साथ ही वर्ष 2010 में सेवा प्रदान करने वाले स्वाध्यायियों का रजत पदक पहनाकर सम्मान किया गया।

लोनावाला- आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिश्रेष्ठ श्री प्रेमचन्द जी म.सा., प्रज्ञारत्न श्री जितेश जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में 10 से 22 मई, 2011 तक आवासीय ग्रीष्मकालीन 'जीवन जागृति शिक्षा संस्कार शिविर' लोनावला-खण्डाला में आयोजित होगा। प्रवेश लेने के इच्छुक शिविरार्थी *सम्पर्क करें-श्री पीयूष जैन-09678317189, श्री विजय पटवा-09850127307*

मेड़ता- श्री जयमल जैन छात्रावास में जैन छात्रों के लिए प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। छात्रावास में शैक्षणिक सुविधाओं के साथ नियमित सामायिक-स्वाध्याय, जैन धर्म-दर्शन की शिक्षा एवं साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं। सभी सुविधाएँ 550/- मासिक देय पर उपलब्ध है। निर्धन छात्रों हेतु निःशुल्क सुविधा भी है। *सम्पर्क सूत्र-श्री जयमल जैन छात्रावास, मीरा मन्दिर के पास, मेड़ता शहर-341510, जिला-नागौर (राज.) फोन: 01590-231160, मो. 9414119283*

बधाई/चुनाव

श्री मांगीलाल हिरण बने निदेशक एवं अध्यक्ष

बैंकाक- श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर के पूर्व छात्र श्री मांगीलाल

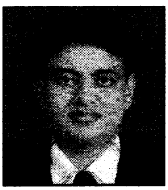

हिरण को इण्डियन थाई डायमण्ड कलरस्टोन एसोशिएशन (ITDCA) बैंकाक का निदेशक चयनित किया गया है। थाईलैण्ड एवं भारत सरकार के वाणिज्य मन्त्रालय के अन्तर्गत कार्यरत इस एसोशियन में जवाहरात के क्षेत्र में कार्यरत लोगों में

से 9 निदेशक चुने जाते हैं। मूलतः रणसीगाँव के निवासी मांगीलाल हिरण कतिपय वर्षों से बैंकाक में व्यापार कर रहे हैं। वे अपने व्यवहार में मधुर, मृदु, कर्त्तव्यनिष्ठ, प्रेमिल एवं प्रामाणिक हैं। इसके साथ ही वे नारायण सेवा संस्थान की थाईलैण्ड शाखा के अध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं।

दिल्ली- **The Republic of China, Ministry of Foreign Affairs & Muslim world league** द्वारा 21-22 फरवरी 2011 को आयोजित **"Dialogue A common Human Bond"** विषयक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में जैन दर्शन विभाग के सहायक आचार्य तथा जिन फाउण्डेशन के मानद सचिव डॉ. अनेकान्त जैन ने **"Civilization from Discord to Reconciliation (With Special reference to jain theory of Anekāntavāda"** विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। सम्मेलन में विभिन्न देशों से विभिन्न धर्मों के लगभग चालीस विद्वान तथा धर्म गुरु सम्मिलित हुए।

जयपुर- छठी कक्षा के छात्र हर्षित जैन पुत्र श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन एवं सुपौत्र श्री ज्ञानचन्द जैन ने इण्टरनेशनल मास्टर मेथेमेटिकस ओलम्पियाड-2010 में देशभर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

जयपुर- अभिषेक जैन सुपुत्र श्री अशोक कुमार जी जैन 'हरसाना वाले', जयपुर,

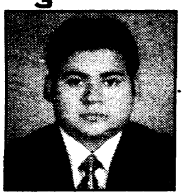

का आई.सी.आई.सी.आई.बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर चयन हुआ है। श्री जैन का वर्तमान में पद स्थापन जयपुर में किया गया है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा छः तक की परीक्षा उत्तीर्ण श्री जैन स्वाध्यायी के रूप में भी अपनी सेवायें दे रहे हैं।

पाली- सुश्री रिद्धी पुत्री निहालचंद नाहर एवं सुपौत्री श्रीमती विजयकंवर सोहनलाल जी नाहर, पाली ने बी.कॉम में साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर उन्हें 26 फरवरी 2011 को गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं गुजरात की राज्यपाल श्रीमती कमला जी के कर कमलों से स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

जोधपुर- सुश्री श्वेता संकलेचा सुपुत्री श्री गजेन्द्र-नीलम संकलेचा ने सी.ए. एवं सी.एस. प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

सवाईमाधोपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ महावीर भवन शहर सवाईमाधोपुर के चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए, जिनमें श्री बाबूलाल जी समीधी वाले- अध्यक्ष, श्री धर्मचन्द जी करेला वाले-उपाध्यक्ष, श्री पारसचंद जी बोहरा- मंत्री, श्री पारसचंद जी देवली वाले-सहमंत्री, श्री चौथमल जी बैंक वाले- कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

श्रद्धाञ्जलि

बैंगलूरु- समाजसेवी, धर्म चिन्तक, रत्नसंघ के प्रमुख श्रावक श्री दशरथमल चोरडिया सुपुत्र स्व. श्री कनकमल जी चोरडिया, चेन्नई का 71 वर्ष की वय में 31 मार्च 2011 को हृदयगति रुक जाने से देहांत हो गया। आप सरलमना, मृदुभाषी, उदारहृदय एवं शांत स्वभावी थे। आप राजस्थान यूथ एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे एवं विभिन्न सभा संस्थाओं से जुड़े हुए थे। वे रत्न हितैषी जैन श्रावक संघ के मंत्री, सलाहकार एवं डायरेक्ट्री चेयरमैन तथा लायन्स क्लब में कोषाध्यक्ष भी रहे। आपको साहित्य एवं पत्रकारिता क्षेत्र की भी अच्छी समझ थी। आप अपने पीछे पुत्र प्रदीप एवं राजेन्द्र चोरडिया का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

चेन्नई- समाजसेवी, उदारमना, सुश्रावक श्री महावीर चंद जी खीमसुरा सुपुत्र स्व. श्री धनराज जी खीमसुरा का देहावसान 8 मार्च, 2011 को हृदयगति रुकने से हो गया। कर्त्तव्यपरायणता, कर्मठता, सेवाभाव, स्वधर्मि-वात्सल्य, विनम्रता, मृदु भाषिता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप देव, गुरु व धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे।

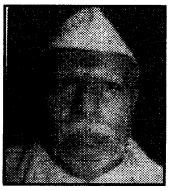

अहमदनगर- धार्मिक परीक्षा बोर्ड अहमदनगर के पूर्व परीक्षाधिकारी 'अमरभारती' 'सुधर्मा' मासिक के पूर्व संपादक **पं. चन्द्रभूषण मणि त्रिपाठी शास्त्री** का स्वर्गवास 91 वर्ष की आयु में 18 फरवरी 2011 को हो गया। आप अपने जीवन काल में कई धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक संस्थाओं के पदों पर आसीन रहे। आपको अपने पिता स्व. विद्यावारिधि राजधारीजी त्रिपाठी 'शास्त्री' से विरासत में धार्मिक एवं शैक्षिक संस्कार प्राप्त हुए। आपने आचार्य श्री आनन्दऋषि जी के सान्निध्य में धार्मिक परीक्षा बोर्ड अहमदनगर में एवं उपाध्याय कवि अमरमुनि जी के सान्निध्य में वीरायतन में

सेवा कार्य किया। आप धर्मपरायण, कर्मठ, निर्भीक, स्पष्टवक्ता, सरलता, सादगी, उदारता की प्रतिमूर्ति थे। आप द्वारा प्रदत्त सुसंस्कारों के कारण आपके सभी सुपुत्र चिकित्सा, शिक्षा एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति प्राप्त हैं।

दिल्ली- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मंजु जी जैन (रानू जी जैन) धर्मपत्नी श्री

अनिल जी जैन पुत्रवधू श्री श्रीचन्द जी जैन (जैन बन्धु) का 18 फरवरी 2011 को 45 वर्ष की आयु में स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-साधना एवं त्याग-प्रत्याख्यान करती थीं तथा साधु-साध्वी वर्ग की सेवा का भी श्रद्धापूर्वक ध्यान रखती थीं। आपका परिवार नित्य धर्म-ध्यान करने के साथ देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है।

जयपुर- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती रतनदेवी जी धर्मपत्नी सुश्रावक स्व. श्री ताराचन्द जी करनावट का 03 मार्च 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे पुत्र प्रकाशचन्द जी, प्रसन्न जी, अशोक जी, अनिल जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- सरलमना, उदारमना, श्रावकरत्न श्री शांतिचन्द जी मेहता का 22 फरवरी

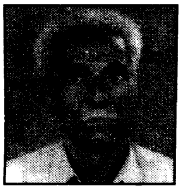

2011 को देहावसान हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा एवं भक्ति थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और सक्रियता के कारण आप घर-परिवार और संघ-समाज में प्रतिष्ठित श्रावकरत्न थे। आप द्वारा प्रदत्त अच्छे संस्कारों के कारण सम्पूर्ण मेहता परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है। संघ द्वारा संचालित सभी गतिविधियों में मेहता परिवार का सदैव सक्रिय सहयोग रहा है।

बालोतरा- अनन्य गुरुभक्त संघहितैषी सुश्राविका श्रीमती चुकीदेवीजी धर्मपत्नी श्री

बालकचन्द जी देसरला श्रीश्रीमाल का 5 मार्च 2011 को सूरत में देहावसान हो गया। आपने एक वर्ष पूर्व आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महराज साहब के कानाना प्रवास पर सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किया था। साम्प्रदायिक भावना से परे आपका जीवन

धर्माराधना-तपाराधना से युक्त था। सामाजिक कार्यों में भी आपका योगदान सराहनीय था। आपके पूरे परिवार में रात्रि-भोजन करने का त्याग है। सम्पूर्ण श्रीश्रीमाल परिवार संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यो में अग्रणी रहा है।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक डॉ. मदनमल जी भंडारी सुपुत्र स्व. श्री सुकनमल

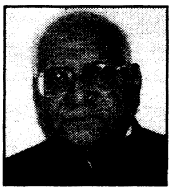

भंडारी का 9 फरवरी 2011 को देहावसान हो गया। आप जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के वनस्पति विभाग में विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए। आपने वनस्पति विज्ञान में विश्वस्तरीय कई पुस्तकें लिखीं। आप रत्नसंघीया विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. के सांसारिक मामा थे।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती निर्मला जी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री मोहनलाल जी कोठारी का स्वर्गवास 14 मार्च, 2011 को हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। धर्मनिष्ठता, कर्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मि-वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन संपृक्त था। आपकी रत्न संघ के प्रतिपूर्ण निष्ठा थी।

बैंगलूरु- सरल स्वभावी सुश्राविका श्रीमती साकरबाई हिंगड धर्मपत्नी स्व. श्री गणेशीलाल जी हिंगड का 92 वर्ष की आयु में 22 फरवरी 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, आस्थावान एवं सेवानिष्ठ श्राविका थीं।

दुर्ग (छतीसगढ़)- युवाश्रावक श्री राजेश जी कोठारी सुपुत्र श्री मोहनलाल जी

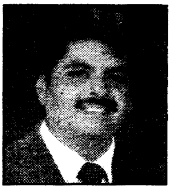

कोठारी 'विनर' का 40 वर्ष की अल्प आयु में हृदयाघात से 9 मार्च 2011 को आकस्मिक निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपके पिताश्री अ.भा. जैन संस्कृति रक्षक संघ शाखा छतीसगढ़ के अध्यक्ष हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

आत्मविश्वास से असम्भव कार्य भी सुगम और सम्भव हो जाते हैं। साधना ही आत्मविश्वास जगाकर साधक को परम पद पर पहुँचाने की क्षमता रखती है।

- आचार्य हस्ती

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

729 श्री संजय जी सुराणा, सदर बाजार, अंबजोगाई, जिला–बीड़ (महाराष्ट्र)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13008 श्री अमित कुमार जी जैन, वसुन्धरा कॉलोनी, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13009 श्री सुनील कुमार जी जैन, चित्रकूट, अजमेर रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13011 श्री महेन्द्र जी संचेती, ए-9, मेन रोड, शान्ति कुंज, अलवर (राजस्थान)
13013 Shri Ashok Kumar ji Chopra, Calicut (Keral)
13014 Dr.Rajendraji Dugad,Chevaramalam,Calicut(Keral)
13015 Shri Suhail Kumadan ji, Ghatgate, Jaipur (Raj.)
13016 Shri Jitendra Kumar ji Daga, Jaipur (Raj.)
13017 श्री संदीपजी भाण्डावत,रेनबो हाउस,मण्डोर रोड़, पावटा, जोधपुर (राज.)
13018 Shri Rakesh Kumar ji Gandhi, Amroli, Surat (Guj.)
13019 श्री संजय जी सुराणा, सदर बाजार, अंबजोगाई, जिला–बीड़ (महाराष्ट्र)
13020 श्री सम्पतलाल जी बोर्दिया, 24, सेक्टर-6, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.)
13021 श्री छीतरमल जी पोखरना, गायत्री नगर, हिरणमगरी, उदयपुर (राजस्थान)
13022 श्री अमितकुमारजी जैन,अशोकविहार,अशोका गॉर्डन के पास,भोपाल (म.प्र.)
13023 Dr.Gambhir Singhi ji Padhera, Gandhinagar(Guj.)
13024 सुश्री मोना जी बाफणा, सदर बाजार, गोटन, जिला–नागौर (राजस्थान)
13025 श्री महेन्द्र जी कांकरिया, पोस्ट–हरसोलाव, जिला–नागौर (राजस्थान)
13026 श्री प्रेमचन्द जी बाफणा, पोस्ट–हरसोलाव, जिला–नागौर (राजस्थान)
13027 श्री पूनम जी जैन, गली नं. साढ़े तीन, नारायण नगर, फरीदकोट (पंजाब)
13028 श्री सुदर्शन कुमार जी शर्मा, रणजीत नगर, भरतपुर (राजस्थान)
13029 श्री पदमचन्द जी जैन (जेईन), रतनगढ़, जिला–चुरू (राजस्थान)

अर्द्धमूल्य योजना, श्री उत्तमचन्द जी भंडारी, बैंगलोर के सौजन्य से

13010 श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन, रोहित ट्रेडर्स, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13012 Shri Uttam Chand ji Bhandari, Chennai (T.N.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11000/- श्री मोहनलाल जी, पारसमल जी, सुशील कुमार जी, आनन्द कुमार जी बोहरा, तिरुवन्नमल्लई, पूज्य आचार्य भगवन्त, श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का ब्यावर में पदार्पण एवं भगवती दीक्षा का पावन प्रसंग सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री एस.एस. जैन संघ ट्रस्ट, चिदम्बरम् (तमिलनाडु), के द्वारा भेंट।

5000/- श्रीमती हंसकंवर जी सिंघवी, श्री निरंजन जी सुराणा एवं श्रीमती कुसुम जी भंडारी, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री प्रकाश मल जी सुराणा की 27 मार्च

2011 को पुण्य तिथि के अवसर पर भेंट।

2100/- श्रीमती रतन जी करनावट, जयपुर, स्व. श्री मोतीचन्द जी करनावट की पुण्यस्मृति में भेंट।

1500/- श्री भँवरलाल जी, प्रदीप कुमार जी, पारस कुमार जी, विनेश जी, विशाल जी, कमलादेवी जी, वैजयन्ती देवी जी, विजय लक्ष्मी जी, स्नेहा जी, आशा जी एवं डोसी परिवार, हैदराबाद, परमाराध्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में ब्यावर में सानन्द दीक्षा सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1101/- सौ. सुगनबाई जी माणकचन्द जी साण्ड, जलगाँव, महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-4 के नये मकान पर पदार्पण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सुशीला कँवर जी, किस्तूरचन्द जी डोसी, ब्यावर, चि. संजय जी डोसी एवं पुत्रवधू सौ.कां. सुनीता जी डोसी की वैवाहिक वर्ष गाँठ दिनाङ्क 9 फरवरी, 2011 के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री श्रीचन्द जी जैन, दिल्ली, पुत्रवधू सुश्राविका श्रीमती मंजू जी जैन (रानू जैन) धर्मपत्नी श्री अनिल जी जैन का दिनांक 18 फरवरी 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री ओमप्रकाश जी टीकमचन्द जी जैन, नवसारी, चि. अंशुल जी सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी जैन का शुभ विवाह सौ.कां. श्वेता जी सुपुत्री श्री जम्बूकुमार जी जैन (बाबई वाले) के संग जयपुर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मिलापचन्द जी छाजेड़ 'पूना वाले', हैदराबाद, अपने सुपुत्र चि. निखिल (सुपौत्र स्व. श्री बिशनचन्द जी)का शुभ विवाह सौ.कां. श्वेता के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री ओमप्रकाश जी टीकमचन्द जी जैन, नवसारी, सुपुत्र एवं पुत्रवधू चि. अंशुल एवं सौ.कां. श्वेता को गुरु दर्शन, वन्दन एवं गुरु आम्नाय दिलाये जाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मोहनलाल जी कोठारी 'विनर', दुर्ग (छतीसगढ़), अपने सुपुत्र श्री राजेश जी कोठारी का दिनाँक 9 मार्च 2011 को आकस्मिक देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती मंजुजी धर्मपत्नी श्री अशोककुमार जी 'हरसाना वाले', जयपुर, अपने सुपुत्र श्री अभिषेक जैन के आई.सी.आई.सी.आई बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर चयन व नियुक्ति तथा दूसरे सुपुत्र आशीष जैन द्वारा आई.पी.सी.सी.ग्रुप प्रथम की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हेमन्त जी डागा, बूंदी, श्रीमती चित्रा जी डागा एवं श्री हेमन्त जी डागा द्वारा गोटन में उपाध्यायप्रवर एवं संतों के दर्शन-वन्दन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री जिनेश जी जैन, जोधपुर, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जन्म जयन्ती के अवसर पर सप्रेम भेंट।

1000/- श्री जवाहरलाल जी प्रेमचन्द जी बाघमार (कोसाणा वाले), कानपुर-चेन्नई, चि. राजीव जी सुपौत्र श्रीमती शान्ताकँवर जी जवाहरलाल जी बाघमार, सुपुत्र श्रीमती शशि जी प्रेमचन्द जी बाघमार का शुभ विवाह सौ.कां. वर्षा के संग ऊँटी में सानन्द

सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमती हेमा जी मोहनोत, चेन्नई, स्व.श्रीमती कमलादेवी जी खिंवसरा धर्मपत्नी स्व. श्री महावीरचन्द जी खिंवसरा की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री उम्मेदचन्द जी, रतीश कुमार जी जैन, जरखोदा-बूंदी, चि. मनीष का शुभ विवाह सौ.कां. निशा जी के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री रमेशचन्द जी, पंकज कुमार जी जैन (खरखडी वाले), सवाईमाधोपुर, चि. विकास जी जैन का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री सूरजमल जी, तेजमल जी जैन (चौरू वाले), कोटा, चि. धर्मचन्द जी जैन का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री रामप्रसाद जी जैन, चौथ का बरवाडा-सवाईमाधोपुर, चि. पवन कुमार जी का शुभ विवाह सौ.कां. पिंकी जी सुपुत्री श्री पदमचन्द जी जैन (एण्डवा वाले) के संग दिनांक 11मार्च 2011 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री महेन्द्र कुमार जी जैन (पुसेदा वाले), आलनपुर-सवाईमाधोपुर, नमो पुरिसवर गंध हत्थीणं प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री कपूरचन्द जी, महावीर प्रसाद जी जैन (मोटर वाले), सवाईमाधोपुर, सौ.कां. स्मिता जी जैन का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन, अलीगढ़-टोंक, अपने पुत्र श्री पंकज जैन का शुभविवाह 11 मार्च को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री प्रकाशचन्द जी, आशीष जी, अमित जी डोसी, चेन्नई, परमाराध्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में सानन्द दीक्षा सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती माला जी धर्मपत्नी श्री विजेन्द्र जी तातेड़, जोधपुर, अपनी पुत्रवधू को शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के दर्शन-वन्दन करवाने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती प्रसन्नकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री (डॉ.) मदनमल जी भण्डारी, जोधपुर, श्रीमान् मदनमल जी भण्डारी का दिनाँक 9 फरवरी, 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- श्री विजयमल जी मेहता, जोधपुर, अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संरक्षक सदस्यता हेतु भेंट।

2500/- श्री विजयमल जी मेहता, जोधपुर, अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भेंट।

2000/- श्री जौहरीमल जी चाम्बड़, जोधपुर, सहायतार्थ।

1000/- रतनकंवर चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर, साहित्य अनुदान राशि हेतु भेंट।

501/- श्री ओमप्रकाश जी, टीकमचन्द जी जैन, नवसारी, चि. अंशुल जी सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी जैन का शुभ विवाह सौ.कां. श्वेता जी सुपुत्री श्री जम्बूकुमार जी जैन (बाबई वाले) के संग जयपुर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन, अलीगढ़-टोंक, अपने पुत्र श्री पंकज जैन का शुभविवाह 11 मार्च को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर को प्राप्त साभार

11,000/- श्रीमती अनिला जी-नवरतन जी कोठारी, जयपुर (लाल हाथी वाले), अपनी भतीजी सौ. कां. समता सुपुत्री श्रीमती शीला-प्रकाशचन्द जी कोठारी संग चि. राहुल के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

आगामी पर्व

चैत्र शुक्ला 13	शनिवार	16.04.2011	भगवान महावीर जन्म-कल्याणक दिवस
चैत्र शुक्ला 14	रविवार	17.04.2011	चतुर्दशी
चैत्र शुक्ला 15	सोमवार	18.04.2011	आयम्बिल ओली पूर्ण
वैशाख कृष्णा 8	सोमवार	25.04.2011	अष्टमी
वैशाख कृष्णा 14	सोमवार	02.05.2011	चतुर्दशी, पक्खी
वैशाख शुक्ला 3	शुक्रवार	06.05.2011	अक्षय तृतीया
वैशाख शुक्ला 8	बुधवार	11.05.2011	अष्टमी, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 20 वीं पुण्यतिथि
वैशाख शुक्ला 14	सोमवार	16.05.2011	चतुर्दशी
वैशाख शुक्ला 15	मंगलवार	17.05.2011	पक्खी
ज्येष्ठ कृष्णा 5	रविवार	22.05.2011	आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 21 वां आचार्य पदारोहण दिवस

Quotes of Non-violence & Compassion

Collection : Sh. Suresh Chandra Dhing

1. All Beings are fond of themselves, they like pleasure, they hate pain, they shun destruction, they like life and want to live long, To all, life is dear; hence their life should be protected. **-Tirthankar Mahaveer**
2. Wise people see the same soul(Atman) in the Brahmin, in worms and insects, in the outcasts, in the dog and elephant, in beasts, cows, godflies and gnats. **- Shri Krishna**
3. He, indeed, is wise who does not hurt any creature, whether feeble or strong, who does not kill nor cause slaughter. **-Mahatma Buddha**
4. The Highest religion is to rise universal brotherhood; aye, to consider all creatures your equal. **-Guru Nanak Dev**
5. It is diabolical to think that all animals have been created for men, to be killed and used in any way man likes. It is the devil's gospel not God's. **-Swami Vivekananda**

-Bambora-313706, Udaipur (Raj.)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान) फोन नं. 2575997, 2571163 फैक्स नं. 0141-2570753

प्रकाशित साहित्य-सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	दर रु.
1.	अमरता का पुजारी	15
2.	अमृत-वाक्	10
3.	अजीव पर्याय	5
4.	आवश्यक सूत्र (हिन्दी-अंग्रेजी)	10
5.	आहार संयम और रात्रि भोजन त्याग	4
6.	आचारांगसूत्र (मूल)	10
7.	आध्यात्मिक आलोक	40
8.	आध्यात्मिक पाठावली	2
9.	आनुपूर्वी	10
10.	अहिंसा निउणा दिट्ठा	40
11.	अध्यात्म की ओर*	30
12.	अन्तगडदसासूत्र	30
13.	भक्तामर स्तोत्र	10
14.	चौदह नियम	4
15.	24 ठाणा का थोकड़ा	5
16.	दशवैकालिकसूत्र	40
17.	दशवैकालिकसूत्र (हिन्दी भावार्थ)	20
18.	दीक्षा कुमारी का प्रवास	25
19.	दो बात	5
20.	दुर्गादास पदावली	5
21.	एकादश चरित्र संग्रह*	15
22.	गजेन्द्र सुक्ति सुधा*	20
23.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-1	15
24.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-2	15
25.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-3	15
26.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-4	15
27.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-5	15
28.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-6	15
29.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-7	15
30.	गजेन्द्र पद मुक्तावली	5
31.	गमा का थोकड़ा	10
32.	गुणस्थान स्वरूप	3
33.	गुरु गरिमा एवं श्रमण जीवन	100
34.	ज्ञातासूत्र की कथायें	10
35.	ज्ञान लब्धि, द्रव्येन्द्रियं का थोकड़ा	2
36.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1*	15
37.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-2	25
38.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-3*	15
39.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-4	25
40.	जैन इतिहास के प्रसंग भाग-1 से 40	5
41.	जैन आचार्य चरितावली	15
42.	जैन स्वाध्याय सुभाषित माला*	10
43.	जैन तमिल साहित्य और तिरुकुरल	20
44.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-1*	225
45.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-2	225
46.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-3	225
47.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-4	225
48.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास संक्षिप्त	75
49.	जैनागम	50
50.	जैन विचारधारा में शिक्षा	25
51.	जैन धर्म में ध्यान	70
52.	झलकियाँ जो इतिहास बन गईं	15
53.	जीवन निर्माण भजनावली	2
54.	जीवन अमृत की छाँव*	20
55.	जीव धड़ा	3
56.	जीव पज्जवा, काय स्थिति	5
57.	कर्म प्रकृति	2
58.	कर्मग्रन्थ	15
59.	कुलक कथायें	20
60.	कायोत्सर्ग	50
61.	लघुदण्डक	3
62.	नवतत्त्व	5
63.	निसीहज्झयणं (मूल)	10
64.	निर्ग्रन्थ भजनावली	40
65.	नमो गणि गजेन्द्राय	20
66.	पच्चीस बोल (विवेचन सार्थ)	10
67.	25 बोल (मूल)	3
68.	पाँच बात	5
69.	पथ की रुकावटें	15
70.	प्रश्नव्याकरणसूत्र भाग-1	45
71.	प्रश्नव्याकरण सूत्र भाग-2	35
72.	प्रार्थना प्रवचन	15
73.	प्रथमा पाठ्यक्रम (प्रतिक्रमणसूत्र)	5
74.	प्रतिक्रमण विशेषांक	50
75.	प्रेरक कथाएँ	20
76.	पर्युषण साधना	5
77.	पर्युषण सन्देश	20
78.	पर्युषण पर्वाराधन	15
79.	मुक्तक-मुक्ता	15
80.	मुक्ति का राही	100
81.	रत्नसंघ के धर्माचार्य*	20
82.	रत्नस्तोक मंजूषा	5
83.	67बोल उपयोग, संज्ञा और	2
84.	47 बोल, 50 बोल व 800 बोल	3
85.	समिति गुप्ति-गति आगति	2
86.	सामायिक सूत्र प्रवेशिका पाठ्यक्रम	5
87.	सप्त कुव्यसन*	5
88.	षडद्रव्य एवं विचार पंचशिका	5
89.	सिरि अन्तगडदसाओसूत्र	35
90.	सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी	5
91.	शिवपुरी की सीढ़ियाँ*	15
92.	शास्त्र स्वाध्याय माला	20
93.	श्रमण आवश्यक सूत्र	10
94.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	5
95.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	10
96.	श्रावक के बारह व्रत	5
97.	श्री सामायिक सूत्र (सार्थ)	3
98.	श्री नवपद आराधना*	5
99.	श्री नन्दीसूत्रम्	40
100.	सुख विपाक सूत्र*	10
101.	स्वाध्याय स्तवन माला	30
102.	सामायिक साधना और स्वाध्याय	10
103.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1	30
104.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-2	50
105.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-3*	50
106.	उत्तराध्ययनसूत्र हिन्दी	50
107.	उत्तराध्ययनसूत्र पद्यानुवाद	20
108.	युवा सँवारे यौवन	20
109.	वैराग्य शतक	5
110.	व्रत प्रवचन संग्रह	10
111.	बृहत्कल्पसूत्रम् (सटीकम्)	30
112.	बृहद् आलोयणा	5

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

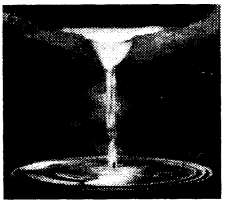
Electric Arc Furnace

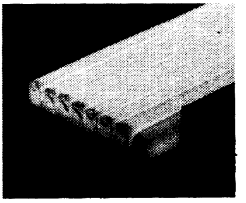
Billets

Rolling Mill

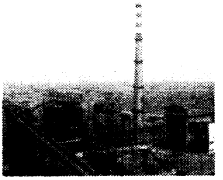
Captive Power Plant

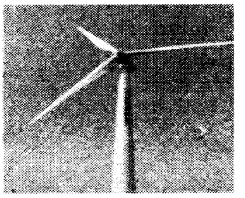
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED
INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL
29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

शोभा-हस्ती जय जय ! हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के अमूल्य हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
शान्त दान्त पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण सरोजों में कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SOLUTIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609 Mob. : 09500114455

•●•

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 0931007273

•●•

GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का दीया जलाईये
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1.	अशोक कवाड़, चैन्नई	(9381041097)
2.	सुमतिचन्द मेहता पीपाड़	(9414462729)
3.	महेन्द्र सुराणा, जोधपुर	(9414921164)
4.	बुधमल बोहरा,चैन्नई	(9444235065)
5.	राजकुमार गोलेच्छा,पाली	(9829020742)
6.	मनोज कांकरिया, जोधपुर	(9414563597)
7.	कुशलचन्द जैन, सवाई माधौपुर	(9460441570)
8.	प्रवीण कर्णावट, मुम्बई	(9821055932)
9.	जितेन्द्र डागा, जयपुर	(9829011589)
10.	महेन्द्र बाफना,जलगांव	(9422773411)
11	हरीश कवाड़,चैन्नई	(9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें–

B.Budhmal Bohra
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 04 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अप्रेल, 2011 ★ चैत्र, 2068

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।